मुट्‌ठी भर आग

।कहानी संग्रह।

नन्दलाल भारती

सर्वाधिकार–लेखकाधीन

सम्पर्कः
आजाद दीप,15–एम–वीणा नगर
इंदौर ।म.प्र.।452010
दूरभाष–0731–4057553 चलितवार्ता–9753081066

जनून

मुरली–क्यों मुंशी भईया माथे पर चिन्ता और मुट्‌ठी भर आग लिये बैठे हो । कोई नई मुश्किल आन पड़ी क्या ?
मुंशी–मुरली जमाने ने तो मुट्‌ठी में आग भरी है विषमताओं के कलछुले से । इस मुट्‌ठी आग को फेंकना कठिन हो गया । यह आग तो पहचान बन गयी है जबकि कर्म से आदमी की पहचान बनती है परन्तु यहां तो आंख खुली नही आग मुट्‌ठी में भर दी जाती है । मुट्‌ठी भर आग ठण्डी नही हो पा रही है । यही चिन्ता है और अशान्ति का कारण भी ।
मुरली–माथे पर चिन्ता और जमाने की दी हुई मुट्‌ठी भर भर आग ठण्डी करते हुए तुम तो कलयुग के कर्ण बन गये हो ।
मुंशी– क्यों मजाक बना रहे हो मेरी दीनता और मुट्‌टी भर आग मे मर रहे सपनो का । आदमी की मदद कर देना कोई गलत तो नही । मुझसे जो हो जाता हे कर देता है । किसी से उम्मीद नही करता की बदले में मेरा कोई काम करें । अरे नेकी कर दरिया में डाल । इस कहावत में रहस्य है मुरली ।
मुरली–देखो आखिरकार सच्चाई जबान पर आ गयी । किसी ने नेकी के बदले बदनेकी की है ना । अरे भईया लोग बहुत जालिम हो गये है । काम निकल जाने पर पहचानते ही नही । तुम्हारे पड़ोस सुनील खड्डुस की तरह । किस किस का भला करोगे खुद तकलीफ उठा कर । परमाथ्र का राही बनने से बेहत्तर है कि खुद का घर रोशन करो ।
मुशी–कुछ लोगों को आदमियत के विरोध की लत पड़ चुकी है तो कुछ लोगों को आदमियत और परमार्थ के राह चलने की। हमे आदमियत और परमार्थ काम में आत्मिक सुख मिलता है।

मुरली–क्यों न बच्चों के मुंह का निवाला छिन जाये ।धूपानन्द का तुमने कितना उपकार किया । आखिरकार उसने तुमकों ठेंगा दिखा दिया ।यही परमार्थ का प्रतिफल है ।
मुंशी–परमार्थ प्रतिफल की चाह में नही किया जाता ।परमार्थ के लिये तो बुध्द ने राजपाट तक छोड़ दिया । यदि आज का आदमी अपने सुखों में तनिक कटौती कर किसी का हित साधे दे तो बड़े पुण्य का काम होगा । आदमी होने के नाते फर्ज बनता है कि हम दीनशोषित वंचित दुखी के काम आये ।
मुरली–खूब करो । धूपानन्द को कितने साल अपने घर में रखे खानखर्च उठाये नौकरी लगवाये जबकि तुम्हारे उससे कोई खून का रिश्ता भी न था । उसके परिवार तुम अपयश लगाये ।धूपानन्द के दिन तुम्हारी वजह से बदले । वही तुमको आंख दिखा रहा है । उसके घर वाले तुमको बेईमान साबित करने में जुटे रहे । नेकी के बदले क्या मिला दुनिया भले ही न कहे पर धूपानन्द के चाचा चाची,भाई भौजाई ने तो कह दिया ना कि भला आज के जमाने में बिना किसी फायदे को कोई किसी को एक वक्त की रोटी नही देता मुंशी चार चार साल फोकट में धूपानन्द का खानखर्च कैसे उठा सकता है । मुरली भाई तुम्हारी नेकी तो सांप को दूध पीलाने वाली बात हुई ।
मुंशी–हमने अपनी समझ से अच्छा किया है । मै खुश हूं एक लाचार की मदद करके । यदि कोई मेरे निःस्वार्थ भाव को स्वार्थ के तराजू पर तौलता है तो तौलने दो । सच्चाई तो भगवान जानता है । परमार्थ तो निःस्वार्थ भाव से होता है । स्वार्थ आ गया तो परमार्थ कहां रहा । दुर्भाग्यवस किसी की मुट्ठी आग से भर जाये तो आदमी होने के कारण जलन का एहसास कर शीतलता प्रदान करना चाहिये की नहीं ।वैसे भी रूढिवादी व्यवस्था ने तो हर मुट्ठी में आग भर दिया है ।
मुरली–वाह रे हरिश्चन्द्र वाह करते जा नेकी । खाते जा दिल पर चोट । दर्द पीकर मुस्कराता रह और करता रह परमार्थ ।अब तो चेत जा ।
मुशी–कोई गुनाह तो नही किया हूं कि प्श्चाताप करूं । आदमी का नही भगवान का सहारा है मुझे । आदमी को परमात्मा का प्रतिरूप मानकर सम्मान करता है।यही मेरी कमजोरी है । यही कारण है कि आग बोने वाले मतलबियों की महफिलों में बेगाना हो जाता हूं ।हमारी नइया का खेवनहार तो भगवान है । मुट्ठी ही नही तकदीर में आग भरने वाले तो बहुत है ।
मुरली–मुंशी भइया ऐरे गैरों के लिये अपनों का पेट काटते रहते हो,खुद को तकलीफ देते हो इसके बदले तुमको क्या मिला ।अरे धूपानन्द के परिवार वालो का देखो एक भी आदमी तुम्हारी बीमारी की अवस्था में हालचाल पूछने तक नही आया ।धूपानन्द ने कौन सा अच्छा सलूक किया तुम्हारे बच्चों को अपशब्द बककर गया ।तुम्हारे पडोसियों को देखो जिनके दुख मे रात दिन एक कर दिये वही तुम्हें बदनाम कर रहे है ।तुम्हारे दुश्मन बन रहे है ।ऐसी नेकी किस काम की भइया मुंशी ।
मुंशी–यकीन कोई दौलत तो नही मिली पर आत्मिक सुख तो बहुत मिला है ।यह सुख रूपये से खरीदा भी नही जा सकता ।परमार्थ के राह में रोड़े तो आते है वह भी हम जैसे गरीब के लिये जिसे रूढिवादी समाज ने मुट्ठी भर आग के सिवाय और कुछ न दिया हो ।नेकी की जड़े पाताल तक जाती हैं ओर गूंजे परमात्मा के कानों को अच्छी लगती है । स्वार्थ की दौड़ में शामिल न होकर मानवकल्याण के लिये दौड़ना चाहिये। इस दौड़ में शामिल होने वाला परमात्मा का सच्चा सेवक होता है ।
मुरली–दौड़ो भइया नेकी की राह पर मुट्टी भर आग लिये । अरे पहने अपनी मुट्ठी की आग को शान्त तो करो । जिस आग ने सामाजिक आर्थिक पतन की ओर ढकेले है ।
मुंशी–परहित से बड़ा कोइ धर्म नही है । यह बात ज्ञानियों ने कही है । मुट्टी में आग भरने वालो ने नही ।आज का आदमी इस महामन्त्र को आत्मसात् कर ले तो धरती पर बुध्द का सपना फलीभूत हो जाये ।

मुरली–मुंशी भइया अपने परिवार के हक को मारकर परमार्थ करना कहां तक उचित है ।चलो तुम परमार्थ की राह । यह राह तुमको मुबारका हो पर भइया अपने घर के दीये में तेल पहले डालो ।
मुंशी–परमात्मा की कृपा से मेरे दीये का तेल खत्म नही होने वाला है । मेरी राह में मेरा परिवार भी सहभागी है । उन्हे भी हमारे उद्‌देश्य पर गुमान है । हां तंगी में भी मेरा परिवार आत्मिक सुख का खूब रसास्वादन कर रहा है । सच कहूं मेरा परिवार ही मेरा प्रेरणास्रोत है ।
मुरली–अपने दिल से पूछों कितना दर्द पी रहे हो ।घर परिवार पर ध्यान दो ।
मुंशी– पारिवारिक जिम्मेदारी अच्छी तरह निभा रहा हूं । इसके साथ परमार्थ का आत्मिक सुख उठा लेता हूं कोई बुराई तो नहीं ।
मुरली–खूब करो । बने रहे परमार्थ के राही । मुझे अब इजाजत दो । तुम्हारे परमार्थ के जनून को सलाम.........
मुंशी–याद रखना परमार्थ प्रभु की पूजा है ।

दहशत

अरे कुमार बाबू क्यो रोनी सुरत बना कर बैठो हो क्या बात है ! ऐसे लगता है कि कोई आपकी भैंस हांक ले गया हो ! क्यों इतने उदास हो ! सिर के बाल अस्तव्यस्त हैं ! भौहे बिलकुल तनी हुई हैं ! गाल पर हाथ रखे बैठे हो ! क्यों इतने उदास हो भइया !क्यों........ चिन्ता का कोई खास कारण है कहते हुए अंकुर बाबू कुमार बाबू की बगल में बैठ गये !
कुमार बाबूः भाई कमजोर आदमी की खुशी तो बीमार की हंसी के माफिक होती है !
अंकुरबाबूः बडें मरम की बात कर रहे हो ! मेरी समझ से परे की बात है !सीधी साधी भापा में कुछ कहते तो समझ भी पाता !
कुमार बाबूःअंकुर बाबू कमजोर आदमी दहशत में जीता है ! यह तो मानोगे कि नही !
अंकुरबाबूः दहशत मतलब जैसे सीमा पर आंतकवादी बम फोडकर दहशत फैला रहे हैं !
कुमार बाबूःइसी तरह की दहशत कमजोर आदमी न पनप सके बडे बडे उदयोगपति,ओहदेदार इतना ही नही तथाकथित धर्म समाज के लोग भी पीछे नही है ! मौका पाते ही सभी कमजोर पर टूट पडते हैं बांझ की भांति तभी तो कमजोर कमजोर ही बना हुआ हैं ! न तो उसकी सामाजिक उन्नति हुई हैं ना ही आर्थिक बेचारा रिसते घाव का मवाद ही साफ करते करते मर खप जा रहा है !
अंकुर बाबूः सच कह रहे है ! कुछ भ्रमित स्वार्थी उुची बिरादरी, उुंचे ओहदा और सम्पन्न लोग कमजोर लोगो के विकास में बबूल की छांव ही साबित होते हैं ! यह कटु सत्य हैं ! लोग इसे आसानी से नही मानेग पर सच्चाई तो यही है !तभी तो देखो उदयोगपतियों का मुनाफा दिन दुना रात चौगुना बढ रहा हैं कमजोर नमक रोटी की जुआड में भटक रहा है ! कमजोर तबके को जातिवाद का जहर पीना पड रहा हैं ऐसी ही हाल बडे ओहदेदारो के मातहत निम्नश्रेणी वाले कर्मचारियों की हैं यदि निम्न श्रेणी का कर्मचारी छोटी जाति का हैं तो उसे पग पग पर शोंपण उत्पीडन प्रताडना के साथ ही आर्थिक नुकसान भी भरपूर पहुंचाया जा रहा है ! कितनी विषमता व्याप्त हैं आज का सुशिक्षित आदमी एंव उच्च असान पर विराजमान आदमी भी जहर की खेती करने से बाज नही जा रहा है !नतीजन हर ओर विषमाद के काले बादल छाये हुए है !इन्ही करतूतों की वजह से कमजोर आदमी दहशत में दम भर रहा है !
कुमारबाबूः अंकुरबाबू इतने गूढ रहस्य की बात कर रहे हो ! आपकी बात में चिन्तन के भाव दर्शित हो रहे हैं ! आप सामान्य वर्ग के होकर भी कमजोर व्यक्ति के लिये इतना सोच रहे हैं काश आप जैसे सभी हो जाते तो कब के इस धरती से विषमाद का विष पी गये होते !
अंकुरबाबूः सच कहा है किसी ने बडी मछली छोटी मछलियों को खाकर ही बडी बनी रहने का स्वांग करती रहती है ! दहशत फैलाना ही उसका स्वभाव होता हैं ! छोटी मछलिया भी एकजुटता का

परिचय नही देती हैं जिस की वजह से बडी मछली अपने बडे होने के अभिमान में रौदती रहती हैं छोटी मछलियों को !शिकरियों के जाल में भी यही छोटी मछलियां ही जल्दी फंसती हैं !
कुमारबाबूः बिल्कुल सही फरमा रहे हैं! यही तो चिन्ता का विपय है ! आदमी सोच समझ सकता हैं फिर भी अपने रूतबे को कायम रखने के लिये आदमी होकर आदमी का लहू पीकर पलता हैं ! निठारी काण्ड देखो बालक बालिकाओं का यौवन शोपण कर उनकी अंग तक बेच दिये उस ककुर्मी मानिन्दर और उसके साथियों ने ! इसमें ज्यादातर कमजोर लोगो के ही बच्चे थे ! इससे दहश्त की दीवार और मजबूत हो गयी हैं ! स्वार्थ के वशीभूत होकर आदमी क्या क्या कर बैठ रहा हैं ! हर ओर दहश्त फेली हुई है चाहे जाति समाज की चहरदीवारी हो श्रम की मण्डी हो साहूकार सेठ लोगो की दुकान हो या उुचे ओहदे का मामला हो हर कमजोर की छाती पर ही बैठ्कर जुगाली कर रहा हैं खुद के हित की ! परहित की भावना का तो लोप ही हो गया हैं ! यदि इस स्वार्थ की दौड में कोई सामाजिक उत्थान अथवा आर्थिक उत्थान में लगा हुआ हैं तो तहकीकात कर उसको इस विपमतावादी समाज में उच्च आसन प्रदान कर देवत्व का दर्जा दिया जाना चाहिये !
अंकुरबाबूःठीक कह रहे है पर ज्यादातर अमानुष लोग कमजोर मानुषों के आंसू अथवा लहू पीकर ही अपनी तरक्की की नींव मजबूत करते हैं ! आज देवात्माओ का तो मिलना मुश्किल हो गया हैं हजारों बरस में एकाध बार ही कोई बुघ्द पैदा होता हैं कमजोर वर्ग के उद्धार के लिये !काश मानव में समानता का भाव विकसित हो जाता जातिभेद का भ्रम नप्ट हो जाता ! दहश्त का घनघोर विषैलापन छंट जाता ! काश मानव अभिमान की दीवार तोडकर मानव कल्याण में निकल पडते !सच मानो दहश्त का कुहरा छंट्ते ही वह पूज्य हो जाता बुद्ध भावे गांधी अम्बेडकर की तरह हैं !
कुमारबाबूः ठीक कह रहे हो अंकुर बाबू काश ऐसा हो जाता ! विषमता के बादल छंट जाते ! जातिवाद की जहरीली दरियां में डूबता हुआ इंसान कमजोर को रौदने के ही फिराक में रहता हैं चाहे वह समाज हो श्रम की मण्डी या धर्म का अडडा या दफतर !किसी ने कहा है देखा देखी पाप देखी देखी पुण्य पर कमजोर को सताने का पाप ज्यादा हो रहा हैं तभी तो गरीबी भूखमरी जातिवाद का विपधर कमजोर को डंस रहा हैं !
अंकुर बाबूः सच पाप ज्यादा पुण्य कम हो गया हैं इस युग में सब एक दूसरे को ठगने में लगे हुए है कमजोर की पीडा से बेखबर !दुकानदार मिलावट करने में जुटा हैं! उत्पादक श्रमिक के दोहन शोषण में लगा हुआ हैं अधिकारी कर्मचारी के दोहन श्शोपण उत्पीडन में लगा रहता हैं ! बांस अपना वर्चस्व कायम रखने के लिये मातहतो को आंतंकित किये रहता हैं ! सच अब तो एक सर्वे से यह सिद्ध हो चुका है कि इकहत्तर प्रतिशत बांस मांतहतों को आतंकित किये रहते हैं यानि सभ्य समाज के आंतकवादी ! उुची बिरादरी वाला नीचीं बिरादरी वाले को वहिप्कृत करने की जुआड में बेचैन रहता हैं यानि हर ओर दहश्त के बादल !
कुमारबाबूःठीक कह रहे हैं तभी तो न गरीबी का उन्मूलन हुआ इस देश से न ही जातिवाद का ! गरीबी और जातिवाद खूब फलफूल रहे हैं !सम्बृद्ध कमजोर का लहू चूसने को बेकरार लगता हैं ! वह अपनी तरक्की कमजोर के शोपण उत्पीडन में ही देखता हैं चाहे वह आर्थिक तरक्की हो या सामाजिक ! सच खुद को खास कहने वाले लोग कमजोर की पहचान लीलने पर उतावलने हैं !
अंकुर बाबूःठीक कह रहे है भइया !यदि ईमानदारी से सामजिक एवं आर्थिक सम्बृद्ध लोग अपने फर्ज पर खरे उतरे होते तो ना आज गरीबी नंगे नाचती और ना ही इसांनियत के माथे का कलंक जातिवाद ही होता ! हमारी धरती स्वर्ग से सुन्दर होती ! जातिवाद की विपपान करने वाला खुद को पाता हैं आज भी सहमा हुआ ! जैसे वह आधुनिक प्रगतिशील समाज में नही श्श्मशान में रह रहा हो जहां उसके अधिकारो का दाह संस्कार किया जा रहा है ! सच इसीलिये तो आज श्शोपित वंचित तरक्की से दूर पडा हुआ हैं ! अस्सी प्रतिशत आबादी को उन्नचास प्रतिशत आरक्षण का विरोध

हो रहा हैं जो समाज के अतिशोपित पीडित पिछ्डे समाज का दिया जा रहा हैं जबकि देश की मात्र बीस प्रतिशत सामान्य आबादी के लिये इक्वावन प्रतिशत आरक्षण दिया जा रहा है इस पर कोई श्शोर श्शराबा ही नही हो रहा हैं ! कमजोर को और कमजोर करने की साजिस हो रही हैं ! क्या इसे न्याय कहा जा सकता हैं !अरे वंचितों को आरक्षण की नही संरक्षण की जरूरत हैं !ए तो समानता के भूखे रहते हैं पेट की भूख तो हाड फोड कर बुझा लेते हैं !इनके के सर्वांगिण विकास के लिये आरक्षण से ज्यादा संरक्षण की जरूरत हैं !सामाजिक आर्थिक समानता की जरूरत हैं ! वंचित समाज को तरक्की का मौका मिलना चाहिये !
कुमार बाबूः आपकी उदारता की तो मैं कद्र करता हूं ! आपके विचार से मैं बिल्कुल सहमत हूं ! आप सामान्य वर्ग के होकर कमजोर कि पीडा से कितना तालूक रखते हैं ! सच मानिये आप जैसे ही लोगो के नेक इरादे की वजह से ही तो कमजोर सासें भर पा रहा हैं वरना कब कादम तोड चुका होता ! सच मानिये अंकुर बाबू मुझें भी रोज रोज आसूंओं सें रोटी गिली कर खानी पडती हैं ! मजबूरी हैं वरना ऐसी चाकरी से तौबा कर लेता ! सवाल हैं छोडकर जाउंगा कहां हर ओर तो यही हाल हैं ! अरमानों का दहन कर चाकरी में लगा हुआ हूं ! हर क्षण मेरे अरमान रौद दिये जाते है ! किसी क्षण बूढी व्यवस्था के बहते मवाद का चखना पड जाता हैं तो दूसरे क्षण आर्थिक विपमता का तो किसी क्षण तथाकथित बडप्पन के अभिमान का कुल मिलाकर मुझ जैसे कमजोर आदमी का हर क्षण दहश्त में ही गुजरता है अंकुर बाबू !
अंकुरबाबूः क्या कह रहे हो कुमार बाबू !
कुमारबाबूः ठीक कह रहा हूं!यकीन करो मेरी बात पर ! दिल का हर कोना छिल चुका हैं! आशा में ही तो जा रहा हूं वरना विपमता के पोपक जीने कहा दे रहे हैं !
अंकुर बाबूः आपकी बात में तो बहुत दम लगती है !सच आज आदमी अपनी उन्नति के अभिमान में आदमी को ही उत्पीडित कर रहा हैं आदमियत से नाता तोडकर ! हर तरह से प्रयास करने लगा है कि कमजोर आदमी को गुलाम कैसे बनाकर रखे ! अभिमानी व्यक्ति हमेशा प्रयासरत रहता है कि वह कमजोर व्यक्ति उसके सामने श्श्वान की भांति जीभ लपलपाता दुम हिलाता रहे और स्वार्थी की हर उम्मीदों पर खरा उतरता रहे !सच आज तो समाज हो या दफतर नंगी आंखों से देखा जा सकता हैं !
कुमारबाबूः यही तो हो रहा है ! कल की ही तो बात है हमारे बांस जो किस्मत के कमालबस अफसर बन बैठे हैं ! उनमें भले ही बाकी काबिलियते हो पर श्शैक्षणिक काबिलियतों को पूरा नही करते परन्तु बडे साहेब हैं ! मुझ गरीब के आंसू से अपनी वाहवाही संवारने के फिराक में सदा ही रहते हैं !
अंकुरबाबूः कहना क्या चाह रहे हो कुमार बाबू क्या मतलब है आपके कहने का ! आप भी उत्पीडित हैं !
कुमारबाबूः बिल्कुल सही समझे ! कल छुट्टी थी पर मुझे परेशान करने के लिये बांस ने दोपहर में फोन किया दफतर बुलाने के लिये खैर मैं घर पर था नही ! रात्रि में देर से आया तो पता चला ! बच्चे ने फोन उठाया था !वह बांस से बोल दिया था कि पापा किसी संस्था के जलसे में गये हैं देर से आयेगे जब भी आयेगे तो बता दूंगा !
अंकुर बाबूः यह तो परेशान होने वाली बात नही हुई !
कुमार बाबूः बात पूरी तो होने दो ! दुसरे दिन जब दफतर गया !
अंकुरबाबूः तब क्या हुआ बांस ने फटकारा !
कुमारबाबूः ठीक समझे ! अपने पद के घमण्ड में चूर रहने वाले बांस बडी बदतमीजी से बुलाये ! मैं पेश हुआ अंकुर बाबूःतब क्या हुआ !

कुमार बाबूः इतना बदमिजाज अधिकारी नही देखा थी इतने बरस की नौकरी में ! बहुत लोगो ने सताया तो है पर बदसलूकी की हदे पार तो वर्तमान के बांस करने लगे हैं !
अंकुरबाबूः अरे ए तो बताओ आपके बांस ने बुलाकर कहा क्या !
कुमार बाबूः सभ्यता का पोस्ट मार्टम और इंसानियत को गाली और क्या !बदतमीजी के साथ बुलाया और बोले क्यो रे कुमार तू कल दफतर क्यो नही आया !एक कागज का पुलिन्दा फेकते हुए बोला ए काम ले जाकर कर अगर तू कल आ जाता तो यह काम कल हो जाता ना ! तेरे के काम कि अहमियत पता नही हैं ! जिस दिन मैं अपनी औकात तेरे को दिखा दूंगा ना तू ही समझ तेरा क्या होगा और भी ढेर सारे बुरे श्शब्द बोले मुझे तो कहने में भी श्शर्म आ रही है ! मैं इतना बोलकर चला आया साहेब रात में देर से आया था ! इतने में आग बबूला हो गया और बोला जा जल्दी काम कर ! मैं आसूं बहाता काम में जुट गया बांस अपशब्द बकने में पागल की भांति !
अंकुर बाबूः यह तो श्रम कानून का उलंघन हैं और आदमियत को गाली भी ! कैसा अभिमानी आदमी हैं ! अरे घमण्ड तो टूट गया हिरण्याकश्यप का कंस का रावण का ! यह कहां लगता हैं ! क्या उुंची पहुंच या उुंची जाति ही हर जगह काम आती हैं !
कुमारबाबूः मजबूरी में नौकरी कर रहा हूं ! परिवार और बच्चो के भविप्य का सवाल हैं ! बांस का व्यवहार तो मेरे साथ बहुत ही बुरा हैं ! वह तो संस्था का कर्मचारी नही खुद का गुलाम समझता है ! मुझे तो जैसे आदमी ही नही समझते ! दफतर में सबसे छोटा कर्मचारी हूं और छोटी बिरादरी का श्भी ! मालूम है छुट्टी के दिन अफसरों के । दफतर आने के लिये कान्वेन्स के पैसे मिलते हैं और मुझे नही ! मुझे खुद का पैसा खर्च कर छुट्टी के दिन काम पर आना पडता हैं ! काम के दिनों में भी बांस छुट्टी के समय चिटठी लिखवाने लगते हैं ! हर तरह से मुझे प्रताडित करने का पणयन्त्र रचते रहते हैं और मैं आंसू बहाता काम में जुटा रहता हूं ! क्या करूं ! गरीबो की कौन सुनता हैं मालूम हैं बांस के पास तो चौबीस घण्टे बढिया दफतर की कार उपलब्ध रहती है !यही नही खुद की जरूरत के लिये किराये की भी खडी हो जाती हैं और भी ढेर सारी सुविधायें भी ! छुट्टी के दिन मुझ गरीब को दफतर आने के लिये खुद का पैसा खर्च कर काम पर आना पडता हैं ! इसके बाद भी दर्द के सिवाय मुझे आज तक कुछ नही मिला !
अंकुर बाबूःकुमार बाबू बांस की इतनी बडी बदतमीजी को बर्दाश्त कर गये ! सच आप तो महान हो
कुमारबाबूः क्या करता प्रतिप्रश्न किये बिना काम करता रहता हूं ! मुझे मालूम हैं मेरी कोई उुची पहुंच नही हैं ! छोटा कर्मचारी और छोटी बिरादरी का कौन मेरी मदद करेगा ! अंकुरबाबू यहां बहुत सारी बातें का फर्क पडता हैं इण्डिया है मेरी जान इण्डिया ! अंकुर बाबू प्रतिप्रश्न करने पर नौकरी जाने का खतरा भी तो हैं ! मेरा कोई सर्पाटर भी तो नही हैं श्शायद छोटी जाति का होने के नाते
अंकुरबाबूः यहां तो मारे रोवै न देय वाली कहावत चरितार्थ हो रही हैं !
कुमारबाबूः आंसू पीकर नौकरी करना मेरी किस्मत बन चुकी हैं !
अंकुर बाबूः यह तो सरासर अन्या हो रहा है आपके साथ !
कुमार बाबूः इस अन्याय के पीछे बुढी सामाजिक व्यवस्था की बदबू आपको नही लगती !
अंकुर बाबूः आती है ना ! सच कुमारबाबू आप उुंची बिरादरी के होते तो जरूर आपको अच्छा प्रतिफल मिलता भले ही आपकी पहुंच उपर तक न होती ! परन्तु यहां तो आपके साथ जुल्म हो रहा हैं
कुमारबाबूः जुल्म सह तो रहा हूं मुझे मालूम हैं जुल्म सहना भी अपराध है पर इसके पीछे मेरा मन्तव्यहै! मेरे परिवार बच्चों के सुखद भविप्य का सपना हैं !
अंकुरबाबूः यह आप तप कर रहे हैं !

कुमारबाबूःबडे कप्ट उठाकर यहां तक पहुंच पाया हूं इसे गंवाना नही चाहता !अफसोस के साथ कहना पड रहा है कि घाव बहुत पाया हूं ! रोज रोज घाव सहकर परिवार के सपने पूरे करने में लगा हूं ! यदि मैंने पीडा की वजह से चाकरी त्याग दिया तो मेरे परिवार के सपने उजड सकते हैं
अंकुरबाबूःआपके मन्तव्य नेक हैं !सहनशक्ति भी आपको भगवान ही दे रहा हैं वरना सब्र का बांध कब का टूट गया होता ! सच कहा है किसी ने नेक उदेश्य से सहा गया कप्ट भी तप बन जाता हैं ! कुमार बाबू आपकी तपस्या के परिणाम उत्तम आयेगे ! भगवान पर भरोसा रखिये !
कुमार बाबूः अच्छे कल की उम्मीद में ही तो दहशत भरा जीवन जी रहा हूं !
अंकुर बाबूः दहशत भरा आपका यह जीवन त्याग हैं ! जो लोग आपके छोटे पद छोटी बिरादरी से घृणा कर जुल्म कर रहे हैं वे ही एक दिन आपके सामने नतमस्तक होगे ! आदमी के साथ भेदभाव का व्यवहार अपराध हो चुका है !
कुमारबाबूः सभी जानते हैं पर अमल कौन करता हैं ! सब कहने में अच्छा लगता हैं ! कथनी करनी में आज का आदमी अन्तर रखता हैं ! हाथी के दांत की भाति दिखाने को और खाने को और !
अंकुर बाबूःठीक फरमा रहे हैं ! दम्भियों की जडों में तो विपमता की ही उर्वरा श्शक्ति है ना ! यही अभिमान और दहशत पैदा करने का कारण भी !
कुमारबाबूः सत्य तो यही है !
अंकुरबाबूःजनप्रतिनिधि भी विपमता के उन्मूलन के लिये कुछ नही कर रहे हैं ! जाति समाज और पार्टी में ही जी रहे हैं ! सिर्फ समानता की बात तो भापणों में ही करते हैं चरित्र में कहा उतारते हैं ! इतना ही नही जाति समाज और अपने ओहदे की वजह से दहशत फेलाने में भी पीछे नही रहते हैं ! यही हाल धर्म समाज के ठेकेदारो का भी हैं ! यदि ए लोग ईमानदारी से समानता के लिये काम किये होते तो विपमता के काले बादल नही मडराते नही दंगे फंसाद होते ! नही वंचितों के साथ बलात्कार अत्याचार ही होते ! विपमता ने ही तो आदमी के बीच दहशत की दीवार खडी कर रखी हैं चाहे समाज हो या दफतर हर जगह !
कुमारबाबूः ठीक कह रहे हैं अंकुर बाबूः
अंकुर बाबूः सामाजिक और राजनैतिक नेताओं से तो अभिनेता कुछ मामले में अच्छे हें ! सामाजिक उत्थान का काम करते हैं ! अर्न्तजातीय ब्याह करते हैं !अनाथ बच्चों का पालन पोपण कर रहे हैं ! यही नही कुंवारी अभिनेत्रिया भी अनाथ बच्चों का गोद लेकर ममता उडेल रही हैं ! लालन पालन कर रही हैं ! कोई साामाजिक अथवा राजनैतिक नेता ऐसा किया हैं नही ना और न ही अपनी से छोटी जाति के साथ रिश्ता किया हैं ! हां देश और समाज को कंगला बनाने के लिये घूसखोरी रिश्तखोरी जरूरी कर रहे हैं ! विपमता की खेती कर रहे है !वंचितों को बस मुट्ठी भर भर आग मिल रही है अपने ही जहां में ।
अंकुरबाबूः आपके बांस भी कम नही ! वे भी अपने पद के अभिमान में आपको खून के आंसू बहाने पर मजबूर किये रहते हैं !
कुमार बाबूः सत्तासम्पन्न लोगों के जाति बिरादरी से उपर उठकर देश जन के कल्याणार्थ काम करना चाहिये ! समानता का व्यवहार करना चाहिये ! चाहे मेरे बांस हो या कोई सामाजिक या राजनैतिक सत्ताधारी या कम्पनी संस्था का पदाधिकारी !
अंकुर बाबूःतभी तो कमजोर आदमी दहशत भरे जीवन से उबर कर समानता का जीवन जी सकेगा और तरक्की का अवसर भी पा सकेगा !
कुमारबाबूः काश सामाजिक आर्थिक समरसता की बयार चल पडती ! घमण्डियों की जडे उखड जाती !

अंकुरबाबूः जरूर वह दिन आयेगा जब हर दहशत से कमजोर निजात पा जायेगा ! दहशत में रखने वाले अपने कुकर्मो की वजह से खुद दहशत में बसर करेगे !बस जरूरत हैं कुमार बाबू शान्ति और अहिंसक मन से आप और आप जैसे कलमकारो को सामाजिक एवं आर्थिक समरसता के शोले उगलते रहने की ! सामाजिक बुराईयों की भभक रही मुट्ठी भर भर आग को सद्भावना से शीतलता प्रदान करने की ।

लहू के कतरे

अरे बाप रे अहिल्या मांता के शहर के लोग एक दूसरे के लहू के रंग से शहर बदरंग कर रहे हैं !मारने काटने को दौड रहे हैं कहते हुए सचेतन जल्दी जल्दी मोटर साइकिल खडी किये और झटपट घर में भागे ! घर में घुसते ही बेहोश से गिर पडे ! सचेतन की हालत देखकर बीटिया दौडी हुई आयी और जोर जोर से मम्मी मम्मी बुलाने लगी !बीटिया जूही के पुकारने की आवाज सुनकर कल्पना दौडती भागती आयी ! सचेतन को झकझोरते हुए बोली अरे जूही के पापा आंख तो खोलो क्या हो गया तुमको !

सचेतन अरे मुझे तो अभी कुछ नही हुआ है अगर ऐसे ही चलता रहा तो श्शहर की आग को यहां तक पहुंचने में देर नही लगेगी !

कल्पनाः क्या कह रहे हो हम अपने ही घर में सुरक्षित नही है ! क्या हुआ है श्शहर को ! कैसी आग लगी है शहर में साफ साफ कहो तो सही ! मेरा तो दिल बैठा जा रहा है ! अरे क्या हुआ है शहर कों !

सचेतनःअरे शहर सुलग रहा है !

कल्पनाः क्या कह रहे हो ! सोलह साल से इस श्शहर में रह रहे है ! कभी तो नही सुलगा था यह श्शहर कुछ दिनों से इस श्शहर की अमन श्शान्ति को ना जाने किसकी नजर लग गयी है !आज फिर कौन सी ऐसी बात हो गयी है कि शहर सुलग रहा है ! बात मेरी समझ में नही आ रही है !

सचेतनःभागवान श्शहर में दंगा फैल गया है !लोग एक दूसरे को मारने काटने पर तूले है ! कही दुकान जल रही है तो कही किसी का घर ! कही इज्जत पर हमला हो रहा है तो कही लहू से सडक नहा रही है !

कल्पनाःबाप रे फिर दंगा ! 21 जनवरी मुकेरीपुरा में दंगा भडका था दस दिन बाद कर्बला मैदान पर आज फिर 12 फरवरी 2007 को दंगा भडक गया !एक सम्प्रदाय दूसरे के जान लेने पर तूली है ! इस श्शहर की अमन श्शान्ति को धार्मिक उन्माद खा जायेगा क्या भगवान ! हे भगवान उन्मादियों को सदबुद्धि दो जो लोग धर्म की अफीम खाकर दंगा फैला रहे हैं ! बेचारे गरीब मारे जा रहे हैं !अच्छा बताओ आज किस बात को लेकर दंगा भडका है !

सचेतनः जितने मुंह उतनी बातें ! कोई कह रहा है कि नरसिंह बाजार में एक लडकी के साथ छेडछाड को लेकर दंगा भडका हैं ! कोई कह रहा हैं दो पहिया वाहनों का भिडन्त को लेकर ! इन्ही अफवाहो को लेकर परसिंह बाजार में भगदड मच गयी ! आग में घी डालने का काम कुछ भागती हुई महिलाओं ने भी किया यह कहकर कि उनके घरों में आग लगा दी गयी हैं ! शायद यही अफवाहे साम्प्रदायिक दंगे का रूप धारण कर ली हो ! खैर खुरापाती लोग तो बहाना ही ढूढते रहते हैं जबकि जानते है कि दंगा करने वाले और दंगे का शिकार हुये लोग यानि दोनो मुश्किल में आते हैं पर सिरफिरे अपनी औकात तो दिखा ही देते हैं ! घरो मं आग लगने की अफवाह फेलते ही उपद्रवी लोग सडक पर आ गये ! पत्थरबाजी बम पेट्रोल बम तक एक दूसरे के उपर पर फेकने में जरा भी हिचकिचाये नही ! जबकि दोनो पक्ष इसी श्शहर में रह रहे है एक दूसरे को बचपन से देख रहे हैं फिर भी दंगा भडका रहे हैं ! जिस गली गुचे में पले पले बढे उसी गली को एक दूसरे के

खून से बदरंग कर रहे हैं ! क्या लोग हो गये हैं !एक दूसरे पर इतेन पत्थर फेके गये कि सडक ही पूरी पट गयी ! नगर निगम ट्रको में भर कर पत्थर ले गया ! लहू के कतरे बिना किसी अलगाव के श्शहर के फिजा को बदरंग कर रहे है !उपद्रवी है कि अपनी करतूतों पर मदमस्त होकर जहर घोल रहे हैं ! क्या लोग हो गये है , आदमी के लहू के कतरे कतरे से अपनी धर्मानधता एवं जिद को संवारने पर तूले हुए हैं ! यही साम्प्रदयिक दंगे तो धरती पर इंसानियत के दुश्मन बन हुए हैं ! वाह रे धर्म सम्प्रदाय की अफीम खाकर शहर अमन शान्ति को चौपट कर जंगल राज स्थापित करने पर जुटा है सच 12 फरवरी 2007 का दिन शहर के इतिहास का काला दिवस साबित हो गया है !

कल्पनाः सुरक्षा की जिम्मेदार पुलिस नही पहुंची क्या !

सचेतनः पुराने ढर्रे पर ! उपद्रवियों को खदेडने के लिये गोलियां चलायी ! गोली चलाने के बाद भी उपद्रवी गलियों में छिप छिप करे पत्थरबाजी करते रहे !पढरीनाथ,मल्हारगंज छत्रीपुरा थाना क्षेत्रों में धारा 144 लग गयी हैं जैसा अखबार में छपा है !

कल्पनाः क्या हो गया है इस श्शहर के लोगो को श्शान्ति सदभाव को कूचलने पर उतर रहे है ! यह शहर तो बहुत सुरक्षित था पर अब इस शहर पर ना जाने किसकी नजर लग गयी ।

सचेतनः सच सभ्य समाज के विद्रोहियों की नजर लग गयी है।पुलिस प्रशासन समझा बुझाकर शान्ति बहाल करने मे जुटा है ।

कल्पनाःसमझाने के अलावा पुलिस तो और भी कदम उठा सकती थी !

सचेतनःआसू गैस बल प्रयोग तक सीमित रहा! उपद्रव की आग जब अपने चरम पहुंची तब जाकर धारा 144 और कही कही कफर्यू लगाया !

कल्पनाः काश यह सब उपद्रव के श्शुरूआती दौर में लग जाता तब श्शायद न तो जान की और नही माल की हानि होती !

सचेतनः ठीक कह रही हो ! अब तो उपद्रवियों ने आमजन के लिये मुश्किल खडी ही कर दिये है ! सब बाजार हाट बन्द हो सकता है !

कल्पनाः बन्द तो होना ही चाहिये !कब उपद्रवियों की छाती में उबल रहा उन्माद सुलग उठे और शहर को शर्मसार कर दे ! पूरे क्षेत्र में कफर्यू लगा देना चाहिये ! बीच बीच में छूट मिलती रहे ताकि लोग अपने जरूरी काम कर सके !उपद्रवियों की शिनाख्त कर काले पानी की सजा दे देनी चाहिये ताकि फिर उन्माद का भूत न सवार हो सके ! कफर्यू में ढिल के वक्त पुलिस को उपद्रवियों पर चौकस निगाहें भी रखनी होगी !सडक पर बिखरे लहू के कतरों के सफाई की भांति लोगों को भी अपने दिलों पर जमी मैल की परतों को धो देना होगा तभी पूर्णरूपेण सर्वधर्म सदभाव कायम हो सकेगा !

सचेतन : जिस दिन शहर में सदभाव स्थापित हो गया ! सचमुच मैं जश्न मनाऊंगा ! कल्पनाः काश तुम्हारी दिली ख्वाहिश पूरी हो जाती ! शासन प्रशासन उपद्रयिों के साथ सख्ती से पेश आता हर राजनीति से उपर उठकर ! उपद्रवियो की हर गतिविधियों पर नजर रखता !

सचेतनः भागवना ठीक तो कह रही हो ! होना तो ऐसा ही चाहिये पर लोग अपने कर्तवयों पर खरे उतरे तब ना! पुलिस प्रशासन को तो आगदृप्टि अब तो रखना ही होगा ! खैर जो लोग अमन पसन्द श्शहर के लहूलुहान हुए है उनका क्या !

कल्पनाः अमन पसन्द लोग अपनी अपनी घाव को भूलकर शहर की श्शान्ति के लिए त्याग तो करेगे ही परन्तु उपद्रवी लोग अपनी करतूतो पर लगाम तो लगाये शहर को बदनाम ना करें !

सचेतनः ठीक कह रही हो उपद्रव से श्शहर की अमन सदभावना को धक्का तो लगता ही है ! वह समुदाय धर्म भी दुनिया की नजरो में बदनाम हो जाता हैं जो दंगा फसाद के लिये जिम्मेदार होता

है ! खैर अब से भी अमन हो जाता ! शहर तो झुलस ही गया है ! उपद्रवी अब से भी सदभावना विरोधी गतिविधियों पर लगाम लगा लेते तो बडा सकून मिलता !
कल्पनाः देखो जी चिन्ता को दिल से ना लगाओ तुम्हारी तबियत भी ठीक नही हैं ! चिन्ता तुम्हारे स्वास्थ की दुश्मन हैं ! रात भी ज्यादा हो गयी हैं ! अब सो जाओ !
सचेतन बडी मुश्किल से सोया पर नींद में भी कई बार बडबडाता रहा बचाओ बचाओ ! अरे किसी के आशियाने में आग ना लगाओ ! सुबह हुई ही नही कि बच्चो से बार बार अखबार लाने को कहने लगे !
पिता के बार बार अखबार मांगने पर बीटिया जूही बोली अरे पापा अभी अखबार ही नही आया तो दे कहां से ! रेडियों सुनों समाचार आ रहा हैं शहर में शान्ति स्थापित हो रही हैं धीरे धीरे ! उठो ब्रश करो दवाई लो ! आंख खोले ही नही अखबार अखबार मांगने लगे सचेतनः अखबार आज इतना देर से क्यो आ रहा है !
कल्पनाःअरे अखबार और हांकरो पर भी तो दंगे का असर होगा की नही !
इतने में कुछ गिरने की आवाज आयी !सचेतन जोर से बोले देखो पेपर आ गया क्या ! लगता हैं हांकर अखबार फेंका हैं !
कल्पनाःजल्दी जल्दी गयी और अखबार सचेतन को थमाते हुए बोली लो अखबार आ गया सचेतनःअरे बाप रे !
कल्पनाः क्या हुआ !
सचेतनः शहर में कफर्यू जारी ,स्कूल कोल बन्द बसों का आनाजाना बन्द ! शान्ति मार्च ! मंगलवार को शाम होते होते स्थिति बिगडी ! दंगे के दूसरे दिन भी अमन नही शहर में !
कल्पनाः दंगे का कारण लगता हैं अफवाहे ही रही है वरना छोटी सी बात को लेकर इतना बडा दंगा ! कभी नही होता ! छोटी मोटी बातो में धर्म सम्प्रदाय घुस रहा हैं और यही दंगे का कारण बन जाता हैं ! दंगाईयों की सोची समझी साजिश के तहद सब हो रहा है !
सचेतनः मानवता सदभावना के विरोधी चाहते क्या हैं ! जूना रिसाला के एक सामुदायिक भवन पर बम फेंक दिया है दंगाईयो ने !
कल्पनाः बम फेका हैं तो कोई ना कोई हताहत भी हुआ होगा !
सचेतनः खैर भगवान ने बचा लिया हैं जान की हानि तो नही हुई हैं ! पुलिस ने मोर्चा खोल दिया है !
कल्पनाः उपदवियों की शिनाख्त कर उनके तलाशी के साथ उनके घरों एवं संदिग्ध सीनों की भी तलाशी लेनी चाहिये ! दंगाई बम गोले कहां से लाते हैं ! इनके तार हो ना हो किसी उग्रवादी ग्रुप से तो नही जुडे हुए है !
सचेतनः हो भी सकता है! पुलिस गहन छानबिन कर रही हैं ! रैपिड एक्शन फोर्स भी शहर में आ चुकी है
कल्पनाः शहर का दंगां साम्प्रदायिक रंग के साथ राजनीतिक रंग में भी रंगा लगता है ! शहर की आर्थिक राजधानी जहां हमेशा ठसाठस भीड रहती थी वहां सन्नाटा पसरा हुआ है !
सचेतनः एक तरफ तो शहर का आवाम बेहाल हैं दूसरी ओर राजनीतिक गरमी भी बढने लगी हैं ! अमन की उम्मीद के बीच आरोप प्रत्यारोप भी लग रहे हैं !
कल्पनाः दंगा भले ही साम्प्रदायिक हो पर राजनीति की उर्वरा शक्ति भी इसमें शामिल तो हैं ! ऐसी खबर गली मोहल्ले में फैल चुकी है !

सचेतनःशहर के लोग संवेदनशील एवं वेदना को समझते हैं ! अमन पसन्द लोग हैं ! सामाजिक एकता में विश्वास रखने वाले लोग हैं ! उपद्रवियों के इरादों को विफल तो कर ही देगे !सच यह है कि कोई तो हैं जो शहर की फिजा बिगाडने पर तूला हुआ हैं !
कल्पनाःठीक कह रहे हो ! उपद्रवियों को बेरोजगारी अशिक्षा,महगाई,गरीबी छुआछूत जातिवाद के मुददे दिखाई ही नही पड रहे हैं ! देश समाज के दुश्मन साम्प्रदायिक भावना के सहारे श्शहर का अमन चैन छिन रहे हैं !
सचेतनः समाज में बैर फेलाने वाले लोग देश समाज के कल्याण की बात नही कर सकते ना !
कल्पनाः यही तो दुर्भाग्य हैं ! देश में पढे लिखे बेरोजगारों की फौज खडी हो रही हैं ! भूख गरीबी पसरी पडी हैं ! अशिक्षा नारी शिक्षा के लिये जंग छेडना चाहिये था पर समाज देश के विरोधी अमन श्शान्ति के खिलाफ मोर्चा खोल रहे है ! श्शहर को कफर्यू धारा 144 में जीने को विवश कर रहे है
सचेतनः ठीक समझ रही हो भागवान काश उपद्रवी लोग भी सोचते देश समाज के हितार्थ !
कल्पनाः दंगे के पीछे कोई ताकत तो हैं !
सचेतनः पर्दाफाश हो जायेगा ! किसी के तन पर तो किसी के मन पर घाव लगी हैं ! सभ्य समाज के दुश्मनो ने कितनों की रोटी रोजी में आग लगा दिये हैं ! !
कल्पनाः दंगा कोई चैन देसकता है क्या !नही ना !
सचेतनः सब जानकर भी उन्मादी लोग एक दूसरे के खून के प्यासे बन जाते हैं ! जबकि मानवता से बडा धर्म और दर्द से बडा रिश्ता कोई नही होता पर उपद्रवी सब रौदने पर तूले है !
कल्पनाः खैर जिन्दगी पटरी पर आने लगी है !
सचेतनः श्शहर में जल्दी अमन श्शान्ति स्थापित हो ! उपद्रवी लोग तो आग उगलते ही रहे हैं!
कल्पनाः जूही के पापा कुछ औरते कल आपस में बात कर रही थी कि हुकुमत असली मुजरिमों पर हाथ नही डालती ! तमाम दंगे इस बात के गवाह हैं ! ऐसा करने मे हुकुमत को खतरो से खेलना पड सकता हैं क्योकि दंगे के जिम्मेदार दोनो पक्षों में कटरपंथियों की भरमार होती हैं ! यही दंगों का राज तो नही हैं !हुकुमत में एक किस्म का कटरपंथी तबका वोट बैंक का इंतजाम करता हैं तो दूसरा राजनीतिक बैसाखियों का !
सचेतनःठीक कह रही हो ! राजनीतिक आकाओ ने वोटो की जिस तरह जाति धर्म अथवा सम्प्रदाय के आधार पर विभाजित कर दिया हैं ! उससे से यह कयास लगने लगा हैं अमन पसन्द देश समाज के नागरिक को कि शहर अब बारूद के ढेर पर खुद को पाने लगे है ! समय आ गया है अब उपद्रवियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो ! श्शासन प्रशासन इसके लिये कमर कस ले ! उपद्रवी चाहे जिना प्रभावशाली क्यों न हो उसे देश समाज का खतरा समझकर उसके खिलाफ कार्रवाई हो ! धार्मिक साम्प्रदायिक उग्रवादी संगठ्नो पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू हो जो अमन श्शान्तिं के विरूध्द उठ खडे होते हैं ! देश में समान संहिता लागू हो !तभी दंगो से निपटा जा सकेगा !
कल्पनाः काश ऐसा ही होता !
सचेतनःऐसा होगा देखना एक ना एक दिन !हत्या दुर्घटना,दंगा उपद्रव महगाई आदि से लम्बे अर्से से दिल दुख रहा है पर अब सकून की खबरे आने लगी है !महाशिवरात्रि एंव जुम्मे की नमाज के प्रभाव से श्शान्ति एवं सदभावना की बदरी छाने लगी है !
कल्पनाःसच धीरे धीरे अब शहर मुस्कराने लगा है !ऐसी खबर आने लगी है !अमन शान्ति पसन्द शहर के लोग सब कुछ भूलने लगे हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो !अच्छा संकेत हैं सामाजिक सदभावना का !
सचेतनः अरे जूही की मां ए देखो ! कई दिनों के बाद बडा सकून लग रहा हैं !
कल्पनाः सकून महसूस कर रहे हो यह तो मैं समझ गयी पर दिखा क्या रहे हो !

सचेतनः अखबार ....शहर में अमन चैन हो गया हैं ना इसीलिये पापा अखबार में छपी खबर दिखा रहे हैं क्यो पापा यही ना !
सचेतन :ठीक समझ रही हो !
कल्पनाः श्शहर में श्शान्ति हो गयी हैं ! उपद्रवी अपनी अपनी मांदों में छिप गये हैं ! अब फिर कभी सिर ना उठाये ! शहर और शहर की अमन श्शान्ति को उपद्रवियों ने साम्प्रदायिकता की आग में धू धू कर जला ही दिया था पर अब पुनः सदभाव की लहर दौड पडी हैं !
सचेतनः अमन श्शान्ति में ही तो सभ्य समाज की आत्मा बसती है !
कल्पनाः देखो सब ओर सदभाव पूर्ण माहौल हो गया हैं तुम अपने वादे पर खरे उतरो !
सचेतनः क्या !
कल्पनाः अरे नाचों गाओं जश्न मनाओ भूल गये क्या ?अब तो उपद्रवियों की बोयी मुट्ठी भर आग ठण्डी हो गयी है।
सचेतन : नही भागवान !आज तो वाकई नाचने गाने जश्न मनाने का दिन हैं शहर में अमन शान्ति हैं और घर में बेटे का जन्म दिन 17 फरवरी आज तो दुगुनी खुशी हैं! उपद्रवियों द्वारा सुलगायी मुट्ठी भर आग ठण्डी हो गयी है ।
कल्पना : अब देर किस बात की !कुछ गीत तो सुनाओ अब ! इस खुशी के माहौल में चार चांद लगाओ !
सचेतनः लो सुनो सुनाता हूं !
मैं एक गीत सुनाता हूं !
सदभाव का भूखा,
अमन शान्ति का गीत सुनाता हूं
ना बहे लहू के कतरे कतरे यारो
शहर जहां श्शान्ति सदभाव की है यारी !
मैं एक गीत सुनाता हूं ....
कटरपंथियों उन्माद नही अच्छा
डर में जीने वाले क्या करोगे सुरक्षा
न उगलना कभी आग,
मानवता से कर लो यारी.
मैं एक गीत सुनाता हूं ....

उजियारा

ठण्डी का यौवन दिसम्बर का बचपन,झाबुआ का आदिवासी दुर्गम इलाका । डां.माणिकचन्द पसीने से तरबतर 250 नेत्र आपरेशन बडे,छोटे एवं सुक्ष्म और हौसला बिल्कुल जवां ।डां.माणिकचन्द पसीना सूखाने की नियति से शिविर के प्रवेश द्वार पर खडे ही हुए थे कि एक बूढी बेबस लाचार औरत अपने बेटे का सहारा बनी, शिविर के सामने ठिठकते हुए डां. साहेब से पूछ बाबू जी डां.माणिकचन्द कहां मिलेगे ।
डां. साहेब–अम्मा जी डां.माणिकचन्द से क्या काम है ।
बूढी अम्मा–बाबू जी डां.साहेब को नही जानते ।
डां.साहेब–नहीं अम्मा ।
बूढी अम्मा–बाबूजी वे तो कारे के उजियारे है । डां.माणिकचन्द नही जानते बाबू जी ।उनको तो दुनिया जानती है यदि डां.माणिकचन्द को नही जानते तो किसी को नही जानते । बाबूजी बुरा नही मानना ।

डां. साहेब–अम्मा वो कैसे कारे के उजियारे हो गये ।
बूढी– वे तो बहुत बडे डांक्टर है आंखों के । रोशनी विहीन आंखों को रोशनी दे देते हैं । बाबू जी आपको इतना पता नही हैं । अच्छा ये बता सकते हो । वो आंखो के आपरेशन का शिविर कहां लगा हैं । श्शहर में अखियां चैांधिया गयी है बाबू जी ।शिविर किधर लगा है बस इतना ही बता तो बाकी मैं ढूढ लूंगी डां. साहेब को ।
डां. साहेब– हां अम्मा यह तो मालूम हैं आ जाओ मेरे साथ ।
डां. साहेब आगे आगे बूढा अम्मा बेटे का हाथ थामे पीछे पीछे । डां. साहेब शिविर के अस्थाई मरीज परीक्षण कक्ष में अम्मा को बैठने का अनुरोध करते अपनी कुर्सी पर बैठते हुए बोले बोलो अम्मा क्या काम है डांक्टर डां.माणिकचन्द से । मैं ही हूं ।
बूढी अम्मा–बाबू जी आप ।
डां. साहेब– हां अम्मा मैं ।
बूढी अम्मा–जी मेरी बुढोती की लाठी टूट रही है असमय । बडी उम्मीद से आयी हूं कि आप मेरी लाठी को टूटने ना दोगे । बाबू जी बचा लो मेरी लाठी को ।
डां.साहेब–अम्मा उदास ना हो । थोडा वक्त तो दो ।
बूढी अम्मा–बूढी हो गयी हूं । सठिया गयी हूं , गरीबी का बोझ तो माथे था ही अब जवान बेटे की आंख का चला जाना भी दुख के समन्दर में ढकेल दिया हैं बेमौत मरने को बाबूजी । बेटवा के अलावा अब तो कुछ सूझता ही नही बाबू जी।
डां.साहेब बूढी अम्मा को सान्तवना ही दे रहे थे कि इतने में शिविर के आयोजक लोग आ गये ।डां. साहेब से बोले साहेब रात ढेर बित चुकी हैं थोडा खाना खा कर अराम कर लीजिये । डां.साहेब उनके अनुरोध को ठुकराते हुए बोले आप लोगो को हमारी फिक्र हैं मैं आप सब का एहसानमन्द हूं । हमारे सामने एक बूढी मां अपने जवान बेटे जिसकी ज्योति चली गयी हैं उसके इलाज का अनुनय विनय कर रही हैं !दुख के आसूं बहा रही हैं । ऐसे समय में खाना और अराम तो सम्भव नही हैं । समस्या के निदान का समय है ।
आयोजनकर्ता–डां.साहेब अब तक तो आप 250 आपरेशन कर चुके है और अभी तक आपने नाश्ता भी किया नही है और ना ही अराम ।
डां.साहेब देखिये मानव सेवा ही हमारा कर्म और धर्म बन चुका है।मैं कोई समझौता करने को तैयार नही ।
आयोजक–डां.साहेब आप बहुत थक गये होगे ।
डां.साहेब–बिल्कुन नही । मैं जरा भी थकावट महसूस नही कर रहा हूं ना ही भूख ही ।मेरा तो उदेश्य है मानवसेवा ।आप लोग जरा मेहरबानी कीजिये थोडा सा वक्त दीजिये ताकि एक मां की उम्मीद को प्राणवायु दे सकूं ।
डां.साहेब बूढी अम्मा से बात करने लगे । अम्मा कब से आपके बेटे को तकलीफ है ।
बूढी अम्मा–बाबू जी पिछले साल से है तकलीफ कांपते हुए बोली ।
डां.साहेब–अम्मा ठण्ड लग रही है ।
बूढी अम्मा–बाबूजी हडिडयां बोल रही है।
डां.साहेब अम्मा को हीटर के पास बैठाते हुए बोले अम्मा आग सेको पर हाथ नही लगाना,नही तो करण्ट लग जायेगी । याद रखना । थोडी देर बैठो गर्मी लगने लगेगी । तकलीफ के विपय में आपके बेटे से जान लूंगा ।
बूढा अम्मा– बाबूजी आप हमारे बेटे के समान ही हो ।
डां.साहेब– हां वो तो हैं । अम्मा आप हाथ सेंको में तकलीफ के विपय में जानकारी ले लेता हूं ।

बूढी अम्मा–ठीक है बाबूजी ।
डां.साहेब अपनी कुर्सी पर बैठते हुए पूछे क्यों भाई आपका नाम क्या हैं और कब से नही दिखायी पड रहा है ।
बाबूजी गोपी नाम हैं पिछ्ले साल से ही नही दिखाया पड रहा है । बिल्कुल ही
डां.साहेब–पिछ्ले साल से ।अच्छा ये तो बताओ दारू तो नही पीते थे ।
गोपी– बाबू जी दारू और ताडी के बिना तो सकून ही नही मिलता ।
डां.साहेब–गोपी को पेशेण्ट टेबल पर लिटा दिये ।सघन आंख की चेकिंग किये । इसके बाद गोपी को कुर्सी पर बैठाये तब बोले गोपी मामला तो बहुत गम्भीर हैं पर घबराओ नही । अभी भी उम्मीद बाकी है । पहले आते तो अच्छा होता । खैर छोडो , तुमको ज्योति मिल सकती हैं पर तुरन्त आपरेशन करना होगा ।
डां.साहेब की बात सुनकर बूढी अम्मा की आंखों में जैसे रोशनी बढ गयी एकदम से आग तापना छोडकर डां.साहेब के पास आ गयी और बोली क्या बोले बाबूजी जरा एक बार और बोलो ना ।
डां.साहेब–अम्मा गोपी फिर से दुनिया देख सकेगा ।
बूढी अम्मा–बाबू जी कारे में उजियारा डालकर बडा उपकार करोगे ।
डां.साहेब–अम्मा जी कोशिश तो पूरी करूंगा पर मेरी फीस ।
बूढीअम्मा–मतलब रूपइया बाबू जी वह तो मेरे पास नही है ।
डा.साहेब–अम्मा बिना फीस के कैसे काम होगा । सबने फीस दिये है । फीस तो चाहिये ही ।
बूढी अम्मा–बाबू जी मै। बेबस लाचार अंधे बेटे की मां। कैसे बन्दोबस्त करूंगी। मेरी झोली तो खाली हैं । गरीबी,भूखमरी ने मेरी झोली को चाल डाले है । मेरी झोली में कुछ थमता ही नही । कैसे फीस दे पाउंगी
डां.साहेब अम्मा तुम नही दे पाओगी तो क्या हम गोपी से ले लेगे डां.साहेब मुस्कराते हुए बोले क्यो भाई गोपी दे सकोगे ।
गोपी– मां न तो सब दास्तान कह दिया है। खैर मेरी औकात में होगा तो जरूर दूंगा ।
डां.साहेब– गोपी तुम तो बहुत धनी हो । तुम्हारे पास मां तो है । तुम दे सकते हो तभी तो मांग रहा हैं।
गोपी –मांग लो साहेब ।
डां.साहेब– मेरे भाई फिर मुकरना नही ।
गोपी–साहेब औकात में है तो जरूर दूंगा चाहे मुण्डी ही कट जाये ।
डां.साहेब–पक्का ।
गोपी– हां साहेब पक्का ।
डां.साहेब–वचन देना होगा ।
गोपी–हां साहेब वचन दिया । दे दूंगा क्या मांग रहे हैं ।
डां.साहेब– गोपी दारू...............
गोपी– क्या.... दारू........
डां.साहेब–हां गोपी दारू.......
गोपी–यही वचन मांग रहे थे दे दूंगा साहेब.........
डां.साहेब दे दोगे ।
गोपी– हां साहब ।
डां.साहेब– फिर देरी किस बात की दे दो वचन गोपी की अब कभी दारू नही पीओगे ।
गोपी–क्या मांग लिया साहेब ।

डां.साहेब– वचन दिये हो गोपी मुकरना नही । कसम खाओ अब कभी दारू नही पीओगे ।
गोपी–ठीक है साहेब अबतो मैं नही पाऊंगा और औरो को भी पीने से माना करूंगा ।
डां.साहेब– शाबास गोपी श्शाबास । मिल गयी फीस ।
बूढी अम्मा की आंखों में रोशनी के साथ श्शरीर में ताकत भी बढ गयी यह सुनते ही । वह उछल पडी और बोली वाह बाबूजी क्या तुमने फीस ली है ।
डां.साहेब–अम्मा मेरे जीवन का उदेश्य ही है मानव सेवा तभी तो डांक्टर बना हूं । अपने कर्म पथ पर सतत चलता रहता हूं चाहे चम्बल के दुर्गम स्थल हो बस्तर हो या झाबुआ का आदिवासी इलाका । मुश्किलो से खेलकर भी इलाज करने निकल पडता हूं रात हो या दिन ।
बूढी अम्मा– हां बाबू जी डांक्टर के वेप में सचमुच भगवान हो ।
डां.साहेब अम्मा निश्चिन्त होकर बैठो आपरेशन के बाद गोपी देखने लगेगा ।
बूढीअम्मा–बाबूजी गोपी को दुनिया दिखा दो फिर से ताकि मैं चैन से मर तो सकूं मुसीबतो मे जीकर भी ।
डां.साहेब –ऐसा ना कहो अम्मा ।
बूढी अम्मा–बाबूजी गोपी देखने लगेगा तो मुझे मौत भी आ जाये फिर कोई रंज नही रहेगा।मेरी लाठी मजबूत तो हो जायेगी ।
डां.साहेब –जरूर मजबूत होगी और बेटे का सुख भी तो भोगना है ।
बूढी अम्मा–हां बाबू जी बेटा की कारी जिन्दगी में रोशनी भर जाये दो रोटी कमाने खाने लगे बस इतना सा ही तो अपना ख्वाब है ।
डां.साहेब–अम्मा भगवान पर भरोसा रखो कहकर डा.साहेब गोपी को आपरेशन थियेटर में ले गये ।गोपी का आपरेशन बडा था । आपरेशन होते होते बारह बज गये रात्रि के इस बीच कई बार बिजली भी गयी पर आपरेशन कामयाब रहा ।डां.साहेब आपरेशन थियेटर से हंसते हुए निकले और गोपी की मां से बोले अम्मा अब गोपी देखने लगेगा बस पटटी खुलने तक इंन्तजार करो ।
बूढी अम्मा–बाबू जी भगवान तुमको लम्बी उम्र और हर कदम पर कामयाबी दे ।
बूढी अम्मा की बात अभी पूरी भी नही हुई थी कि 500 आदिवासी भाई बहन ढोल नगाडे बजाते गाते आ गये और डां.साहेब की जयजयकार करने लगे । कुछ लोागो ने डा.साहेब को कंधे पर बिठा लिया क्योंकि डा.साहेब 251 आपरेशन कर चुके थे ।पूरी रात खूब जश्न मना। डा.साहेब ने भी खूब लुत्फ उठाया !रात कब बित गयी पता ही नही चला ।समय बितता चला गया। मरीजों की आखों पर से पटटी खोलने का भी समय आ गया । डां..साहेब एक एक मरीज की पटटी खुद अपने हाथो से खोलते गये और बधाई देते भी ।गोपी की आंख की पटटी खोलने का क्रम सबसे आखिरी था ।उसका भी क्रम आया ।डां.साहेब गोपी से पूछे भाई गोपी सबसे पहले किसको देखना चाहोगे ।
गोपी–डा.साहेब आपको और मां के हाथो से पटटी खुलवाना चाहूंगा ।
डां.साहेब– ठीक हैं गोपी,भगवान तुम्हारा भला करें ।डां.साहेब गोपी के सामने बैठ गये और गोपी की मां के हाथो पटटी खोली गयी ।
बूढी अम्मा– दिखाई दिया बेटा ।
गोपी – हां अम्मा सामने भगवान बैठे हुए है ना कहकर डां.साहेब का पैर छूने को लटकने लगा ।
डा.साहेब नही गोपी नही मेरे भाई कहकर गल से लगा लिये ।
गोपी के जीवन का कारा छंट चुका था ।पूरा शिविर परिसर और आसपास के गांव भी खुशी में तरबतर थे । डां.साहेब को दूसरे मिशन पर जाना था पर श्रध्दालु लोग छोडने को राजी ना थे । सच सच्चे मन से की गयी मानव सेवा का प्रतिफल भी तो अच्छा ही होता हैं यही तो भगवान महावीर बुध्द,ईसा ने भी किया ।डां.साहेब को दूसरे मिशन पर जाना जरूरी था बडी मुश्किल से वे वहां

से निकल पाये ।इसके पहले 500 आदिवासी भाई बहनो ने डां.साहेब की पूजा अर्चना किया । गोपी की बूढी मां डां.साहेब के आगे हाथ जोडकर खडी हो गयी और बोली बाबू जी आपने मेरी और मेरे बेटी के कारे जीवन के अंधियारें की मुट्‌ठी भर आग के दुख को हर कर भर मुट्‌ठी उजियारे का सुख भर दिया बाबूजी सदा सुखी रहो । डां.माणिकचन्द नाहटा चल पडे,चलते रहे मानव सेवा के एक मिशन से दूसरे मिशन पर निरन्तर.......... ।

दर–ब–दर

विजय बाबू अपनी गृहस्थी की गाडी धर्मपत्नी इंद्राणी के साथ मिलकर बडी हंसी खुशी से खींच रहे थे ।दोनो पुत्रो को अच्छी तालिम भी दिये थे नन्ही सी तनख्वाह के भरोसे । दोनो पति पत्नी खुद के पेट पर पटटी बांध लेते थे पर बेटो दीपू और टीपू को जरा भी गरम हवा के लगने की कोई गुजाइश नही छोडते थे । जीवन गाडी समय के पहिये पर चल रहा था । विजय बाबू के दोनों बेटो को बडे बडे ओहदे की नौकरियां भी मिल गयी । विजय बाबू और इंद्राणी के जीवन में बसन्त छा गया । विजय बाबू ने दोनो बेटो का ब्याह गौना बडी शान शौक से किया । दोनो बेटे अपने परिवार में मगन हो गये । विजय बाबू के पास बाप दादे की जमीन जायदाद भी खूब थी । दीपू और टीपू की गिध्द नजर पहने तो आकर इसी पर टिकी ।

एक दिन दीपू और टीपू दोनो अपनी अपनी पत्नियों के साथ विजय बाबू और इंद्राणी को घेरकर बैठ गये और चिकनी चुपडी बाते करने लगे । बातो ही बातो में दोनो भाई एक स्वर में बोले–पापा गांव की जमीन बेच देना चाहिये ।गांव की जमीन से जिना फायदा नही होता उतना तो आने जाने में खर्च हो जाता है ।खेती की आधी से ज्यादा उपज तो मजदूरों की भेट चढ जाती है उपर से बार बार भागना पडता है ।पापा गांव और गांव की जमीन जायदाद से मोहब्बत तो घाटे का सौदा साबित हो रहा है ।

विजय बाबू और इंद्राणी एक स्वर में बोले–सौदा – अरे नही रे वहां की जमीन में तो हमारी पीढियों की हडिडयां गली पडी है । बेटा वह जमीन नही वह तो पुरखों की धरोहर है । उसे सौदा मानकर तुम लोग बेचने की बात कर रहे हो ।बेटा कभी बेचने का नाम ना लेना मेरे जीते जी । मेरे पुरखो की निशानी है गांव की जमीन और महलनुमा घर ।

दीपू और टीपू एक स्वर में बोले–पापा ऐसी हाथी पालने से क्या फायदा जो नुकशान दे रही हो और अपनी जरूरते भी नही पूरी हो रही हो । पापा न तो हम और नही ही हमारी औलादे गांव जायेगी तो इस जमीन जायदाद का क्या होगा ।

विजय बाबू और इंद्राणी बोले–बच्चो जब हम मर खप जायेगे तो तब तुम लोग जो उचित समझना कर लेना पर मेर जीते जी तो बेचने का नाम भी न लेना गांव की मिल्कियत ।

आखिरकार बेटो बहुओं की जिद के आगे विजय बाबू और इंद्राणी को घुटने टेंकना पडा और गांव की मिल्कियत बिक गयी आनन फानन में ।

गांव की मिल्कियत बिकते ही विजय बाबू का शहर का मकान महल का रूप धर लिया जो रकम बची दोनों बेटो के खाते में चली गयी । विजय बाबू को पेंशन का आसरा तो था ही । इसी आसरे में विजय बाबू सोचे जिन्दगी के सान्ध्यकाल में सांस कब साथ छोड दे क्या भरोसा । बेटे बहुओ की खुशी में खुद खुश रहना चाह रहे थे । उन्हे क्या पता था कि उनके लायक बेटे अब नालायक हो गये है जो कुछ कर रहे है एक सब सोची समझी साजिश के तहत कर रहे हैं ।

समय फिर करवट बदला दोनो बेटे अलग अलग श्शहर में तैनात हो गये और अपने अपने बाल बच्चों के साथ जा बसे । इधर विजय बाबू भी उम्र का साठवां बरस पूरा कर सेवा मुक्त हो गये । महलनुमा मकान में विजयबाबू और इन्द्राणी अकेले रहे गये । कभी वे छोटे तो कभी बडे बेटे के साथ साल भर में कुछ दिन रहकर चले आते । दीपू और टीपू की गिध्द नजर फिर मां बाप के

मकान पर आ टिकी । मां बाप का खुद के प्रति अथाह प्रेम का फायदा उठाकर दोनो बेटे एक और चाल चले ।
अचानक एक दिन दीपू सपरिवारश्मां बाप के पास आ गया और घडियाली आंसूं बहाते हुए बोला मां यह दूरी अब बर्दाश्त नही होती है । मां बाप एक साथ बोले बेटा नौकरी घर में बैठकर तो नही की जा सकती जब तक हुई तब तक किये अब कम्पनी ने तुमको स्थान्तरित कर दिया हैं तो बेटा कम्पनी के अनुसार काम करना होगा । बेटा तुमको मालूम ही है नौकरी में ना का कोई रोल नही होता । नौकरी करनी है तो यह सब होगा । हमारी चिन्ता छोडो अपने बच्चों की परवरिश बेहत्तर तरीके से करो ताकि वे तुम्हारा नाम खानदान का रोशन करे जैसे तुम दोनो भाई कर रहे हो ऊंचे ऊंचे ओहदे पर बैठकर । जैसे आकर मिल जाया करते हो या हम बूढा बूढी आकर मिल आया करते हैं तुम लोगो से वैसे ही आते जाते रहेगे ।दीपू बोला नही मां अब तुम मेरे साथ रहोगी।
एक ही दिन दीपू के आये ही हुआ था कि दूसरे दिन टीपू भी आ धमका ।वह भी अपने साथ मां बाप को रखने की जिद करने लगा पर यह तो महज दिखावा था एक साजिश के तहत ।
दीपू और टीपू मां बाप पर मकान बेचने का जोर डालने लगे । विजय बाबू और इंद्राणी को भय सता रहा था वे मकान नही बेचना चाह रहे थे । यही तो मकान था जिसे बनाने के लिये बाप दादों की धरोहर को बेचा गया था । दोनो बूढा बूढी इस मकान को बेचकर जीते जी मरना नही चाहते थे पर बेटों की जिद के आगे वे बेबस हो गये । आनन फानन में यह भी मकान बिक गया।
दीपू मां बाप को टीपू के हवाले कर श्शहर चला गया फिर उलट कर ही नही देखा । कई महीनों के बाद टीपू दीपू के पास आया तहकीकात के तौर पर । यहां तो दीपू का इरादा ही बदल चुका था । टीपू दीपू से साफ साफ कह दिया कि अब वह मां बाप का बोझ नही ढो सकेगा ।
दीपू अपना रोना रोते हुए बोला भइया टीपू खर्चा बढ गया है । बच्चों की पढाई पर लाखों खर्च हो रहा है ,उपर से किराये का घर भी तो हैं ।मां बाप को अपने पास ही रखों ।
टीपू –भइया हमारे भी तो बाल बच्चे है। हमने कहां महल बना लिया हैं तुम्हारे पास तो चारश्शहर में चार चार मकान प्लाट भी तो हैं। तुम से बहुत कम मेरी कमाई हैं । भइया तुम्हारी कमाई तो मुझसे कई गुना अधिक हैं । गाडी बंगला सब कुछ तो है तुम्हारे पास कम्पनी का दिया हूं । हमारे पास क्या है सूखी तनख्वाह और क्या । भइया उपरी कमाई तुम्हारे पास है अधिक है । कम्पनी की आंखों में धूल झोंकर बढिया कमाई कर लेते हो ।
टीपू की बातों से दीपू तैश में आ गया वह मां बाप को बांटने पर तूल गया पर बूढे विजय बाबू और इंद्राणी को यह पसन्द ना था । वे किसी मंदिर की डयोढी पर बैठकर जीवन बिताना ज्यादा उचित मान रहे थे । मां बाप के फैसले पर दीपू और टीपू सहमत ना थे । वे दोनो अपने इस बंटवारे पर राजी हुए कि छः माह मां बाप को दीपू रखेगा और छः माह टीपू। दोनों बेटों के आपसी फैसले के अनुसार मां बाप का बंटवारा हो गया । दीपू छः माह के लिये टीपू के माथे मढ दिया । टीपू की घरवाली को बूढे सास ससुर फूटी आंख नही सुहा रहे थे ।बूढे मां बाप बहू के उत्पीडन से त्रस्त थे बेटा भी जले पर नमक छिडक देता था रह रह कर । बूढे विजय बाबू और इंद्राणी पश्चाप की चिता में जल–जल कर बेटा बहू का उत्पीडन झेलने को मजबूर थे । उन्हे कभी कभी डूब मरने की सूझने लगती थी पर पोते पोतियों का मोह इजाजत ना देता । बेटा बहू के लिये इनकी हालत कुत्ते बिल्लियों से अधिक ना थी । बूढे विजय बाबू और इंद्राणी को सकून की तलाश थी । वे सोच रहे थे शायद बडा बेटा और बहू उन्हे सम्मानजनक स्थिति में रखे । इसी बीच एक दिन टीपू दीपू के यहां पटक गया ।

विजय बाबू और इंद्राणी को तो ठीक ठाक लगा पर सप्ताह भी नही बिता की वे असहज महसूस करने लगे बडे बेटा बहूं के घर में भी ।उन्हे एहसास होने लगा था कि वे बडे बेटे बहूं के लिये भी बोझ के अलावा और कुछ नही हैं । बडी बहू मैडम मोहिनी फोन पर हर किसी से बात करते समय यह कहते ना थकती कि सास ससुर की वजह से घर से निकलना नही हो पाता हैं ।इंद्राणी घर का भी बहुत सारा काम खुद ही निपटा लेती यही हाल विजय बाबू का भी था पर वे मां बाप न होकर अब बोझ बन चुके थे अपने ही बेटे के लिये । उनकी अंतडियों में कुलबलाहट होती तो वे पेट को जोर से दबा लेते । अपने ही बेटे के घर में रोटी के लिये मोहताज हो गये थे ।वे अनजान लोगो से वृध्दाश्रम का रास्ता पूछने लगे थे कभी कभी राह चलते ।
एक दिन दीपू दफतर से रोनी सूरत बनाकर आया । इंद्राणी बेटे की परेशानी भापकर बोली बेटा बहुत परेशान हो क्या बात है ।शायद उन्हे लगा कि उनका बेटा किसी घोटाले में तो नही पकडा गया पर वह तो उसके घाघपना से पूरी तरह वाकिब थी । उन्हे यह मालूम था कि उनका बेटा अपना जुर्म दूसरे के माथे थोप सकता हैं उसके साथ तो ऐसा नही हुआ हैं । हां कोई ना कोई बात तो जरूर है । इंद्राणी बोली बताओ ना बेटा क्यो चिन्तित हो कोई नई परेशान आ खडी हुई है क्या ।
दीपू- मां मेरा ट्रान्स्फर हो गया ।
इंद्राणी-ट्रांस्फर ।
दीपू-हां मां ट्रांन्स्फर ।
तब तक दीपू की घरवाली मैडम मोहिनी आ गयी और बोली क्या कह रहे हो तुम्हारा ट्रान्स्फर हो गया । अरे तुम्हारी कम्पनी वाले तो एक जगह टिकने ही नही देते ।इधर उधर भेजते रहते हैं । सास ससुर आये थे कुछ दिन और चैन से रह लेते ।
दीपू- वह तो हैं । मम्मी पापा को तो परेशानी हो गयी ना । मैं भी तो यही सोच रहा था । न चाहकर भी मम्मी पापा को टीपू के पास छोडना पडेगा । मम्मी पापा को साथ रखना तभी सम्भव होगा जब ज्वाइन कर ले और अच्छा मकान मिल जाये । मकान ठीक ठाक मिलने पर ही मम्मी पापा को अपने पास रख सकेगे ।
मैडम मोहिनी-हां वह तो हैं । मम्मी पापा को ऐसी वैसी जगह थोडे ही रखेगे ।
विजय बाबू और इंद्राणी को कोई नई साजिश लग रही थी पर वे कर भी क्या सकते थे ।आनन फानन में दीपू मां बाप को टीपू के यहां छोडने का मन बना लिया । मैडम मोहिनी बहुत खुश थी क्योकि अब उनके राह के कांटे बूढे सास ससुर निकलते नजर आ रहे थे।
दीपू परिवार सहित बूढे मां बाप को टीपू के पास छोडने जाने के लिये तैयार था । कुछ ही देर में गाडी भी आ लगी । ड्राईवर दीपू साहेब को सलाम ठोंकते हुए बोला साहेब गाडी तैयार है । दीपू और उसका परिवार बूढे विजय बाबू और इंद्राणी के साथ गाडी में बैंठ गया । गाडी रेलवे स्टेशन पहुंची ।ड्राईवर बूढे विजय बाबू और इंद्राणी का पैर छूते हुए बोला मम्मी पापा आर्शीवाद दो ।मैं अपने मकसद में पूरा हाउूँ ।
बूढे विजय बाबू और इंद्राणी निश्छल भाव से मम्मी पापा का उदबोधन सुनकर बहुत खुश हुए और बोले बेटा भगवान तेरी मुरादें पूरी करें । मेरा आर्शीवाद तुम्हारे साथ हैं ।
बूढे विजय बाबू और इंद्राणी की बात सुनकर दीपू और उसकी घरवाली मैडम मोहिनी का मुंह उतर गया ।
ड्राइवर बोला मम्मी पापा अब कब आना होगा ।
इंद्राणी -बेटा अब इस श्शहर में कहां आना होगा ।
ड्राईवर- मम्मी जी इस शहर से इतनी नफरत क्यो ।

विजय बाबू -बेटा नफरत क्यो करेगें । हम तो कब्र में पैर लटकाये हुए लोग हैं । सब का भला चाहते हैं । हमे नफरत नही बेटा प्यार आता है ।
ड्राईवर- फिर आप ऐसा क्यो बोल रही है मम्मी जी कि अब इस श्शहर में कहां आना होगा ।
इंद्राणी- बेटा तेरे साहेब का ट्रांस्फर हो गया ना इस शहर से ।
ड्राईवर-क्या साहेब का ट्रान्स्फर ।कब हुआ यहां तो किसी को पता ही नही ।
विजय बाबू-एक और साजिश दीपू की मां ।
इंद्राणी- बार बार मना करती रही कि मत बेचो मकान । बाप दादा की धरोहर तो बेच ही दिये थे ।जीते जी मकान ना बेचो पर मेरी एक ना सुने । हम खानाबदोश हो गये । अपनी हाल तो कुत्ते बिल्लियों जैसी होकर रह गयी है । मौत भी निगोडी हम से ना जाने क्यों दूरी बनाये जा रही है । कब तक दर-ब-दर भटकते रहेगे अपनों की दी मुट्ठी भर आग के दर्द को लिये। इतने में गाडी को सिग्नल मिल गया और वह चल पडी छुक छुक करते हुए।

चुल्लू भर पानी

क्यों जी बिन मौसम की बरसात क्यो...... । अभी तो सूरज आग उगल रहा है। मौसम विज्ञानी बता रहे है कि मानसून जून के आखिरी सप्ताह में आ सकता हैं। ये अवारा बादल कहां से टूट पडे विशाल की मां ।
गीता- क्या कह रहे हो विशाल के पापा मेरी तो समझ में ही नही कुछ आ रहा हैं ।
अशोक-बहाना नही ।
गीता-कैसा बहाना जी ।
अशोक-तुम्हारी आंखों में आंसू क्यों ।
गीता-अच्छा ये आसूं। ये तो चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है ।
अशोक-ये कैसी चक्रवाती बरसात है जो बिना किसी बरसात और बिना बाढ के डूब मरने के लिये फुफकार रही है ।
गीता-थोडी देर पहले आ गयी थी चक्रवाती बरसात एक निराश्रित बूढी मां के साथ ।
अशोक-बूढी मां ।
गीता-हां बूढी मां के ही साथ आयी थी चक्रवाती बरसात जो लोभी औलादो की मंशा को तार तार करने के लिये काफी थी ।
अशोक-कौन सी बूढी मां की बात कर रही हो । कोई गम्भीर मामला हैं क्या ।
गीता- हां । आने वाला समय बूढे मां बाप के लिये तबाही लेकर आना वाला है ।
अशोक-क्या कह रही हो विशाल की मां ।
गीता-ठीक कह रही हूं ।एक अंधी बूढी लाचार मां शहर के चकाचौध भरे उजाले में पता ढूढ रही थी अपनी बटी का । बेचारी बूढी मां निष्कासित थी ।
अशोक-निष्कासित ।
गीता-हां निप्कासित । एक नालायक बेटा अपनी अंधी मां को घर से निकाल दिया था । वह बूढी मां अपनी डयोढी पर आ गिरी थी । उनकी दास्तान सुनकर ये बिन मौसम की बरसात हैं ।
अशोक-गुस्ताखी के लिये क्षमा करना देवी जी पर अब वो मां कहा है ।
गीता-बूढी मां को उसकी बेटी के घर छोड आयी ।
अशोक-बेटी के घर ।
गीता -हां बेटी के घर । बेटा घर से निकाल दिया हैं तो वह बूढी मां बेचारी जाती तो जाती कहां ।ना थाह ना पता । बस इतना कालोनी का नाम मालूम और ये भी कि तिकोने बगीचे के

सामने घर हैं । इसी आधार पर बूढी मां की बेटी के घर की तलाश करनी पडी हैं । काफी मश्कत के बाद घर मिल गया ।
अशोक–आज औलाद इतनी स्वार्थी हो गयी है कि अंधी मां को रहने के लिये जगह नही है उसके ही बनाये आशियाने में ।बेटा मां को घर से बेदखल करने पर उतर आया है ।
गीता–हां बेचारी बूढी मां दर दर भटक रही थी ना जाने कब से ।आज बेटी के घर पहुंच पायी हैं । यदि उस बूढी मां की मदद ना करते तो भटकती रहती ना जाने कहा कहां । थक हार कर किसी गाडी के नीचे आ जाती । मरने के बाद लावारिस हो जाती । बेटा को कफन पर भी खर्च ना करना पडता । मां को घर से बेदखल कर खुद मालिक बन बैठा हैं नालायक बेटा ।मां भूखी प्यासी धक्के खाने को मजबूर हो गयी हैं । बेटी ना होता तो वह बूंढी अंधी लाचार मां कहा जाती । बूढी मां की दशा देखकर मन रो उठा विशाल के पापा । भगवान ऐसी सजा किसी मां बाप को ना दें ।
अशोक–बूढी मां के साथ दादा ना थे क्या ।
गीता–नही । वे बेचारे मर गये हैं ।उनके मरते ही बेचारी पर मुसीबत का पहाड गिर पडा है ।
अशोक–दौलत के लिये मां पर बेटा जुल्म कर रहा है ।वाह रे बेटा । मां के आसूं का सुख भोग रहा है ।
गीता–हां जब तक पूरी दौलत पर कब्जा नही हुआ । बूढी मां को कुत्ते बिल्ली की भांति रूखी सूखी रोटी मिल जाती थी । चल अचल सम्पति पर पूरी तरह कब्जा होते ही बेटा बहू ने एकदम से दरवाजे बन्द कर लिये बेचारी लाचार मां सडक पर आ गयी ।
अशोक–बाप रे जिस घर को बनाने मेंऔर औलाद को पालने में जीवन के सारे सुखो की आहुति दे दी उसी घर से बेदखल कर दी गयी वह भी खुद के बेटे के हाथो ।
गीता–हां ऐसा ही हुआ हैं उस बूढी मां के साथ ।
अशोक–वाह रे ममता के दुश्मन ।आज मां बाप पुत्र मोह में पागल हो रहे हैं। बीटिया को जन्म से पहले मार दे रहे हैं । वही बेटे बूढे मां बाप को सडक पर ला फेक रहे हैं ।
गीता–हां ऐसा ही हुआ हैं उस बूढी मां के साथ । उसके पति सरकार नौकरी में थे गाडी बंगला सब कुछ था । अच्छी कमाई थी । बेचारे की अचानक मौत हो गयी । पति की मौत के बाद लोभी बेटा सब कुछ अपने नाम करवा का बूढी मां को सडक पर पटक दिया भीख मांगने को ।
अशोक– बाप रे अब बूढे मां बापो को अनाथ आश्रमों में आश्रय लेना पडेगा ।
गीता–क्यों ।
अशोक–कहां जायेगे ।
गीता–बेटिया है ना ।
अशोक–बेटियां ।
गीता–हां बेटिया बेटो से किसी मायने में कम नही है । बूढी मां की बेटी मां को देखकर बिलख बिलख कर रोने लगी थी जैसे भरत राम रोये थे कभी ।इसी धरती पर कभी श्रवण थे जो अपने बूढे मां को बहंगी में बिठाकर सारे तीर्थव्रत करवाये ।आज देखो बेटे रोटी देने को तैयार नही है । मां बाप को बोझ समझ रहे हैं जबकि सब कुछ मां बापों का ही बनाया हुआ है ।
अशोक–जितनी तरक्की हो रही हैं उतनी ही तेजी से स्वार्थपरता के भाव में बृध्दि हो रही है। अंधगति से आदमी का मानसिक पतन भी हो रही है ।
गीता–सच बहुत बुरा समय आ गया हैं । बूढी मां की दशा देखकर पत्थर भी पिघल जाये पर वो नालायक बेटा नही पिघला । मां को घर से बेदखल ही कर दिया ।कहते हुए गीता सिसकने लगी
अशोक–आसूं पोछों । डर लगने लगा है । कब्र में पैर लटकाये बूढे मां बाप वृध्दाश्रमों का पता पूछने लगे है। विशाल की मां ये समाज के लिये शुभ संकेत कतई नही है ।

गीता–आज की औलादो को कैसा संक्रमण लग गया है कि मां बाप बोझ लगने लगे है ।वृध्दाश्रमो की शरण मे जा रहे हैं औलादो के होते हुए भी । वाह रे स्वार्थी औलादें । भूल रहे हैं मां बाप के त्याग को ।
अशोक–मां बापों को भी अपने में बदलाव करना पडेगा और पुत्र मोह से उबरकर बेटी बेटा को बराबर का हक देना होगा ।पुत्र मोह के अंधविश्वास को तोडना होगा ।
गीता–बंश का क्या होगा ।
अशोक–बेटिया बेटो से कम नही हैं ।दोनो को बराबर का हक होना चाहिये । बेटी बेटा दोनो को मां बाप की परवरिश के लिये तैयार रहना होगा ।
गीता–बूढे मां बाप बेटी के घर जाकर रहेगे । इज्जत का क्या होगा ।
अशोक–बेटी के साथ रहने में इज्जत घटेगी नही बढेगी। बेटिया भी तो उसी मां बाप की सन्तान हैं ।पुत्र बंश चलाा हैं गुजरे जमाने की बात हो गयी । यही अंधविश्वास तो बूढे मां बाप की दुर्दशा का कारण है । जीवन की संझा में सुख की जगह मुट्ठी भर भर कर आग दुख परोस रहा है ।
गीता–आने वाला समय भयावह न हो । इससे पहले मां बापो को भी सतर्क हो जाना चाहिये खासकर युवा दम्पतियों को ।बच्चों को नैतिकता का बोध करायें । लोभी प्रवृति विरासत में ना दे । मां बापों के कृतित्व का प्रभाव बच्चों पर अवश्य ही पडता हैं । युवा दम्पति अपने मां बाप के साथ जो बर्ताव करते हैं। यकीनन उसका असर नन्हे बच्चो पर भी पडता हैं । आगे चलकर यही नन्हे बच्चे बडे होते हैं । अपने मां बाप द्वारा खुद के दादा दादी के साथ किये गये बर्ताव एवं बदसलूकियों को दोहराते हैं । युवा दम्पतियों को बचपन से ही बच्चों को अच्छी परवरिश के साथ अच्दे संस्कार भी देने होगे जिससे आने वाले समय में उनके साथ कुछ बुरा ना हो सके । मां बाप धन दौलत के पीछे भाग रहे हैं बच्चे झूलाघरो में पल रहे हैं अथवा नौकरों के हाथों । वे मां की ममता और बाप के प्यार से बंचित हो जाते हैं।ऐसे बच्चे मां बाप को क्या समझेगे ।मां बाप की धन के पीछे न भागकर बच्चो की अच्छी परवरिश पर ध्यान देना चाहिये । आगे चलकर ये बच्चे उग्र रूप धारण कर लेते हैं ।नतीजन मां बाप को दुर्दशा झेलना पडता हैं जिससे उनका सांध्यकाल दुखदायी हो जाता है ।रोटी के लिये तरसना पड जाता है ।
अशोक–ठीक कह रही हो । बूढे मां बाप घर से बेघर ना हो । नवदम्पतियों को गहराई से विचार करना होगा । धन की अंधी दौड से बचना होगा ।मां को अपने और बाप को अपने दायित्व पर न्याय करना होगा । तभी बूढे मां को घर से बेघर होने से बचाया जा सकेगा ।
गीता–वृध्दाश्रम की संख्या में बढती बृध्दि और बूढे मां बाप का सडक पर आना औलादों को चुल्लू भर पानी में डूब मरने वाली बात होगी ।मां बात तो धरती के भगवान हैं । मां बाप की सेवा से बडी कोई भी दौलत सुख नही दे सकती ।

फर्ज

जोर जोर से गेट पीटने की आवाज सुनकर मिसेज आरती बाहर आयी । गेट पीटने वाली से बोली भइया गेट तोड रहे हो या बुला रहे हो । आग बरसती गर्मी में क्या काम पड गया । कहां जाना हैं तुमको । क्यो इतना पी लेते हो । घर में बीबी बच्चों का फांके का ख्याल आता है । बाल बच्चे घर परिवार सब भूल गये दारू की मौज में । इतना भी पता नही है कि कहां जाना है । अरे नही पचती तो क्यों पी लेते हो। क्यों गेट पीट रहे हो आगे बढो । अपने घर में भी चैन से नही रह सकते ।कैसे कैसे लोग है जमाने में अपनी अय्याशी के लिये खुद के घरपरिवार को तबाही में तो झोंकते ही हैं दूसरों का चैन भी छिनते है ।जाओ भइया अपने घर जाओ । मुझे तुम्हारी कुछ नही सुननी है ।

तुम्हारे पडोस वाले सुनील फण्डुनीसा का बिजली का कनेक्शन करने आया हूं । मेरी बात तुमको सुनना पडेगा । मैं सक्सेना हूं नशे में धुत आदमी बोला ।
मिसेज आरती–सुनील का पांच साल पुराना मकान है ।बिजली का कनेक्शन उनके यहां हैं तो नया कनेक्शन क्यों करवायेगे ।
सक्सेना लडखडाती हुई जबान में बोला –करना है तो करना है बस ।
मिसेज आरती– सुनील फण्डुनीसा के घर जाओ ।
सक्सेना लडखडाती आवाज में बोला तुम्हारी छत पर जाना है ।
मिसेज आरती–हमारी छत पर क्यों ।
सक्सेना–बहुत सवाल करती हो । अरे कनेक्शन तुम्हारी छत पर जाकर ही तो करूंगा ।
मिसेज आरती–मेरी छत पर नही जाना है कहकर ज्योहिं घर में आई फिर सक्सेना गेट पीटने लगा है ।
मिसेज आरती बेटे रंजन से बोली बेटा देख अब कौन आया । तेरे पापा सो रहे है । टैंकर की इन्तजार में रात भर जागते रहे।रात को दो बजे तो टेंकर का पानी आया था । पैसा भी दिन रात टकटकी लगाये रहो ये टेंकर वाले भी पैसा लेने के बाद रूला देते है ।पानी की समस्या ने चैन छिन लिया है दूसरे ना जाने कहां कहां से बिन बुलाये आ जाते है । लोग ना जाने क्यो तनिक आराम करने लेटे तभी आ धमकते है । जा बेटा रंजन देख ले ना ।
रंजन–देखता हूं मम्मी कहकर बाहर गया । गेट पर बेसुध खडे आदमी से पूछा कौन हो अंकल पानी पीना है क्या ।
नहीं मुझे तुम्हारी छत पर जाना है । फण्डुनीसा का कनेक्शन करना हैं । फण्डुनीसा ने भेजा है ।
रंजन–अंकल फण्डुनीसा के घर के सामने ही तो बिजली का खम्भा है वहां से क्यो नही कर देते कनेक्शन । हम तो आपको पहचानते भी नही । कैसे आपको अपनी छत पर जाने दूं । फण्डुनीसा अंकल को आपके साथ आना था ।
सक्सेना– मैं चोर नही बिजली विभाग से आया हूं ।
रंजन– बिजली विभाग से आये हो तो अंकल के घर के सामने वाले पोल से कनेक्सन क्यों नही कर देते । हम लोगो को आग बरसती दोपहरी में क्यों परेशान कर रहे हो ।
सक्सेना– तुम्हारी पडोसी फण्डुनीसा कहता है । मेरे घर के सामने वाले पोल में बिजली कम आती है और यहां ज्यादा रहती है । इसीलिये फिर से कनेक्सन करवा रहा है । मुझे क्या करना हैं मुझे तो बस पैसा चाहिये चाहे जहां से करवाये ।
रंजन–ठीक है जाओ पर ज्यादा टाइम नही लगाना ।
सक्सेना– टेम तो लगेगा कहते हुए छत पर गया केबल छज्जे में अटकाया । छत से नीचे उतरा और खम्भे पर चढकर केबल खींचने लगा । केबल खीचने की वजह से पौधे की छोटी छोटी डाले और पत्तियां टूटने लगी । कुछ ही सेकेण्ड में बादाम की मोटी डाल टूटकर धडाम से गिरी । पौधों का नुकशान मिसेज आरती से बर्दाश्त नही हुआ । वे बोली क्यो भाई आप कनेक्शन कर रहे हैं या मेरे पौधे तोड रहे है । पीने को पानी नही मिल रहा है ऐसे हालात में भी मैं पौधों को सींच रही हूं । मेरे आंगन की हरियाली आप क्यो उजाड रहे हो भइया ।
सक्सेना–देख बकबक ना कर जरूरत पडी तो ये पेड पौधे कट भी जायेगे ।
मिसेज–आरती क्या कहा तुमने तेज आवाज में बोली।
सक्सेना– हां ठीक सुनी हो । ये पेड पौधे काटे भी जा सकते है ।

मिसेज आरती– वो भाई याद रख जो पौधे तोड रहे हो वे पौधे खैरात की जमीन में नही हमारी अपनी जमीन में लगे है।ये जमीन पसीने की कमाई से खरीदी गया है । ।इन पौधे का ख्याल मैं अपने परिवार सरीखे रखती हूं । तुम काटने की बात कर रहे रहे हो ।देखती हूं कैसे काटते हो ।
इतना सुनते ही सक्सेना तमतमाते हुए नीचे उतरा । अपशब्द बकते हुए चिल्ला चोट करने लगा । शोरगुल सुनकर मिस्टर लाल की नींद खुल गयी वे भी बाहर आ गये । उनको देखकर मिसेज आरती बोली देखो जी ये आदमी पौधे तोड रहा है,काटने की बात कर रहा है उपर से चिल्लाचोट भी कर रहा है ।
मिस्टर लाल क्यो जनाब क्यों आतंक मचा रहे है । कौन है आप। क्यों तुम्हारी नजर मेरे पौधे की हरियाली पर लग रही है । हमारा नुकशान कर रहे हो । भरी दोपहरी में चिल्लाचोट कर रहे हो कैसे आदमी हो ।इंसान होकर इंसानियत का धर्म भूल रहे हैं । अपने फर्ज का कत्ल कर रहे है । हमारे बगीचे को जानवर की तरह चर रहे हो कैसे आदमी हो भाई ।
सक्सेना– तुम्हारे पडोसी फण्डुनीसा का कनेक्सन कर रहा हूं तुम्हारा नुकशान नही कर रहा हूं ।
मिस्टर लाल– ये पौधे कैसे टूटे है । क्या यह नुकशान नही है ।
सक्सेना–तुमको आब्जेकसन है ।
मिस्टर लाल– तुम कनेक्शन करने के बहाने मेरा बगीचा उजाड रहे हो और उपर से पूछ रहे हो आब्जेक्शन है ।
सक्सेना–आब्जेक्सन है ये लो किससे बात करनी है कर लो मोबाइल दिखाते हुए बोला ।
मिस्टरलाल– होश में आओ । बताओ किसकी परमिशन से खम्भे पर चढे हो । तुम्हारे पास कोई कागज है तो दिखाओ ।
सक्सेना– तुम कौन होते हो पूछने वाले। वह फिर मोर्बाइल दिखाते हुए फिर बोला ये लो कर लो न बात । देखता हूं किससे बात करते हो । देखता हूं मुझे कौन रोकता है मुझे कनेक्शन करने से। मैं एक फोन करूंगा तो सीधे अन्दर जाओगे ।
मिस्टरलाल–नशे में हाथी भी चींटी दिखायी पडती है ।फण्डुनीसा का कनेक्सन कर रहा है अनएथोराइज ढंग से और मुझे धमका रहा है । इतनी बडी दादागीरी । चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत तुम चरितार्थ कर रहे हो सक्सेना ।
सक्सेना–तुम फण्डुनीसा को नही जानते क्या ।
मिस्टरलाल– अरे भाई ऐसे मुर्दा सरीखे लोगों को जानने से बेहतर ना ही जानो । ये मतलबी लोग है जब जरूरत पडती हैं तब पहचानते है । बिना जरूरत के तो मातम वाले घर की तरफ नही देखते । अब तुम अपनी बकबक बन्द करो । याद रखो मेरे पौधों को नुकशान नही पहुंचाना ।
सक्सेना लालपीला हो रहा था मिस्टरलाल उसे समझााने का प्रयत्न कर रहे थे इसी बीच सुनील फण्डुनीसा आ गया ।वह सक्सेना को एक तरफ करते हुए बोला तू अपना काम कर देखता हूं कैसे रोकता है ।
मिस्टरलाल– भई फण्डुनीसा शराफत भी कोई चीज होती है ।एक पडोसी का दूसरे के प्रति कुछ दायित्व होता है । पडोसी होने के आदमी का फर्ज और अधिक बढ जाता है । आप इतने बडे आदमी है कि एक दरोडियों को भरी दोपहरी में मेरे घर भेज दिये । क्या यही अच्छे पडोसी का फर्ज बनता है ।
फण्डुनीसा –अच्छा तो तू मुझे शराफत सीखायेगा। फर्ज पर चलना सीखायेगा । मुक्का तानते हुए बोला चल हट नही तो अभी दो दूंगा तो सारी अकड निकल जायेगी ।चला है एथोराइज अनएथोराइज की बात करने ।

मिस्टरलाल–अरे अपनी औकात में रह फण्डुनीसा । अपने बालबच्चो को पाल ,पढा लिखा गुण्डई शराफत का गहना नही है । बीयर बार में गिलास धोकर तो परिवार चला रहा है । मालूम है जब शरीफ आदमी बदमाशी पर आता है तो तुम्हारे जैसे गुण्डे नेस्तानाबूत हो जाते है ।
फण्डुनीसा –हां मैं तो गुण्डा हूं नेस्तानाबूत करके देख लेना।
मिसेज आरती– पडोसी भगवान की तरह होते हैं । यहां तो पडोस में शैतान बसते है । एक तरफ व्यभिचारी तो दूसरी तरफ गुण्डा कैसे शरीफ लोग रह पायेगे ।गुण्डे किस्म के लोग अभी तक तो झुग्गी झोपडी का सहारा लेते थे । अब शरीफों की बस्ती में घुसपैठ करने लगे है ।
फण्डुनीसा –तुम लोग कितना भी चिल्लाचोट कर लोग मेरा कनेक्शन तो तुम्हारे घर के सामने के पोल से ही होगा ।
मिस्टर लाल– फण्डुनीसा गुण्डाजी अवैध कनेक्शन करवाओगे । मेरे पेड पौधों को काटोगे या मेरा कनेक्शन काटोगे । मेरे दरवाजे पर मुझे मारने आ रहे हो । नतीजा मालूम है क्या होगा। इतना बडा गुण्डा पडोस में बसता है थोडी खबर तो थी पर आज पूरी जानकारी भी मिल गयी ।
फण्डुनीसा –अब तो पता चल गया । मेरे रास्ते में जो आयेगा सबको देख लूंगा । इतनी में फण्डुनीसा की घरवाली हाथ में सरिया लेकर गाली देते हुए मिस्टर लाल के दरवाजे तक चढ आयी ।
फण्डुनीसा और उसकी घरवाली की करतूते देखकर सामने वाले लाला के परिवार के लोग ताली बजाबजाकर खुश हो रहे थे। यह उसी लालाजी का परिवार था जिनकी मौत से लेकर दूसरे क्रियाकर्मो तक फडनीस कभी नही दिखा था और ना ही आसपास के और लोग । मिस्टर लाल ना रात देखे ना दिन सब कामों में खडे रहे और उनकी धर्मपत्नी तो उनसे आगे थी चाय नाश्ता खाना पानी तक का इन्तजाम की थी । आज वही लाला का परिवार मिस्टर लाल के साथ पडोस वाले गुण्डे फण्डुनीसा की करतूत पर खुश हो रहा था । उसकी ताकत बन रहा था ।
मिस्टर लाल फण्डुनीसा के दुर्व्यहार से दुखी तो थे ही लाला के परिवार के आग में घी डालने की करतूत से खिन्न भी । फण्डुनीसा और उसकी घरवाली अनाप शनाप बके जा रहे थे । मिस्टर लाल के बच्चे उन्हे घर में ले गये । काफी देर तक गुण्डे की ललकार हवा में गूंजती रही । शोरगुल सुनकर पीछे वाली गली से मिसेज मनवती और कई सभ्य लोग मिस्टर लाल के घर आ गये ।
मिसेज मनवती – मिसेज आरती से बोली क्या भाभी आप लोग पागल कुतो को पुचकारते हो । हर आदमी के दुख सुख में कूद पडते हो ।देखो आजकल के लोग नेकी के बदले क्या देते हैं । फण्डुनीसा के भी तो आप लोग बहुत काम आये हो । जब इसका बन रहा था तब भी मदद करते थे । उसके गृहप्रवेश के दिन तो रात भर पानी भरवाते रहे अपनी बोरिंग चला कर । इस दगाबाज दोगले फण्डुनीसा के घर में जब चोरी हुई थी तो कोई आगे पीछे नही था आपके घर को छोडकर । ये लाला का परिवार तो दरवाजा ही नही खोला था । पडोस वाला व्यभिचारी जो आज कूदकूद कर कनेक्शन करवाया हैं । यह भी तो नही दिखा था । जिनके संग दाल बांटी की पार्टी जमाता था वे लोग तो इस अमानुष के मुंह पर मुसीबत में भी मूतने नही आये । थाने से लेकर घर तक का काम आप लोगो ने ही देखा था । इसके बाद भी फण्डुनीसा की घरवाली ने पडोसियों पर ही इल्जाम लगाया थी । भला हो पुलिस वालों का उसके मुंह पर थूक दिये यह कह कर कि अब तुमको कैसे पडोसी चाहिये । पडोसी में नही तुममें दोष है । शरीफ सरीखे पडोसियों पर इल्जाम लगा रहे हो । तब फण्डुनीसा और उसकी घरवाली का मुंह देखने लायक हो गया था ।
मिसेज आरती–भाभीजी इंसान के काम तो इंसान ही आत हैं ना । हम लोगो से किसी का दुख दर्द बर्दाश्त नही होता । कहते है ना दर्द का रिशता सभी रिशतें से बडझ होाता है । जहां तक सम्भव

होता हैं हम किसी की मदद करने से नही चूकते ।आदमी हमारी नेकी को भले भूला दे पर भगवान तो नही भूलायेगा ।
मिसेज मनवती– भाभी ऐसी भी नेकी किस काम की । जिसके साथ नेकी करो वह खून का प्यासा बन जाये । ऐसे लोग तडपते रहे तो भी ऐसी हालत में उनके मुंह पर पेशाब नही करना चाहिये । बेशरमों में जरा भी मर्यादा शेष नही बची है । अगर ऐसे ही होता रहा तो कोई किसी के दुख सुख में काम कैसे आयेगा ।ऐसे ही पडोसियों की वजह से शहर बदनाम हो रहा है ।पडोस में कोई मर जाता है पडोस को खबर न लगने का कारण ऐसे पडोसी है । फण्डुनीसा जैसे मतलबी पडोसी, पडोसी के फर्ज पर कहां खरे उतर सकते है ।
मिस्टर लाल–भाभीजी हम लोगो से किसी का बुरा नही देखा जाता । कैसे मुंह मोड ले अपने फर्ज से ।
मिसेज मनवती –आपकी की गई भलाई का क्या सिला दिया फण्डुनीसा और ये लाला का परिवार । उस पडोसी विमल भण्डार वाले को देखो कितना बढिया आपकी ओर से सम्बन्ध था पर सडी सी ब्रेड को लेकर उसने पडोसी के पाक रिश्ते को नापाक कर दिया । ब्रेड तो रख ही लिया पैसा भी नही दिया । बुरा भला कहा उपर से और भी ऐसे बहुत लोग है। नालायक गुण्डे खुद को खुदा समझने लगे है । ठीक हम लोगो लोगो के पास दो नम्बर की कमाई नही है तो क्या पास मार्यादा तो है ।मान सम्मान हैं शरीफ लोगो के बीच बैठक है । भाई साहब ऐसे लोगो के लिये खडा होने से बेहतर तो ये है कि अपने कानो में रूई डाल लो । मरने दो सालों को । जब तक ये लोग हवा से जमीन पर नही गिरेगे तब तक ऐसे ही शरीफों की शराफत का मजाक उडाते रहेगे । आप तो अपने परिवार के साथ छुट्‌टी मना रहे थे रंग में भंग डाल दिया फण्डुनीसा गुण्डे ने । अमानुष मारने की धौंस दे गया ।
मिसेज आरती–भाभीजी फण्डुनीसा ने अपनी जबान खराब की है ।शरीफ लोग शराफत छोड देगे तो दुनिया का क्या होगा । आदमी से आदमी का नही भगवान से विश्वास उठने लगेगा । जैसी करनी वैसी भरनी । आज तो हम चुप रह गये कल कोई बडा वाला मिल जायेगा । हड्‌डिया चटका देगा । भगवान के उपर छोड दो ।बुरे काम का नतीजा कहां अच्छा आता है भाभीजी लीजिये पानी पीजिये । सभी आगन्तुक अपनी अपनी तरह से समझा रहे थे । ढाढस दे रहे थे । उधर फण्डुनीसा छाती फुलाकर अवैध तरीके से कनेक्शन करवा रहा था । फण्डुनीसा की घरवाली और लाला के घर की औरते मिस्टर लाल के घर की तरफ ताक ताककर ठुसुर भुसुर कर रही थी । कुछ देर में मिस्टर लाल के घर आये कालोनी के पीछे वाली गली के लोग अपने अपने घर चले गये । अवैध तरीके से कनेक्शन हो गया । दोपहर ढल चुकी थी । नवतपा का आठवा दिन था आग बरसा रहा था । इसी बीच आकाश में अंवारा बादल उमडने लगे थे । देखते देखते ही आंधी ने जोर पकड लिया ।आंधी के जोर ने सक्सेना के नशे को कम कर दिया । उसके मन मे विराजित इंसानियत जाग उठी । वह एक बार फिर मिस्टर लाल के मेनगेट पर दस्तक दिया । उसे देखकर मिस्टर लाल बोले अब क्या लेने आये हो भाई ।
सक्सेना–साहब माफी मांगने आया हूं ।
मिस्टरलाल– मैं कौन होता हूं माफी देने वाला ।जाओ भगवान से माफी मांगो । सच्चे और शरीफ इंसान को दुख देकर कोई भी सुखी नही रह सकता चाहे तुम रहो या तुम्हारा फण्डुनीसा ।
मिसेज आरती– भइया सक्सेना आप तो कनेक्शन करने आये थे परन्तु आपने हमारी ही नही अपनी भी मर्यादा का खून किया है । आदमियत का खून किया है । अपने फर्ज को रौंदा है ।आप कनेक्शन करने नही फण्डुनीसा की तरफ से मारपीट करने आये थे ।

सक्सेना–मैडमजी शर्मिन्दा हूं नशे में था ।जानता हूं पडोसी सगे से भी बडा होता है परन्तु फण्डुनीसा तो पडोस में रहने फण्डुनीसा शराफत का चोला ओढे बदमाश है । मेरा नशा अब उतर गया है । फण्डुनीसा ने दारू पिलाया था । मुझे बडी गलती हो गयी अनजाने में क्षमा करना । भगवान फण्डुनीसा की तरह के पडोसी मेरे दुश्मन को भी न दे ।
मिस्टर लाल–सक्सेना कोई निभाये चाहे न निभाये मैं तो अपना फर्ज निभाऊंगा ।
मिसेज आरती– हां सक्सेना भइया ये ठीक कह रहे है ।शरीफ इंसान शराफत को कैसे छोड देगा
सक्सेना–मैडमजी आप जैसे पडोसी तो किसी देवता से कम नही पर ये गुण्डे व्यभिचारी क्या जाने पडोसी के धर्म को ये तो चील गिध्द कौवों की तरह अपना मतलब साधते है ।
मिस्टरलाल–सक्सेना तुम जाओ । मुझे अपना फर्ज याद रहेगा ।
सक्सेना–भाई साहब पडोस वाले फण्डुनीसा और ऐसे लोगो से सावधान रहना. ऐसे लोग पडोस में रहकर पडोसी के जीवन में मुट्ठी भर भर आग बोते है..... मैं नहीं भूलूंगा अच्छे पड़ोसी का फर्ज कसम से.........

दहेज की आग

औरत जात को ले डूबेगी ये दहेज की आग । कब बुझेगी ये दहेज की आग । खुदा खैर रखे अब ना जले और कोई लडकी दहेज की आग.......... मिसेज शोभा बडबडाते हुए बरामदे में धडाम से गिर पडी । मां को गिरता हुआ देखकर अवध दौडकर उठाकर बैठाया फिर एक गिलास पानी लाया । मां को पिलाते हुए बोला क्या हुआ मां तबियत तो ठीक है ।
मिसेज शोभा –हां बेटा मेरी तबियत तो ठीक है पर एक लडकी और जला दी गयी दहेज की आग में । कब तक ऐसे ही लडकिया जलाती जाती रहेगी । कब तक मां बाप दहेज दानवों की मांग अपना घर द्वार बेंचकर पूरी करते रहेगें ।
अवध मां का सिर सहलाते हुए बोला–दहेज लोभियों का नाश होगा एक दिन । पापी काल कोठरी में तडप तडप मौत की भीख मांगेगे ।बहू को दहेज के लिये जला देते है । पराई बेटियों को अपनी बेटी क्यो नही सोचते । दहेज की आग बुझे बिना औरत जात सुरक्षित नही रह पायेगी । दहेज लेना और देना दोनो अपराध है । यह जानते हुए भी लोभियों के हौशले पस्त नही हो रहे है ।
मिसेज शोभा– दहेज की आग सुनीता को ले डूबी । बेचारी की दर्दनाक मौत की खबर सुनकर चक्कर आ गया । कितनी धूमधाम से बीटिया का ब्याह किया था सतीश बाबू ने । कोई कोर कसर नही छोडे थे।गृहस्ती की एक एक चीज दिये थे । मां बाप की एक ही बेटी थी वह भी जलाकर मार दी गयी ।बेचारे राजू की कलाई पर अब तो राखी भी नही बंध पायेगी । जीवन भर की कमाई बीटिया के ब्याह पर खर्च कर दिये । इसके बाद भी लोभियो ने उच्च शिक्षित सर्वगुण सम्पन्न सुनीता को आग में झोंक दिया । बेचारी को जिन्दा जलते हुए कितना रोयी चिल्लायी होगी ।सोचकर मन रो उठता है पर उन अमानुषों को तनिक भी रहम नही आयी। पेट्रोल छिडकर जला डाला । ना जाने कब तक लडकियों को जलाती रहेगी ये दहेज की आग ।
अवध– सतीश काका ने सचमुच सुनीता का ब्याह बहुत धूमधम से किया था ।खूब दान दहेज भी दिये थे । भारी भरकम दहेज की राशि और सामान लेने के बाद भी सुनीता के ससुराले वाले अमानुषों की चाहत पूरी नही हुई । बेचारी को देहज की आग में जला दिया ।
मिसेज शोभा –औरत जात पर तो अन्याय बढता ही जा रहा है ।सगे सम्बन्धी जुल्म ढाह रहे है । बेचारा बाप अपनी इज्जत देता है।धन दौलत देता है । इसके बाद भी बेटी का जीवन लील रहे हैं दहेज के प्यासे अमानुष ।

अवध–मां दहेज दानव सभ्य समाज के माथे का कलंक है । इसके बाद भी खूब फलफूल रहा है ।कुछ लोग तो अधिक दहेज देकर गर्व महसूस करते है । यही गर्व उनकी बेटियों को डंस जाता है ।बेटी जीवन भर दहेज की आग में सिसक सिसक कर बसर करती है या सुनीता की तरह कमरे में बन्द कर घासलेट या पेट्रोल डालकर जला दी जाती हैं । लापरवाही का इल्जाम भी अबला मृतका के उपर ही मढ दिया जाता है ।

मिसेज शोभा गश खाकर गिर पडी यह खबर पडोस में रहने वाली मैडम के कानों को खुचलायी । वे दौडकर आई और पसीने से तरबत्तर मिसेज शोभा से पूछने लगी क्या हो गया दीदी कैसे गिर पडी ।

मिसेज शोभा– सुनीता को उसके सुसराल वालों ने जलाकर मार डाला । यह खबर बेचैन कर दी। बडी मुश्किल से तो घर तक पहुंची , बरामदें में गश खाकर गिर पडी ।

किरन मैडम– बाप रे एक और लडकी दहेज की बलि चढ गयी ।

मिसेज शोभा–हां किरन ।पहली बार सुनीता अपनी ससुराल से आयी थी तो बहुत खुश थी । पति के तारीफों का पुल बांध बांध कर नही थक रही थी ।हां ससुर सास के नाम पर मौन हो जाती थी । बेचारी सुनीता की दादी बयान कर कर रो रही । मुझे भी रोना आ गया था ।बेचारी को दूसरी बार गये सप्ताह भी नही हुआ कि जलकर मरने की खबर उडते उडते आ गयी ।

किरन मैडम– घर से लेकर संसद तक नारी सशक्तीकरण की चर्चा आजकल जोरो पर है । पंचायती चुनावों में महिलाओं के लिये स्थान आरक्षित है । विधान सभा और लोकसभा में महिलाओं के लिये स्थान आरक्षण की बात चल रही है । सम्भवतः यह लागू भी हो जाये । अच्छी बात हैं नारी को उचित सम्मान मिलना भी चाहिये । नारी का सशक्तीकरण भी हुआ है । नारी संरक्षण हेतु महिला आयेग काम कर रहा है । बडे बडे पदो पर महिलाये विराजमान है । संविधान भी महिलाओं को समानता का अधिकार देता है ।इतना सब कानून कायदा होने के बाद भी भ्रूण हत्या और दहेज दानव के शिकंजे के आगे सभी बौने नजर आ रहे है। सुनीता की मौत तो इस बात की ज्वलन्त गवाह है । खुद जलकर मर गयी ऐसा सुनीता के ससुराल वालों का कहना है पर इसमें जरा भी सच्चई नही हैं अपराध छिपाने का प्रयास है । कानून से बचने का ढोंग है। ऐसा तो हो ही नही सकता ।यह तो फांसी के फंदे से बचने का झूठा प्रलाप है ।

मिसेज शोभा–हां किरन इल्जाम तो ऐसा ही लग रहा है पर वह जला कर मारी गयी है ।

किरनमैडम–कोई नवविवाहिता क्यों जलकर मरेगी ।अच्छे घर और अच्छे पति के लिये लडकियां व्रत करती है । बेचारी क्यों आग में कूद कर मरेगी । लडकियां जलती नही दहेज की आग में जलायी जाती है । ना जाने कब बुझेगी ये दहेज की आग ।

मिसेज शोभा–सुनने में आ रहा है कि सुनीता की सास कह रही थी कि स्टोव भभकने से आग लगी । सुनीता किसी को कुछ बतायी नही कमरे में जाकर खुद बुझाने लगी थी ।आग बुझने की बजाय प्रचण्ड रूप धर ली । उसके साथ कमरे का सामान भी स्वाहा हो गया ।

किरन मैडम– इतनी नासमझ तो नही होगी । अच्छी पढी लिखी और समझदार लडकी थी ।

मिसेजशोभा–अरे कमरे में बन्द कर जला दिया गया है । वह क्यों आग में जलकर मरेगी । मरना ही था तो ससुराल जाकर क्यों मरती । मायके में मरने के लिये जगह कम थी । बाप का लाखों खर्च करवाकर मरने की कसम तो नही खायी थी ।बाप से उसकी दुश्मनी तो थी नही । मां बाप को भाई को जान से ज्यादा चाहती थी वैसे ही ये लोग भी चाहते थे ।लडकियों की असमय मौत अशुभ संकेत है किरन ।ऐसा ही रहा तो दहेज लोभी अपने बेटो का ब्याह कैसे करेगे ।

किरनमैडम–दीदी गैस रहने के बाद भी स्टोव पर खाना क्यों बना रही थी सोचने वाली बात है ।

मिसेजशोभा– हां किरन सच कह रही हो । जलने की खबर भी तो नही दी हैवानों ने ।उडते उडते सुनीता के मरने की खबर सतीशबाबू के कानों तक पहुंची थी । वहां पहुंचे तो सही खबर निकली । भला हो अनजान पडोसी का जिसने पुलिस को खबर कर दी थी ।दाह संस्कार होने से कुछ मिनट पहले सतीशबाबू पहुंचे उनके पीछे पुलिस भी पहुंच गयी ।लाश को पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया था। बेचारे सतीशबाबू पागलों की तरह घूमते रहे अकेले । बेचारे कहीं से फोन किये तब जाकर पता चला उनके घर । इसके के बाद कालोनी के कुछ लोग गये तब जाकर बेचारे सतीश बाबू की जान में जान आयी।

किरन मैडम– लडकियों के साथ तो बहुत बुरा हो रहा है । अपने इंदौर में पिछ्ले साल बेचारी भूमिका को उसकी सास ने टुकडे टुकडे करके कूडेदान में डाल दिया था ।आज का आदमी कितना हिंसक हो गया है ।दहेज के लिये लडकियों को सब्जी भांजी की तरह काटी जा रही है ।सूखी बेकार घासफूस की तरह जलायी जा रही है। कब तक लडकियां को आग के हवाले दहेज लोभी करते रहेगे ।

अवध–राक्षस कैसे जला देते है । अपने बेटे बेटियो को जलाकर क्यो नही देखते ।

सानू–किसको कौन जला दिया ।

मिसेजशोभा–बेटी तू जा कुछ खा पी ले । थकी मांदी होगी । कालेज से आ रही है ना ।

सानू– मां तुम सुनीता की मौत की खबर मुझसे छिपा रही हो न । ठीक है मैं नही पूछ्ती हूं पर मुझे पता चल गया है अखबार से सब कुछ । खैर मां मैं आ तो कालेज से ही रहूं पर अब जा रही हूं सहेली के बर्थडे में। कुछ ही दिनों में उसका भी ब्याह होने वाला है । उसके साथ भी ऐसा हो गया तो ।

किरन मैडम–बेटी ऐसा हादशा दुश्मन की बेटी के साथ न हो । सभी लडकियां दहेज की आग से दूर रहे ।

सानू– आण्टी ब्याह के बाद तो लडकी एकदम से परायी हो जाती है ना ।बेबस हो जाती है सास ससुर ननद और पति के कुटुम्ब का अत्याचार सहने को । यही तो सुनीता के साथ भी हुआ और ना जाने किस किस के साथ होगा । किसी भी लडकी के साथ हो सकता है मेरे साथ भी.............

मिसेजशोभा का कलेजा मुंह को आ गया । वे तडप उठी । उनके मुंह से निकल पडा भगवान रक्षा करना मेरी बीटिया का। वह बोली किरन अब तो मेरा डर बढता जा रहा है बीटिया सयानी हो गयी है । दहेज दानव का घिनौना रूप दिन पर दिन डरावना होता जा रहा है। बेटिया की असमय मौत का कारण दहेज ही बन रहा है ।

किरनमैडम–हां दीदी रोज रोज जो कुछ हो रहा है उससे डर तो बढ ही रहा है ।बेटियों के भ्रूण की हत्या हो रही है । कुछ बच भी जाती है तो ससुराल में जला दी जा रही है । कुछ ही सौभाग्यशाली है जो निश्चिन्त जीवन बसर कर पा रही है । अगर ऐसा ही लडकियों के साथ अत्याचार होता रहा तो औरत जात बचेगी नही ।

मिसेजशोभा–देखो औरत जात ही औरत की दुश्मन बन गयी है । सुनीता का पति तो सरकारी दौर पर था ।वह तो सुनीता को बहुत चाहता था । घर में सास ननद और ससुर थे । ससुर भी मारना नही चाह रहा था पर घरवाली के दबाव में वह भी आ गया । वह तो सुनीता को सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी समझ रहा था । उसकी सास तो एक दिन में ही सारे सोना निकलवा लेना चाह रही थी । सुनीता जब पहली बार ससुराल से मायके को रवाना हुई थी तब बारी बारी से उसकी सास और ननद ने उसके कान में कहा था कि पांच तोला सोना और कार खरीदने के लिये रूपया लेकर आना वरना ....

किरनमैडम–वरना का मतलब तो सुनीता की मौत से ही था । बेचारी बेकसूर दहेज ही आग में जला दी गयी।
मिसेजशोभा– सुनीता की मौत ने तो खून के आंसू दे ही दिया सानू की बाते आत्मा को झकझोर दिया ।
किरन मैडम–हां दीदी हर बेटी का मां बाप खौफनाक स्थिति से गुजर रहा है । बीटिया को अच्छा घर वर मिल जाये तो समझो गंगा नहा लिये ।
मिसेज शोभा – नववधुओं के रोज रोज की जलाने की खबर ने तो लडकियों को अन्दर से तोड दिया है । सुना नही सानू क्या कह कर गयी है । मुझे तो बहुत डर लग रहा है बीटिया के ब्याह को लेकर ।
किरन मैडम–सानू के ब्याह में तो वक्त है मेरी रानू तो ब्याह करने लायक हो गयी है । लडके वाले तो ऐसे दाम लगा रहे है जैसे बकर कसाई । दूल्हे की बाजार तो बहुत गरम हो गयी है । बेटी के लिये घरद्वार बेंचकर दूल्हा खरीद भी ले ,इसके बाद भी तो बीटिया के सलामती की कोई गारण्टी नही है । बेटी के मां बाप है तो दूल्हा तो ढूढना ही पडेगा पर दीदी दहेज मांगने वाले के घर अपनी बेटी नही दूंगी भले ही दूसरी जाति के गरीब लडके का रानू का हाथ दे दूंगी पर अपनी जाति के दहेज लोभी के घर ब्याह न करने की कसम खाती हूं । दीदी अब जा रही हूं रानू कालेज से आ गयी होगी कहकर किरन मैडम घर चली गयी ।
मिसेज शोभा बैठे बैठे सानू बीटिया के ब्याह और ब्याह के बाद की चिन्ता में इतनी दुखी हो गयी कि उनकी आंखे सावन भादो हो गयी । अंधेरा पसरते पसरते सानू भी आ गयी । मां को ऐसी हालत में देखकर वह परेशान हो गया । गाडी खडी की और भागकर मां के पास गयी । सानू मां के आंसू पोछते हुए बोली मां क्या हो गया क्यों ऐसी हालत में बैठी हो ।
मिसेज शोभा–बेटी मुझे क्या होगा । मैं ठीक तो हूं ।
सानू– मां आंखों से बहता तर तर आसूं झूठा तो नही हो सकता ।
मिसेजशोभा– नही बेटी मैं रो नही नही रही आंख में कुछ चला गया है मिर्च जैसा ।यही बैठे बैठे तुम्हारी और अवध बेटवा की राह देख रही थी ।वह भी अभी तक टयूशन से नही आया ।
सानू– अवध भी आजायेगा । आंसू झूठ बोलकर क्यो छिपा रही हो मां । आसूं छुपाने से नही छुपते । मेरे ब्याह और ब्याह के बाद की फिक्र हो रही है ।
मिसेज शोभा– बेटी सब छोड । ये तो बता इतनी देर कैसे हो गयी ।
सानू– सतीश अंकल के घर जमा भीड को देखकर मै भी चली गयी ।अंकल आण्टी को तो होश ही नही है । राजू का भी रो रोकर बुरा हाल हो गया है । अंकल के घर में मौजूद सभी लोगो के आंखो से आंसू बह रहा था ।मां एक बात अच्छी हुई है।
मिसेजशोभा – वह क्या बेटी ?
सानू–पापियों को सजा मिल गयी ।
मिसेजशोभा–इतना जल्दी । अभी तो सप्ताह भर भी नही हुए । केस का फैसला तो कई सालो में होते है ।
सानू–हां मां यही तो सकून देने वाली बात है । पुलिस और न्यायालय ने ऐतिहासिक काम किया है । इससे लोगो में पुलिस और न्यायालय के प्रति भरोसा और बढेगा ।
मिसेज शोभा– पापियों को फांसी तो हुई नही होगी ।
सानू– मां हुई है ना सुनीता की सास को।

मिसेजशोभा– सुनीता का पति तो बेचारा निर्दोष था गृहस्ती बसने से पहले ही उसके मां बाप और बहन ने तोड दिया वह तो किसी सजा का हकदार नही था पर उसकी ननद और ससुर का क्या हुआ ६

सानू–आजन्म कारावास ।

मिसेज–फैसला तो अच्छा हुआ काश इस फैसले से दहेज लोभी सबक पाते । बहू पर अत्याचार करने से पहले हजार बार सोचते ।

सानू– जरूर सोचेगे ।सबसे पहले तो नारी को आग में झोकने वाली नारी को सोचना होगा । नारी ही नारी की दुश्मन साबित हो रही है । तभी नारी संरक्षण के सारे कानून कायदे ताख पर रखे रह जाते है ।

मिसेजशोभा–आजकल की शिक्षित लडकियों को आगे आना होगा । दहेज दानव के बढते खूनी पंजे को रोकने के लिये और लडकियों की दिन प्रतिदिन घटती जनसंख्या के प्रति औरतो को जागरूक करना होगा । समाज और शासन के सहयोग के साथ दहेज लोभियों को कठघरे में लाने का जिम्मा भी उठाना होगा । लडकियों को संगठन बनाकर दहेज के खिलाफ लडना होगा । संगठन से हर अविवाहित और विवाहित लडकी को जुडना होगा तभी औरत जात सुरक्षित रह पायेगी ।

सानू– हां मां अब देर नही ऐसे भी संगठन बनेगे और दहेज लोभियों की नाक में नकेल कसेगे । काश मैं देश की प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति होती तो दहेज दानव का रास्ता हमेशा के लिये बन्द कर देती ।

मिसेजशोभा–अच्छा बता क्या करती ।

सानू–मैं विवाह विभाग बनाती और सभी लडके लडकियों का रजिस्ट्रेशन करवाती । ब्याह की उम्र और पांव पर खडा होने पर जातिवाद के मन–भेद से उपर उठकर सहधर्मी और योग्य लडके लडकियों का ब्याह करवाती । बेटे बेटियों के पढाई लिखाई से लेकर ब्याह तक पूरी जिम्मेदारी सरकार के उपर डाल देती । सहधर्मी विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान करवाती । सामाजिक और धार्मिक मान्यता दिलाने हेतु धार्मिक गुरूओं को भी राजी कर लेती ।

मिसेजशोभा–काश ऐसा हो जाता, तब ना कोई दहेज मांगता और ना कोई लडकी दहेज की आग में जलती , और ना ही कोई मां बाप रोते हुए कहता कि–कब बुझेगी ये दहेज की आग ।

कसम

क्यों भाई धर्मानन्द तुम तो बूढे लगने लगे हो । चालीस साल की उम्र में साठ साल के दिख रहे हो । क्या बात है भाभी से तकरार तो नही करता रहता कहते हुए सुदर्शन बाबू ठहाका लगा बैठे ।

धर्मानन्द–यार तू पांच साल के बाद मिल रहा है आते ही जासूसी पर उतर आया ।

सुदर्शन बाबू–सच बताऊं पहली नजर में तो तुमको पहचान ही नहीं पाया था । आधा सिर गंजा हो गया है । बाकी जो बचें हैं वे सफेदी में नहाये हुए है । सुना है कि आजकल बीमार भी रहने लगा है ।

धर्मानन्द–अरे बैठेगा भी कि सब बात खडे खडे पूछ लेगा ।

सुदर्शन बाबू–ले यार बैठ जाता हूं कहते हुए कुर्सी में धंस गये । बैठ गया अब तो बतायेगा । घर परिवार में तो तेरा प्रमोशन हो गया है कम्पनी में कुछ हुआ अभी तक की नही ।

धर्मानन्द–धर्मानन्द यार तू बचपन का दोस्त है और पांच साल के बाद झलक दिखाने आया है । मेरी छोड अपनी बता ।

सुदर्शनबाबू–बेटा बेटी नौकरी धंधें में लग गये है । मैं अब सीनियर मैनेजर हो गया हूं । बी.ए.पास करते ही क्लर्क की नौकरी मिल गयी थी । देखो कहां से कहां पहुंच गया ।

धर्मानन्द–तुम तो खूब तरक्की करो । रिटायर होते होते जनरल मैनेजर बन जाओ यही मेरी दुआ है । मेरे बेटा बेटी अभी पढ रहे है । मेरी नौकरी चल रही है यह क्या कम है । क्लर्क लगा था क्लर्क रिटायर हो जाऊंगा । पढाई के लिये दिन रात एक कर दिया । पोस्ट ग्रेजुयेट,एल.एल.बी. और एच.आर.डी.में डिग्री लिया । कम्पनी में तरक्की के सारे रास्ते बन्द हो गये हैं ।
सुदर्शनबाबू–तुम तो बहुत पढे लिखे हो ।हमारे विभाग में होते तो जनरल मैनेजर तक पहुंच जाते ।
धर्मानन्द– नौकरी सलामत रह ङ्मी पायेगी या नही यही चिन्ता का विषय है ।
सुदर्शन बाबू–ऐसी कैसी बात कर रहे हो यार ।हमारी बैंक भी तो पब्लिक सेक्टर में आती हैं और तुम्हारी कम्पनी भी ।हमारे यहां तो नाइंसाफी नही होती ।
धर्मानन्द–हमारे यहां तो होती है । तभी तो बीस साल की नौकरी के बाद भी क्लर्क के क्लर्क रह गये । उपर से अत्याचर भी सहना पडा ।अब क्या बन पाऊंगा ।कोई उम्मीद नही दिखाई पडती ।मैनेजर बनने की उम्मीद तो हमारी कम्पनी में नही है खासकर हमारे लिये ।बेटे बेटी पर उम्मीद टिकी है । मेरा तो कैरियर बर्बाद हो गया सुदर्शन...........
सुदर्शनबाबू–ऐसे कैसे बर्बाद हो जाएगया । कम्पनी में कोई नियम कायदे नही चलते है क्या।
धर्मानन्द–चलते है पर दूसरे तरह के........
सुदर्शन– मतलब........
धर्मानन्द–हाथी के दांत खाने के लिये अलग दिखाने के लिये अलग होते है । ठीक वैसे ही कानून कायदे चल रहे है हमारी कम्पनी में कुछ खास लोगो के बनाये हुए। वे लोग बस अपने लोगो का ही भला करने में जुटे रहते है । हमारे जैसे लोगो को तो जिन्दा गाड देने की फिराक में रहते है ।उन्हे ऐसा लगता है जैसे हमारी नौकरी उनके एहसान पर टिकी है ।
सुदर्शन– पुरानी जर्मींदारी वाली व्यवस्था लागू है क्या ।
धर्मानन्द– ठीक समझे ।
सुदर्शन– हमारे विभाग में तो ऐसा नही है । सभी के लिये मौके है ।
धर्मानन्द– कहने को तो हमारी कम्पनी अर्धशासकीय है पर व्यवस्था और विजन बिल्कुल पुरानी जमीदारी वाला है ।बडे बडे जमीदार प्रशासकों के अधीनस्थ तो मेरी हाल वैसी ही हो गयी है जैसे बबूल की छांव में लगे पेड–पौधे की ।
सुदर्शन–यार मैं तो सोच रहा था कि तुम भी मैंनेजर हो गये होगे । तुम्हारे साथ तो घोर अन्याय हो रहा है।तुम्हारी नौकरी पर संकट के बादल मडरा रहे है । यह सुनकर बहुत दुख हुआ । कहने को तुम्हारी कम्पनी भी अण्डरटकिंग है पर यहां के कानून कायदे छोटे आदमी की योग्यता के विरोधी है । तुम्हारी इतनी बडी बडी डिग्रियों पर रोलर चला दिया गया । यह तो बहुत बडा अन्याय है ।
धर्मानन्द–परिवार पालना है । बच्चों को पढाना लिखाना है ।बेरोजगारों की हालत देखकर जुल्म सहने को मजबूर हो गया हूं ।मेरा कैरियर तो खत्म कर दिया है जमीदांरी व्यवस्था के पोषकों ने । बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये जहर पी रहा हूं ।
सुदर्शन–अच्छा तो तुम्हारी बीमारी का कारण समझ में आ गया ।
धर्मानन्द–तुम तो जानते ही हो घर परिवार की आर्थिक दशा कैसी है । खेतीबारी कुछ भी नही हैं । मां बाप को बडी उम्मीद थी कि मैं पढ लिखकर बडा अफसर बन जाऊंगा । अफसर बनने की योग्यता तो आज भी मुझ में है यह तो तुम ही नही मेरे विभाग के बडे बडे लोग भी जानते है । कम्पनी में मेरे विरोधी तो है पर विषपाल साहब की कसम ने तो कम्पनी में मेरी तरक्की के सारे रास्ते बन्द कर दिये है ।
सुदर्शन–विषपाल साहब की कसम ।
धर्मानन्द–हां सुदर्शन ठीक सुन रहा है ।

सुदर्शन–ऐसी कैसी दुश्मनी विषपाल साहब से हो गयी ।
धर्मानन्द–जातीय दुश्मन कह सकते हो भाई ।
सुदर्शन–जातीय दुश्मनी की वजह से योग्यता पर ईर्ष्या की बमबारी ।
धर्मानन्द–जातीय ईर्ष्या तो मेरे कैरियर की तबाही का कारण है ।कोई ऐसा बडा अधिकारी नही आया जो मेरे प्रति सद्भावना दिखाया हो । चाहे कंसपाल साहब रहे हो,या अवधपाल साहब रहे हो रौद्रपाल साहब रहे हो विषपाल साहब ने तो कसम खा ही लिया है कि अपने रहते धर्मानन्द को अफसर बनने नही दूंगा।
सुदर्शन–ऐसी कैसी जातीय दुश्मनी निकाल रहे है विषपाल साहब । एक गरीब के मां बाप का सपने तोड रहे है,हक को कैद कर रहे है । उच्च शैक्षणिक योग्यता का बलात्कार कर रहे है ।
धर्मानन्द–सच्चाई तो यही है ।
सुदर्शन–अपनी जाति के लोगो को बढावा और परजाति के उच्च शैक्षणिक योग्यता के बाद भी तरक्की के दरवाजे बन्द करना सचमुच जमीदारी प्रथा का द्योतक है ।
धर्मानन्द–विषपाल साहब ने अपनी बिरादरी के और अपने ऐसे चम्मचों को बडे बडे पदो का उपहार दिये है जो कहीं से भी पद की गरिमा से मेल नही खाते ।हां वे जातीय योग्यता से श्रेष्ठ है बस इतनी ही उनकी विशेषताये है । कई तो ऐसे भी है जो दो लाइन लिखने में पसीने पसीने हो जाते है । सुदर्शन भइया ऐसे लोगों को भी सर कहना पडता है ।हमारी कम्पनी के नियम कायदे तो काफी अच्छे है पर विषपाल साहब जैसे जमीदारों ने अतिक्रमण कर लिया है । अपने बनाये कानून थोप दिया है । जो हम जैसे छोटे लोगो के पांव की जंजीर बन गये है । हम तो मर मर कर जी रहे है । सोचा था शैक्षणिक योग्यता के बल पर मंजिले पा जाऊंगा पर तातीय अयोग्तया ने सारी उम्मीदें धराशायी कर दी । बीस साल की नौकरी और उच्च योग्याता के बाद भी मामूली से क्लर्क से आगे बढने नही दिया गया । मेरे बच्चों का भविष्य उज्जवल हो जाता तो मेरे जीवन की साध पूरी हो जाती ।
सुदर्शन–तुम्हारा सपना जरूर पूरा होगा धर्मानन्द । तुम तो बच्चों के सुखद कल के लिये जुल्म का जहर पीकर तपस्या कर रहे हो । तुम्हारी तपस्या का फल खुदा जरूर देगा ।
धर्मानन्द–बच्चों को देखकर तो लगता है कि बच्चे तरक्की का शिखर छुयेगे पर डर भी लगता है सुदर्शन..
सुदर्शन–कैसा डर ।
धर्मानन्द–विषपाल साहब जैसे और कोई पैदा हो गया तो ....जमीदारी व्यवस्था के विषपालसाहब और उनके जैसे लोगो ने मेरे कैरियर को वैसे ही नोच नोच कर खा गये जैसे शिकारी कुत्ते गाय के नवजात बछ्डे को ....
सुदर्शन–यार ये तो बहुत नाइंसाफी है ।हमारा विभाग तो बहुत बढिया है । टाइम से प्रमोशन हो जाता है । कोई भेदभाव नही । खूब प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है । विभाग की परीक्षा होती है । परीक्षा पास करते जाओ तरक्की ही तरक्की ।अण्डरटेकिंग हमारा भी विभाग है पर पूरे नियम कायदे लागू है ।
धर्मानन्द– हमारे विभाग में तो मैन टू मैन वैरी होता है । आपकी उुंची पहुंच है तो आपका प्रमोशन हो या कैडर चेंज हो कोई रोक नही सकता । यदि हमारी तरह विभाग में लावारिस है तो आपने जबान खोल दिया प्रमोशन या कैडर चेंज के लिये तो समझो आपने गुनाह कर दिया । उुंचे ओहदेपर बैठे जमीदार साहब किसी न किसी बहाने देख लेगे । चुपके से ऐसे डंसेगे कि उनके डंसे का जहर जीवन भर चैन नही लेने देगा ।
सुदर्शन–बाप रे विभाग है या तुम्हारे जैसे छोटे लोगो के कैरियर को तबाह करने का ठीहा ।

धर्मानन्द- जो उचित लगे समझ लो । तुम्हारे सामने भुक्तभोगी जिन्दा भर सांसे भर रहा है । मौका मिला होता तो हम भी आज कुछ होते । सुदर्शन हमारी संस्था में जाति विशेष का दबदबा है ।इसी दबदबे ने मेरा कैरियर चौपट कर दिया है छोटी जाति और अधिक पढा लिखा होने का दण्ड तो भुगत रहा हूं ।
सुदर्शन-सचमुच यह तो बहुत बडा जुल्म ढाहा जा रहा है तुम्हारे उपर ।
धर्मानन्द-बहुत सह लिया थोडे कुछ सालो की और बात है बेटी बेटा के पांव जमते ही अलविदा कह दूंगा । इन्तजार है तपस्या पूरी होने की ।
सुदर्शन-तपस्या तो पूरी होगी पर जिस कारण से तुम्हारा कैरियर चोपट किया जा रहा है ।बडे ओहदेदार जमीदार माफिक जुल्म करने की कसम खा चुके है ।यह तो वाकई शर्मनाक है ।
धर्मानन्द-बिल्कुल सच्ची बात है । साहब लोगो की मण्डली जीम हुई था । अंगूर की बेटी का ताण्डव जारी थी । सबसे बडे विषपाल साहब जाम टकरा टकरा के कूल्हे मटका रहे थे । इसी बीच कण्ठपाल साहब ने मेरा जिक्र छेडकर बोले साहब वो धर्मानन्द तो बडी बडी डिग्रियां ले लिया है । ऐसे ही रहा तो बडी कुर्सी हासिल कर लेगे ।उसका रास्ता रोकने के लिये कुछ करना होगा ।
कण्ठपाल की सलाह सुनकर विषपाल साहब बोले- तुमको कैसे पता चला कि धर्मानन्द का रास्ता रूका नहीं है । अरे अवधपाल के साले का देखो,कुलपाल के आदमियों को देखो,तुम अपने लोगो को देखो और भी लोग है जो बडे मैनेजर बन चुके है पर धर्मानन्द से कम पढे लिखे है ।आगे भी उन सभी की खूब तरक्की होगी पर धर्मानन्द की वही हाल रहेगी जैसे चूहा कितनों भी मोटा हो जायेगा तो लोढा से भारी तो नही हो सकता । ऐसी ही व्यवस्था धर्मानन्द की हो चुकी है । तुमको लगता है कि वह मजे मे है तो मैं अभी देख लेता हूं । इतना कहकर विषपाल साहब रीजनल आफिस में फोन लगाये और बोले धर्मानन्द को काले पानी की सजा दे दो । यह सब बात हमारे दफतर का ड्राइवर सुन रहा था ।वह भी खिलाफ में ही रहता है पर ना जाने क्या सोच कर बता दिया। उसकी बात पर मुझे यकीन तो नही हो रहा था पर बाद में कई और दबी जबानों एहसास करवा दिया सच्चाई का । सुदर्शन काले पानी की सजा भुगत रहा हूं । आंसू पीकर बच्चों के कैरियर को सींच रहा हूं । काश मेरा सपना पूरा हो जाता ।
सुदर्शन-प्रतिभाओं को कोई रोक नही सकता ।तुम अपनी योग्यता का जौहर कभी ना कभी दिखाओगे । पहले ही थोडे दिन के लिये । विषपाल साहब कब तक कम्पनी के बडे पद को अपनी कैद में रखेगे । अन्त तो सभी को होता है ।
धर्मानन्द-हमारे भी कैरियर का अन्त हो गया है विषपाल साहब के हाथों आकी बाकी जाते जाते पूरा कर देगे । कम्पनी में तो कोई उम्मीद नही है ।उम्मीद है तो बच्चों के भविष्य से । रूढीवादी जातीय श्रेष्ठता के पोषक विषपाल साहब और उनकी बिरादरी अधिकारियों ने तो मेरा कैरियर चौपट तो कर ही दिया है पर सुदर्शन अभी भी हिम्मत नही हारा हूं ।
सुदर्शन-हिम्मत बनाये रखो यार योग्यता कभी व्यर्थ नही जाती । कब तक और कहां कहां कोई योग्यता की छाती पर बैठा रह पायेगा ।एक रास्ता बन्द होता है तो कई खुल जाते है ।तुम जरूर तरक्की करोगे भले ही विषपाल साहब जातीय श्रेष्ठता की दीवारे कितनी मोटी क्यों न बना दे ।
धर्मानन्द-सुदर्शन कल क्या होगा ये तो नही मालूम पर इतना मालूम है आज जातिवाद की मुट्ठी भर आग मेरा भविष्य चौपट कर रही है । जब से नौकरी ज्वाईन किया हूं तब से ही विषपाल साहब और उनके गुर्गो का दंश झेल रहा हूं । मेरा आगे का रास्ता भी कांटो भरा है कम्पनी में जमीदारी व्यवस्था लागू रहेगी । इसका भी मुझे भान है । इतना सब होने के बाद भी मुझे अपनी योग्यता पर भरोसा है सुदर्शन........

सुदर्शन–यकीन है धर्मानन्द तुम मुश्किले खडी करने वाले के मुंह पर तमाचा जड दोगो ।मुश्किलों के भंवर से पार हो जाओगे । बिते समय और वर्तमान ने तुमको घाव दिया है पल पल तुमको छला गया है गरीब जानकर । आने वाला समय तुम्हारा होगा । मुझे भी नफरत होने लगी है विषपाल और उनके कुनबे से । अंग्रेजो के जमाने में हमारी बडी जमींदारी थी पर हमारा परिवार मानवतावादी हो गया है । विषपाल और उसकी मण्डली के लोग कैसे अमानुष है । गरीब आदमी की तबाही के लिये कांटे बो रहे है । ये कैसी कसम खा लिया,कैसा अपराध कर दिया रे विषपाल– गरीब उच्च शिक्षित और काबिल व्यक्ति के कैरियर को जातिवाद का कफन पहनाकर दफन कर दिया ।

पथराव

मिसेज दयावती–शहर की रूह तो छलनी कर दिया उपद्रवियों ने ।चार मर गये पूरे शहर में कर्फ्यू लग गया । उपद्रवियों ने पूरे शहर को सिर पर उठा लिया है ।ये देखो अखबार भी लहूलुहान हो रहा है । अखबार में छपी तस्वीर में कैसे लोग आमने सामने से एक दूसरे पर पत्थर फेक रहे हैं। गोली चल रही है। बम फेंके जा रहे है । ये कैसा पथराव है एक दूसरे की जान लेने के लिये धर्म के नाम पर ।

मिस्टर देवानन्द–तस्वीर से रूह कांप रही है । कल उपद्रव और पथराव की वजह से तो दफ्तर जल्दी बन्द हुआ था । किसी तरह से जान बचाकर आया था पूरे शहर में भगदड मची हुई थी । एक समुदाय दूसरे पर टूट रहा था जैसे कुत्ते टूटते है एक दूसरे पर । शहर जल रहा है । लोगों के घर जल रहे हैं । बच्चे भूख से बिलख रहे हैं । शहर की गलियां खून में नहायी हुई हैं ।उपद्रवियों का कोई धर्म नही होता । ये लोग नंगे लोग होते हैं । धर्म के नाम खून बहाते है । अपना मतलब साधते है । ये मौकापरस्त लोग लहू पी कर पलते है । विष बीज बोते है । आग से सींचते है । ये लोग देश और समाज के अस्मिता से खेलते हैं । रन्जू की मम्मी उपद्रवियों का कोई मजहब नही होता। कोई मजहब आपस में लडना नही सीखाता। अपयश मजहब के माथे क्यों ?

मिसेज दयावतीा–ये लो चाय पी लो । गैस भी खत्म होने वाली है । दूध भी अब नही है ।अगर ऐसे ही शहर आतंक के साये में रहा तो आंसू पीकर दिन गुजारने पडेगे । बडी मुश्किल से तो साक्षी बीटिया ने चाय बनायी है पी लो......

मिस्टर देवानन्द– चाय का प्याला उठाते हुए बोलो आज तो चाय मिल रही है कल देखो क्या होता है ?

इतने में मिसेजदयावती चिल्लाकर बोली अरे साक्षी के पापा वो देखो पुलिस की गाडी सायरन बजाते हुए अपने घर की ओर आ रही है । लोग भेड बकरी की तरह भाग रहे हैं ।

साक्षी– मम्मी वो सामने की दूध की दुकान भी बन्द हो गयी दस मिनट पहले ही तो खुली थी ।

मिसेज दयावती –बेटी दूध तो मिल जायेगा । पहले जिन्दगी सही सलामत तो बची रहे ।

नन्हा प्रतीक घबराकर बोला मम्मी–आतंकवादी लोग अपने घर पर तो हमला नही करेगे ।

संखी–भइया तुम घर में हो घर में कोई कैसे घुसेगा ।हम अन्दर बाहर ताला लगा लेगे ।

मिसेज दयावती–बेटी साक्षी प्रतीक को अन्दर ले जाओ । कोई कार्टून फिल्म लगा दो देखता रहेगा ।

साक्षी–ठीक है मम्मी............

मिस्टर देवानन्दा–रंजू की मम्मी सावधान रहना । उपद्रवियों का कोई भरोसा नही कब क्या कर बैठे ।धर्मान्ध उपद्रवियों को कोई चीख पुकार अथवा मदद के स्वर नही सुनाई पडते ।उनको बस मारो काटो के स्वर सुनाई पडते हैं क्योंकि उनकी आंख में सपने नही खून खौलता है ।

मिसेज दयावती– चाय पीये नही उठाकर रख दिये । कर्फ्यू की घोषणा बेमुद्दत की है । चाय पी लो कल मिल पायेगी की नहीं। गेहूं पीसाना रह गया। आटा भी बहुत कम बचा है । दाल–तेवन

भी घर में नही है । सब्जी वाले भी नही आ पा रहे है । अचार से दो दिन निकाल लेगे । अपनी तो बस इतनी ही तमन्ना है कि शहर में शान्ति हो जाये । साक्षी के पापा चाय पीओ.........

मिस्टर देवानन्द-चाय तो गले से नीचे उतर ही नही रही है । ये देखो कैसी भयावह तस्वीर छपी है ।उदापुरा में हुए पथराव में घायल आदमी के सिर से कैसे खून के फववारें फूट रहे हैं । पूरा शहर हिंसा की चपेट में आ गया है । कितने दुर्भाग्य की बात है कि एक देश एक शहर एक बस्ती में रहने वाले लोग एक दूसरे के उपर पत्थर बम और बन्दूक से हमला कर रहे है । कुछ ही धण्टो में तीन ट्रक से अधिक पत्थर एक दूसरे के उपर फेंके गये है । इस पथराव में बेचारे गरीब मजदूर और निर्दोष हताहत हुए है तीस से अधिक लोग घायल हैं। मरने वाले कोई किसी संगठन का पदाधिकारी नही है । सब गरीब मजदूर लोग मरे हैं । पूरे शहर में कर्फ्यू के साथ ही धारा 144 की चपेट में है । पूरा शहर भोली भाली निर्दोष जनता के खून से लथपथ है । मां अहिल्याबाई की आत्मा रो रही होगी शहर की यह भयावह दुर्दशा देखकर । साक्षी की मम्मी गले से नीचे चाय उतर नही रही है ।

मिसेज दयावती-बाप रे बेमुद्दत कर्फ्यू ....कैसे जरूरी चीजे मिलेगी । काश जल्दी शहर की रंगत लौट जाती । सब सामान्य हो जाता ।घर में ही डर लगने लगा है ।कब क्या बुरा हो जाये सोचकर.........

मिस्टर देवानन्द-शहर में जंगल की ,परदेशीपुरा हर कहीं पत्थर बरस रहे हैं तो कही गोली । पूरा शहर उग्रवाद की चपेट में हैं । एक समुदाय के लोग दूसरे का खून पीने के लिये कटार लेकर दौड रहे है । ऐसे मे तो भगवान भी कोई गारण्टी नही दे सकता ।

साक्षी-पापा धर्म के नाम पर लोग ऐसा क्यों करते है । किसी की हत्या कर देते है । किसी को जला देते है । किसी का घर जला देते है । ऐसा तो कोई धर्म नही कहता ।

मिसेज दयावती- ऐसे मौकापरस्त लोग होते है । इनका कोई धर्म नही होता है । ये तो आदमी का खनू पीकर पलते है । इनका धर्म होता है आतंक... ।

प्रतीक-खलनायक कहो ना मम्मी..........

साक्षी-अरे वाह रे प्रतीक तू तो बडा उस्ताद निकला ।

प्रतीक-कसाई को देखकर बकरा भी तो डरता है । अनहोनी का डर सभी को होता है । आतंकवादी/उग्रवादी भी तो कसाई ही हैं ।

मिसेज दयावती-ठीक कह रहे हो प्रतीक। कसाई ही तो है तभी तो आदमी का खून बहाने में सभ्य समाज के विरोधियों को तनिक भी डर नही लगता ।

मिस्टर देवानन्द- ठीक कह रही हो । उपद्रवियों ने तीन जुलाई से शहर की अस्मिता के साथ खेलना शुरू किया था । छः तारीख हो गयी पर शहर वैसे ही धूंधूं कर जल रहा है ।

मिसेज दयावती- छोटे छोटे बच्चे डर सहमे रह रहे है । ये देखो अखबार में छपी तस्वीर नन्हीं सी बच्चा कैसे शटर को नीचे से उचका कर बाहर देख रही है। आंखें ऐसे लग रही है कि अभी रो पडेगी । कितना भयावह मंजर हो गया है।

मिस्टर देवानन्द- उपद्रव तो बन्द नही हुआ । राजनैतिक पथराव शुरू हो गया । राजनेता लोग अपनी अपनी कुर्सी के ढीले जोड को जख्म की कीलों ो दुरूस्त करने में जुट गये हैं ।

मिसेज दयावती-बहुत बह गया खून ।बहुत हो गया उपद्रव अब तो शान्ति चाहिये शहर को । शान्ति प्रिय शहर दुनिया में बदनाम हो रहा है । सभ्य समाज के दुश्मनों की वजह से ....

मिस्टर देवानन्द- बेचारे रोज कुआं खोद कर पानी पीने वाले तो भूखे मर रहे है । दूर दूर से शहर में शिक्षा लेने आये बच्चे भूखे दिन रात बिता रहे है । दवा दारू के बिना लोग परेशान हो रहे है । उपद्रवियों ने हवा मे फिजां में जहर और जीवन की राह में बारूद बिछा दिया है ।

मिसेज दयावती–धर्म के नाम पर बवाल मचा हआ है । वही दूसरी ओर दोनों समुदायों के लोग एक दूसरे की मदद कर रहे है । सब की खाहिश है कि शहर में जल्दी रौनक लौटे । ये उपद्रवी धार्मिक उन्माद फैलाकर क्यों धर्म की महत्ता के साथ अश्लील व्यवहार कर रहे हैं ।
मिस्टर देवानन्द–ठीक कह रही हो । शहर में तरफ उन्मादी आतंक फेला रहे है तो वही दूसरी ओर रवि वर्मा,सुशील गायेल,अजय काकाणी जैसे कई लोग जान की बाजी लगा शान्ति और सद्भाव कायम करने के प्रयासरत् है । सेवाभारती तथा जैनसंस्कार जैसी संस्थाये भी अमन की इबारत लिखने मे जुटी हुई हैं । अमन तो शहर में जल्दी होगा विघटनकारी शक्तियां और कुछ धर्मान्ध मतलबी लोग सद्भावना की राह में रोडे डाल रहे है । यकीनन ऐसी विघटनकारी संस्थायें और उपद्रवी मतलबियों के नाम पर थूकेगी ।
साक्षी–काश शहर में सद्भाव और शान्ति जल्दी स्थापित हो जाती ।
मिसेज दयावती– जरूर होगा । जनता तो सब समझ गयी है । उन्मादियों को धर्म से कोई लेना देना नही है । वे तो अपने स्वार्थ सिध्दि के लिये इंसानियत की बलि चढा रहे है।
मिस्टर देवानन्द–जनता के पैर में भले ही कफ्र्यू की बेडिया पडी है । जर्रे–जर्रे पर सन्नाटा है। पग पग पर उपद्रवियों का खौफ हैं ।इसके बाद भी जीवन गाडी का पहिया कहां थमा है।कफ्र्यू में ढील मिलते है । आवाम गले मिलने को आतुर हो उठता है । राजवाडा,छप्पन दुकान और सार्वजनिक जगहों पर आतंक के खौफ के बाद भी लोगों की भीड उमड रही है । अपने वीणानगर में ही देखो बडे भले ही घरों में दुबके हुए है पर बच्चे खेल में मशगूल है । हां ये बात अलग है कि सायरन की आवाज सुनकर जां जगह पाते है वह छिपने लगते है । बहुत भयानक आग लगी है । बुझना चाहिये.........
मिसेज दयावती–आग तो बुझेगी पर जिस मां का बेटा मारा गया । जिसका पति मारा गया जो बच्चे अनाथ हो गये । क्या उनके धर्म के नाम पर खूनी खेल खेलने वाले वापस कर पायेगे ।या उनके परिजनों का सहारा बनेगे । जीवन में दर्द भरने वालों का सत्यानाश हो ....
मिस्टर देवानन्द– अखबार में छपी सूचना के मुताबिक कल बारह बजे से रात्रि के दस बजे तक कफ्र्यू में ढील रहेगी ।
मिसेज दयावती–दफ्तर जाओगे ?
मिसेज देवानन्द– हां कब तक घर में कैद रहेगे । हो सकता है कल दिन ठीक ठाक रहे तो परसों से कफ्र्यू उठ जाये । वैसे कफ्र्यू तो आम जनता की जान माल की रक्षा के लिये ही लगता है । इसमें अपराधी किस्म के लोगो की धरपकड होती है । यह जरूरी भी है । इसी से तो उपद्रवियों की नाक में नकेल पडती है ।
मिसेज दयावती–महंगाई तो वैसे ही कमर तोड रही थी । शहर में फैले उपद्रव ने तो जीना ही हराम कर दिया । कीमते पहुंच से दूर होने लगी है । काश फिर कभी शहर और देश में उपद्रव का ज्वालामुखी नही फूटता ।
मिसेज दयावती–सरकार और सभ्य समाज को मिलकर उपद्रवियों का दमन करना होगा तभी विद्रोह का ज्वालामुखी नही फूटेगा ।
मिस्टर देवानन्द–ठीक तो कह रही हो पर ऐसा हो तब ना । इसके लिये पुख्ता इन्तजाम करना होगा । मानवतावादियों को धर्म,सम्प्रदाय और जाति से उपर उठकर उपद्रवियों और अपने बीच दीवार खींच देनी चाहिये । ताकि ना बहे फिर कभी खून की धारा । आदमियत ,अमन–शान्ति के विरोधी अपनी अपनी बिलों में कैद रहे । जब कभी निकले तो इनका दिल पसीज गया हो । मानवता,समता सद्भावना और शान्ति के दूत बनकर निकले ताकि कभी ना हो सके पथराव । देश प्रगति की राह पर सरपट दौडता रहे ।

मिसेज दयावती–एक बात कहूं ।
मिस्टर देवानन्द–अरे घर में कैद है । बाहर उपद्रवियों का भूत है । अब ना कहोगी तो कब कहोगी जो कुछ कहना हो कह सुनााओ । भरपूर समय है सुनने सुनाने का ।
मिसेज दयावती– तुम तो बहुत कुछ कह गये मैं तो कुछ और ही सोच रही थी ।
मिस्टर देवानन्द–भागवान कहो ना हमने तो ऐसा वैसा कुछ नहीं कहां.........
मिसेज–चलो तुम जीते मैं हारी । अपनी बात कहती हूं ।
मिस्टर देवानन्द–पहले मेरी बात सुनो धकियानुसी बातें ना करो । तुम हमेशा से जीतती आयी हो । मैं तो हारा हुआ सिपाही हूं तुम्हारे सामने।
मिसेज दयावती– देखो मुद्दे से ना भटकाओ । बात उपद्रव और कर्फ्यू से होकर कहीं और जा रही है । नजर कहीं निशाना कही लग रहा है । मेरी बात सुनो ।
मिस्टर देवानन्द–बिल्कुल नही मैं मुद्दे पर ही कायम हूं ।
मिसेज दयावती–जब तक धर्म का उपभोग अफीम की तरह और जातिवाद का दम्भ हुंकार भरता रहेगा तब तक उपद्रव मचता रहेगा । क्यों ना धर्म को मानवकल्याण से जोडा जाये । जातिवाद की मान्यता रद्द कर दी जाये । ऐसा हो गया तो ऐसे उपद्रव नही होगे । आदमी के खून से सडके गलियां नही नहा पायेगी ।
मिस्टर देवानन्द–बात तो बहुत अच्छी है लेकिन धर्म और जाति के बीच से होकर रास्ता दिल्ली तक जाता है । सारी उपद्रव की जड धार्मिक और जातीय उन्माद में है । उपद्रवी लोग धर्म को बदनाम कर रहे हैं ।सद्धर्म, सर्वसमानता , बहुजनहिताय एंव बहुजन सुखाय का सच्चा प्रहरी होता है ।
साक्षी– चलो अच्छी बात हुई । उपद्रव की नाक में नकेल पड गयी । कर्फ्यू भी कुछ दिन रात्रि दस बजे से सुबह छः बजे तक रहेगा । अब पापा दफ्तर जा सकते है , मैं और प्रतीक स्कूल भी । पथराव का डर तो मन में रहेगा ना पापा । कई लोग मरे है । कई गली मोहल्ले खून से लाल हुए है ।
मिस्टर देवानन्द– बेटी डरते नहीं । जनता की सुरक्षा के लिये पुलिस फोर्स जो चपे चपे पर तैनात है अभी भी।
मिसेज दयावती–बेटी डरना नही । भयावह सपना मानकर भूल जाना । स्कूल में दूसरे धर्म के बच्चों के साथ मिलजुल कर रहना । नफरत नही सद्भावना के बीज बोने होगे स्कूल के स्तर से तभी बच्चें सर्वधर्म सर्वसमानता के नैतिक दायित्वों का पालन कर सकेगे ।
मिस्टर देवानन्द–बेटी तुम्हारी मम्मी ठीक कह रही है ।सद्भावना से नफरत की जड पर प्रहार किया जा सकता है । ऐसा प्रहार पथराव को जन्म ही नही देने देगा ।
साक्षी– पापा याद रखूंगी ।
मिसेज दयावती– जा बेटी अपना और प्रतीक बैग जमा लो कल से स्कूल जाना है ना ।
साक्षी– हां मां.........
मिसेज दयावती–देखो छोटे–छोटे बच्चे कितने खुश है । शहर की रंगत लौटते ही.......
मिस्टर देवानन्द– अमन तो सभी को पसन्द होता है । कौन खतरों से खेलना चाहेगा । अपने को मौत के मुंह में झोकेगा। धार्मिक/सामाजिक बीमारियों के प्रकोप से पथराव होते है । खून बहते है । बच्चें भी डर गये है पथराव से......
मिसेज दयावती–डर तो हम गये थे ये तो बच्चे है । डर कर भी तो जीवन नही चलता ।
मिस्टर देवानन्द–हां ठीक कह रही हो । डर तो था ,जब तक उपद्रव था, शहर मे कर्फ्यू था कब कहां से पत्थर या गोली बरस पडे । कर्फ्यू में तनिक छूट मिलते ही लोग जरूरी चीजों के लिये दौड पडते थे ।

मिसेज दयावती– उपद्रवियो ने ऐसा खूनी खेल ही खेला है कि डर बन गया है । धीरे धीरे खत्म हो जायेगा । सब कुछ सामान्य हो जायेगा । कब तक पथराव का भूत पीछा करेगा ?
मिस्टर देवानन्द– राष्ट्रीय अस्मिता एवं मानवीय एकता के लिये साम्प्रदायिकता के विष बीज को उखाड फेंकना होगा वरना ये साम्प्रदायित ताकते खुद को सुरक्षित कर शान्ति और सद्भावना के दामन मुट्ठी भर भर आग भरती रहेगी ।

ना हो पथराव ना बहे खून, अब ना कराहे मानवता यारो ।
आस्था का वास्ता,सद्भावना के अमृत बीज बो डालो यारो ।।

सौदा

बंशीधर की तेरहवीं तक उनके वारिस सब्र रखे रहे परन्तु तेरहवी बितते ही सब्र का बांध टूट गया । बंशीधर की दूसरी विधवा पत्नी मंथरादेवी धन सम्पति समेटने में जल्दी थी । कास्तकारी,बैंकबैलेंस से लेकर भैंस,घास–भूसा,गोबर कण्डा तक को अपने कब्जे में करने को उतावली थी । पति के मरने का कोई गम न था । गम था तो ये कि कही कोई सामान सौतेले बेटा बहू न रख ले। सौतेली मां के एकाधिकार को देखकर बंशीधर के तीनों लडके दिलेश्वर,मनेश्वर और रतेश्वर ने पंचायत बुलाना उचित समझाा । चौदहवें दिन पंचायत बुला ली गयी ।
पंचों के सामने मंथरादेवी ने अपने नाम के बैंक बैलेस और जमीन को छोडकर बाकी चल अचल सम्पति पर आधे की हिस्सेदारी पेश कर दी । मंथरादेवी की इस दावेदारी को देखकर दिलेश्वर ने आपत्ति ली ।
मंथरादेवी पंचों से मुखातिब होते हुए बोली पंचों अभी तो कास्तकारी घरद्वार और मेरे स्वर्गीय पति के नाम जमा रकम में आधा हिस्सा चाहिये । मेरे नाम जो रकम जमीन है वह तो मेरी ही रहेगी । हां मेरे मरने के बाद ये तीनों लडके आपस में बांट सकते है। मेरे जीने का भी तो कुछ सहारा होना चाहिये ।
मंथरादेवी के एकतरफा हिस्सेदारी की बात सुनकर कानाफुंसी शुरू हो गयी । इतने में दिलेश्वर हाथ जोड कर खडा हुआ और बोला पंचों नई मां आधे की हिस्सेदारी पुख्ता कर रही है । मरने के बाद हम तीनों भाइयों में बराबर बांटने की बात कह रही है।यदि नई मां ने मेरे बाप दादा की चल अचल सम्पति अपने भाई भतीजों के नाम कर दी तो । नई मां का तो कोई भरोसा नही है पंचो।
मनेश्वर– पंचों भइया ठीक कह रहे हो ,नई मां हैण्डपाइप से पीने का पानी नही लेने देती । क्या वह हमारे लिये दौलत छोडेगी ?
रतेश्वर–हां पंचों नई मां से उम्मीद कोई उम्मीद करना खुद को धोखा देना है । बांप के मरने के पहले ही बहुत सारी धन दौलत , खेत अपने नाम लिखा ली । नई मां ही बाप की मौत की जिम्मेदार है ।
मंथरादेवी–रतेश्वर, मैं नही तुम लोग कातिल हो । इतना मोह था तो तेरे बापमुझे क्यों लाये । बाप साठ साल की उम्र में ब्याह की क्यो सूझी। मुझे लाये है तो उनकी सम्पति पर मेरा हिस्सा तो होगा । कानून मुझे अधिकार देता है । मैं अपने अधिकार से कोई सौदा नही करूंगी ।
मनेश्वर–तुम हमारी मां बनने नही आयी हो । दौलत पर कब्जा करने आयी हो । बाप को हम लोगो से छिन ली । धीरे धीरे जमीन,नगदी और जेवर पर कब्जा कर ली । हम तीनों भाईयों के लिये कुछ तो छोडो मां । क्यो सौतेलेपन का जहर दे रही हो । अब तो बाप भी नही रहे । नई मां तुम्हारे पति से पहले वे हमारे बाप थे। तुमको आये अभी दो साल भी नही हुए सारी दौलत पर कब्जा कर ली । बाप को तुमने मार डाला भूखे दारू पिला पिलाकर। मां तुम अपने मकसद में कामयाब हो गयी । अफसर बाप तुम्हारी काले जादू को नही समझ पाये । जिन्दगी नौकरी में दूसरों का केस हल करते रहे । अपने ही केस में तुमसे हार गये नई मां ।

मंथरादेवी–मैं तो अपना धन धर्म सब कुछ छोडकर आयी थी यह सोचकर की तेरे बाप के साथ मेरे जीवन की सांझ चैन से बित जायेगी । वे तो मुझे अधजल में छोड मरे । तुम लोग उनकी मौत का ठिकरा मेरे सिर फोड रहे हो । मुझे ठगिन कह रहे हो ।
दिलेश्वर–मैं तुम्हारे पास था क्या ? न खाने का ठिकाना न पहनने का । एक झोपडी ही तो थी । यहां आते ही तिजोरी की ताली लटकाने लगी । बैंक की पासबुके छिपाने लगी । बाप की कमाई का हिसाब किताब रखने लगी । दो साल मे तुमने सब कुछ पर कब्जा जमा लिया । जिस दौलत को मेरी सगी मां ने नजर भर कभी नही देखा । वही मां जिसने बाप को कामयाब बनाने के लिये मेहनत मजदूरी करती थी पिताजी पढने जाते थे । मेरी मां की कमाई पर तुम नाग की तरह फन फैलाकर बैठ गयी हो । हम तीनों भाई ललचाई आंखों से देख रहे हैं । अपना हक नही पा रहे है । नोना–नटो की तरह झोपडी में रह रहे है इतनी बडी कोठी रहते हुए। यही हैं मां तेरी ममता ।
मंथरादेवी–ये कोठी किसकी है ।तुम लोग लोगो को दिखाने के लिये झोपडी में रह रहे हो ।
रतेश्वर– नई मां तुमने हमें बेघर कर दिया है । सब कुछ तो तुम्हारा होकर रह गया है । हमें तो चैन से रहने भी नही देती हो । चल अचल सभी सम्पति पर तुम्हारा ही तो कब्जा है । हम तीनों भाई तो अपने हक से बेदखल हैं ।
मनेश्वर– नई मां बाप के जीते जी लाखों की रकम अपने नाम करवा ली । सोने के आभूषण बनवा लिये । ढेर सारी रकम मायके पहुंचा दी । बाकी पर आधा हिस्सा मांग रही हो ।हम भाई लोग अपने बाप की नाजायज औलाद तो नही ? बाप की सम्पति पर हमारा भी हक बनता है की नही ?
मंथरादेवी–तुम लोग अपने बाप की नाजायज औलाद नही हो तो मैं भी कोई रखैल नही हूं । कानूनी ब्याह की हूं दिल्ली की कचहरी में जाकर तुम्हारे बाप से । आधे के हिस्से का हक है मेरा भी।
दिलेश्वर–नई मां तुम इस परिवार में एक हिस्सेदार की हैसियत से आयी हो बस ना..........
मंथरादेवी–हां ठ्भ्क समझे......
सेठू प्रधान–मंथरा भौजाई बंशीधर भइया ने तुम्हारी मांग में सिन्धुर डालकर उपकार किया है । तुम उनके बच्चों को अपना बच्चा नही मान रही हो । तुम इन लडको की मां हो । मां का फर्ज निभाना चाहिये था । तुमने ऐसा नही कर सौतेली मां के चरित्र को और भयावह बना दिया है । ये लडके तुमको मर्णिकर्णिक ले जायेगे तुम्हारी मृत देह। तुम्हारी अर्थी बंशीधर भइया के दरवाजे से उठेगी तभी स्वर्ग में जगह मिलेगी । मायके से डोली उठना अच्छा होता है अर्थी नही । तुम तो पढी लिखी हो । इसलिये तुम्हारा फर्ज और बढ जाता है पर तुमको दौलत से मोह से है । बंशीधर भइया की औलादों से नही ।
मंथरादेवी–प्रधान भइया तुम भी इन लडको का पक्ष ले रहे हो । मैं बूढी औरत कहां जाऊंगी । अरे मेरी बाकी जिन्दगी का सहारा तो दौलत ही है ना । ये लडको तो पहुंचा दिये मणिकर्णिका । ये लडके मेरा सहारा नही बन सकते है तो मेरी सौत की औलाद.........
सेठूप्रधान– तुम परिवार की भूखी नही हो क्योंकि इन लडको को तुमने पैदा नही किया है ना । बंशीधर भइया के परिवार का दुख सुख तुम्हारा दुख सुख नही है । तुमको बस बंशीधर भइया की दौलत से मोह है । भइया ने तो उपकार किया था तुम पर । वही उपकार अपराध बन रहा है । अरे गांवपुर के सभी जानते है तुम कैसे दुर्दिन काट रही थी । इस घर में आते ही महरानी बन गयी । पेट भर रोटी के लिये नस्तवान थी । वो दिन भूल गयी । अरे बंशीधर भइया के जीते जी तो बहुत जुल्म की इन लडको पर अब तो रहम खाती । उनका हिस्सा उनको दे देती । तुम्हारे पास तो तीन बेटे है किसी के साथ रहकर जीवन के बाकी दिन चैन से बिता सकती हो ।तुम दौलत

के ढेर पर बैठी हो और तुम्हारी सौत तुम्हारे मृतक पति बंशीधर भइया के बेटे छोटी मोटी चीजों के लिये तरस रहे है । भइया रिटायर होकर आये थे तो पन्द्रह लाख रूपया मिला था पूरा गांव जानता है। हर महीने सात हजार पेंशन मिल रही थी । सुना है कि भइया के खाते में बस तीन लाख रूपया है। धीरे धीरे सब रूपया झंस ली । तीन लाख में से आधा और जमीन जायदाद में आधा मांग रही हो । ये कहां का न्याय है। ये तीन लडके और उनका परिवार कैसे जीवन बसर करेगा । ज्यादा होशियारी अच्छी बात नही है । अरे पिछ्ले कर्म का फल भोग रही हो दो दो पति खा गयी । कोई बाल बच्चा भी नही हैं तुम्हारे । इन्ही तीनो लडको को अपना लेती तो जीवन स्वर्ग बन जाता ।

रामश्रृंगार–हां प्रधान भइया बात तो लाख टके की कह रहे हो । भौजाई के पास बहुत अच्छा मौका था अगला जन्म सुधारने का पर भौजाई ने बंशीधर भइया के साथ ब्याह नही सौदा मान रही है । अरे दिलेश्वर मनेश्वर और रतेश्वर छोटे बच्चे होते तो जहर पिलाकर सारी चल अचल सम्पति पर कब्जा कर लेती । अरे भौजाई बंशीधर भइया के तीन लडके और एक लडकी भी तो है । उसका भी हिस्सा बनता है ।

मंथरादेवी–कोई लडकी नही है । दिलेश्वर से पूछो शपथ पत्र पर सभी के दस्तक है ।

रामश्रृंगार–अच्छा तो एक कांटा निकाल चुकी हो ।

रामश्रृंगार की बात सुनकर मंथरादेवी के पिताजी झुनझुनबाबा क्रोधित होकर बोले यहां तो पूरी पंचायत अफीम के नशे में मदहोश है । मंथरा बीटिया तुमको यहां न्याय नही मिलेगा ।

मंथरादेवी–पिताजी मन छोटा ना करो मैंने भी कच्ची गोलियां नही खेली है । ब्याह नही एक सौदा था जिसका गवाह दिलेश्वर भी तो है । फैसला तो मेरी मर्जी के माफिक होगा ।नही तो कोर्ट कचहरी तो है । मैं दिलेश्वर के मृतक बाप की दूसरी पत्नी हूं रखैल नही । मेरा आधे का हिस्सा है । मैं लेकर रहूंगी । जमीन जायदाद और बै।क के सभी कागजात मेरे पास है ।वह भी इन तीनों के बाप दिया है ।

सेठूप्रधान–मंथरा भौजाई बंशीधर भइया कोई वसीयत लिखकर मरे हैं क्या ?

मंथरादेवी–यही तो गलती हो गयी । वसीयत नही लिखवायी गयी । वसीयत लिखकर मरे होते तो आज ये कौअे नही मडराते मेरी मांस को नोंचने । सब कुछ मेरा होता । पंचायत की जरूरत नही पडती ।

रामश्रृंगार– सुन लिये झुनझुनबाबा । भौजाई की जिरह । बाबा ये आपकी साजिश तो नही थी , भइया को साठ साल की उम्र में ब्याह के बंधन में बंधक बनाकर जमीन जायदाद हडपने की । भईया के बार बार मना करने पर बाबा अपने अपनी पगडी भईया के पांव पर रख दिये थे । भईया ने आपकी लाज रखी और आपने धोखा दिया । भइया की और उनके पुरखों की जायदाद को हडपने का सौदा समझ लिया । मंथरा भौजाई एक मां का प्यार इन लडको को देती तो ये लडके इतने नासमझ नही है । ये लडके तो श्रवण की तरह है । तुम हो इन लडको को जहर परोसने में जरा भी कोर कसर नही छोड रही हो । झुनझुनबाबा तुम भी वादे से मुकर गये। बंशीधर भइया की दौलत के लालच में ।

झुनझुनबाबा–इन लडको ने कौन सा फर्ज निभाया ?

सेठूप्रधान–बाबा ये तीनो लडके क्या करते । अपने बाप दादा की दौलत चांदी की थाली में रखकर तुमको पेश कर देते । बाबा तुमने और तुम्हारी बेटी ने बंशीधर भइया के साथ छल किया है । रिटायर होकर आने के बाद कभी चेन की रोटी आपकी बेटी ने नही दी बंशीधर भइया पूरा गांव जानता है।बंशीधर भइया जिन्दगी भर तो शहर में रहे रिटायर होने के बाद उनको खेती करने का चस्का लग गया था । बंजर जमीन से भी भरपूर अनाज पैदा कर रहे थे । पूरी कोठी में जो

अनाज भरा है उनकी मेहनत का फल है । ये मंथरा भौजाई रोटी बिना मार डाली । दुनिया की सारी सुख सुविधा बंशीधर मंथरा भौजाई तुमको दिये पर तुमने दो जुन की भर पेट रोटी नही दी । बेचारे मर गये भूखे । हां दस रूपये की देशी दारू मंगा कर जरूर दे देती थी ताकि मर जाये जल्दी। तुम बंधन से मुक्त हो जाओ । धन दौलत लेकर दूसरा रास्ता नाप लो । बंशीधर भइया के खून पसीना से सींचा परिवार सडक पर आ जाये । मंथरा भौजाई तुम्हारे जैसा ही गोरो ने किया था । पहले तो वे एक साधारण व्यापारी बनकर आये थे फिर धीरे धीरे देश पर कब्जा कर लिये । वही तुमने किया । बंशीधर भइया से ब्याह के बहाने उनकी दौलत पर कब्जा किया है । बहुत घिनौना सौंदा किया है तुमने ।

रामश्रृगार-बंशीधर भइया लगभग दो साल भर पहले रिटायर हुए थे तब उन्हे पन्द्रह लाख रूपये मिले थे बाकी और भी पैसे मिलने वाले थे । हर महीने पेंशन मिलती थी । बैंक में मात्र तीन लाख है । बाकी रूपये कहां गये । हिसाब तो तुमको ही देना होगा । लडको को तो तुमने पास तक फटकने नही दिया । तीन लाख मकान और खेती की जमीन में आधे की दावेदारी पेश कर रही हो ।

मंथरादेवी-आधे से कम पर तो सौदा नही होगा । चाहे बैंकबैलेश हो या जमीन जायदाद सब में आधा चाहिये ।

झुनझुनबाबा-मेरी बेटी की अभी उम्र ही क्या है चालीस साल की है । पूरी पहाड सी जिन्दगी बीटिया के सामने है गुजर बसर कैसे होगा । झुनझुनबाबा की बात काटते हुए रमरजिया मंथरादेवी की मां बोली पंचो मेरी बेटी का हिस्सा मत छीनो । विधवा की बद्दुआ खाली नही जाती ।

रतजियादेवी-क्या कह रही हो बहन बंशीधर बेटवा के मरे आज चौदह दिन हुए इस बीच तिजोरी का मुंह तुम्हारे घर की तरफ मुड गया । अनाज की गोदाम का मुंह तुम्हारे घर में अब खुलता है। बीस हजार की भैंस तुम्हारे दरवाजे पर बंध गयी । बीटिया का ब्याह की थी कि कोई सौदा । बंशीधर के मरते ही सब कुछ लूट लो । ऐसा तो न देखी थी न सुनी थी अपनी अस्सी साल की उम्र में ।

रघुनन्दन-सासुजी दमाद की दौलत से करोडपति बन रही हो ? अरे नातियों का हक क्यो छीनने पर तूली हो ?

रमरजिया-कौन नाती । दमाद के जीते जी सब नाता था उनके मरते ही सारे नाते टूट गये ।

रामश्रृंगार- जमीन जायदाद और रूपये से नही टूटा है सासुजी...............

रमरजिया-बाबू ये तो मेरी बेटी का अधिकार है ।मेरी बेटी जिसे चाहे दे । मंथरा मेरी बीटिया बंशीधर बाबू के सम्पति की असली हकदार है।

सेठूप्रधान-देखो वक्त मत गवाओं मुझे दूसरी पंचायत में जाना है । मुद्दे की बात करो ।

झुनझुनबाबा-प्रधान जी यदि फैसला आपके बस की बात न हो तो ये लोग कचहरी चले जाये । वहां दूध का दूध पानी का पानी हो जायेगा ।

मंथरादेवी-मुझे तो आधा हिस्सा चाहिये ।

सेठूप्रधान-आधा तो नही मिल सकता ।

मंथरादेवी-क्यो ?

सेठूप्रधान-मृतक बंशीधर के तीन लडके एक लडकी और पांचवी तुम वारिस हो । तुमको आधा हिसा कैसे मिल सकता है ।

मंथरादेवी -पांच नही चार है । बेटी कानूनन मर चुकी है । इस बात की पहले ही जिक्र हो चुकी है । बेटी की कानूनन मौत के गवाह दिलेश्वर भी तो हैं। एक बात का मट्ठा बनाने से कोई मतलब नही ।

सेठूप्रधान- बेटी मरी तो नही है । तीन बच्चों की मां हैं भरा पूरा परिवार है । अपने पति के साथ खुश हैं । शहर में रहती है। आती जाती रहती है । भले ही वह हिस्सा न मांगे पर है तो हिस्सेदार ।

दिलेश्वर-ठीक है चार ही हिस्सा होगा पर नई मां आधा ले लेगी तो हम तीन भाइयों का घर परिवार कैसे चलेगा । बैंक में तीन लाख बचे है । बारह लाख रूपये मां हजम कर चुकी है । बीघा से अधिक खेत अपने नाम करा चुकी है । पंचो चार बीघा खेत ये कोठी जिस पर मां का ही कब्जा है । हम भाई लोग तो झोपडी में रह रहे हैं पूरा गांव देख ही रहा है । इसके बाद भी मां का पेट नही भर रहा है तो पंचों आप लोग हम भाइयो को जैसे कहो वैसे राजी है । बाप भी नही मेरी सगी मां सत्रह साल पहले मर चुकी है । नई मां हम भाइयों की कब्र खोद रही है । पंचों फैसला आपके हाथ में हैं । हम भाई राजी हैं पंचों के फैसले पर । पंचों नई मां से बारह लाख रूपयें और बाकी जो सम्पति छिपाकर रखी है या मायके पहुंचा दी है उसका भी खुलासा कर दें ।जानने को तो सभी जानते है पर नई मां अपने मुंह से कह तो दे ।

सेठूप्रधान-मंथरादेवी दिलेश्वर ने जो कुछ कहा हैं जायज है । हिसाब तो हिसाब है देना होगा । तभी बंट्वारा होगा ।

मंथरादेवी- जो दिलेश्वर के मृतक बाप के नाम हैं उसी का हिस्सा हो सकता है । मेरे नाम है या मेरे पास जो कुछ हैं उसमें हिस्सा कैसे लगेगा । वह तो दिलेश्वर के मृतक बाप ने जीते जी मेरे नाम कर दिये है । उस पर तो बस मेरा हक है चाहे बारह लाख हो या बीस ....

सेठूप्रधान-मंथरादेवी ध्यान से सुनो भले ही बंशीधर भइया ने तुम्हारे नाम कर दिया हैं पर तुम्हारे बाद तुम्हारी चल अचल सम्पति के मालिक यही तीनो होगे ।

मंथरादेवी- जो मेरी परवरिश करेगा वह मेरी दौलत का वारिस होगा । मैं अपने नाम की सम्पति का उपयोग करने को स्वतन्त्र हूं । कानून भी मुझे इजाजत देता हैं । अपने हिस्से की दौलत चाहे अपने बाप के नाम करूं या भाई के नाम या भतीजे के नाम कोई रोक नही सकता ।

सेठूप्रधान-यह तो अन्याय है। धोखा है । क्या इसीलिये ब्याह की थी चालीस साल की उम्र में साठ साल की उम्र वाले बंशीधर भइया से।

रामश्रृंगार-प्रधानजी ब्याह नही यह एक सौदा हैं । दौलत हडपने की घिनौनी साजिश है । आप तो फैसला सुनाओं । मानना होगी तो मंथरादेवी मान लेगी ।कचहरी जाना चाहे तो शौक से जाये । पूरा गांव तो हकीकत जान चुका है ।

सेठूप्रधान-ठीक कह रहे हो रामश्रृंगार । फैसला तो तैयार हैं । ग्राम पंचायत के सदस्यों की दस्खत करवाकर मुहर लगा कर फैसला पढकर सुना दो ।

रामश्रृंगार-प्रधान के कहे अनुसार कार्रवाई पूरी की । इसके बाद फैसला सुनाया मृतक बंशीधर की दौलत में दिलेश्वर,मनेश्वर,रतेश्वर और उनकी सौतेली मां मंथरादेवी के बराबर के हिस्से का ।

फैसला सुनकर मंथरादेवी उसके मां बाप के चेहरे खिल उठे । वही दूसरी ओर दिलेश्वर,मनेश्वर और रतेश्वर की आंखों में आंसू माथे पर चिन्ता के बादल मडा रहे थे तीनो बेटो को रोता देखकर बंशीधर के बडे भाई कलधर उठे और तीनों को बांह में समेटते हुए बोले बेटा झुनझुनबाबा,रमरजिया देवी और उनकी बेटी मंथरादेवी के चक्रव्यूह के रहस्य को तुम्हारा अधिकारी बाप नही समझ पाया।बंशीधर को ना जाने कैसे बुढौती में ब्याह की सूझी थी जबकि दुनिया जानती है । कि बुढौती में ब्याह बर्बादी को न्यौता देना है । इसका गवाह तो इतिहास भी है । मंथरादेवी अपनी चाल में कामयाब हो गयी और तुम्हारे भाग्य में मंथरादेवी ने भर दिया मुट्ठी भर आग । यह ब्याह नही मंथरादेवी की साजिश थी ।

।। कन्यादान ।।

मिस्टर रामअधार बाबू डूबते सूरज को निहार निहारकर जैसे कोई सम्भावना तलाश रहे थे । इसी बीच उनके दरवाजे पर सफेद रंग की चमचमाती कार रूकी । रामअधार बाबू बेखबर थे । कार में से उनके पुराने परिचित गिरधर बाबू अकेले निकले और कमरे में आ गये । इसके बाद भी रामअधार बाबू के कानों को भनक न पडी । मिस्टर गिरधर बाबू मिस्टर रामअधार बाबू के पास खडे होकर बोले क्या भाई साहब जब देखो तब सोच में डूबे रहते हो । जागते हुए सपना देख रहे हो। पुष्पा भाभी से मन भर गया क्या ?

मिस्टर रामअधार बाबू चौक कर बोले कौन ?

मिस्टर गिरधर बाबू- मैं भाई साहब ?

रामअधार बाबू-आप.....बड़ भाग्य हमारे आपके दर्शन तो हो गये ।

मिस्टर गिरधर बाबू- हां .....भाई साहब डूबते सूरज में क्या तलाश रहे थे । कहते हैं डूबते सूरज को नही देखना चाहिये आप तो घुर घुर कर देख रहे थे । ये तो मैं था कही चोर घर में घुस गया होता तो ....

रामअधार- सम्भावना तलाश रहा था । हमारे घर में चोर को कागज के अलावा और क्या मिलेगा ।

गिरधरबाबू-डूबते सूरज में सम्भावना तलाश रहे थे ।

मिस्टर रामअधार बाबू- हां भाई साहब खैर छोडिये कहां से आ रहे हैं वह भी अकेले बच्चे कहां हैं । बरखा बीटिया भी इंजीनियर हो गयी हैं अपने पांव पर खडी हो गयी है । भाई साहब आपकी चिन्ता तो दूर हो गयी। उसको भी लाना था ।

मिस्टर गिरधरबाबू- चिन्ता तो कन्यादान के बाद खत्म होगी ।

रामअधार-हां बडा बोझ तो उतरना बाकी है ।खैर ये भी उतर जायेगा । भाई साहब आप तो कह रहे थे सपरिवार आये है । कहां हैं बाकी लोग ।

मिस्टर गिरधर बाबू-हां भाई साहब........बरखा बीटिया बेटा उदय,उनकी मां और पंडितजी कार में है ।

मिस्टर रामअधार-पंडितजी को लेकर कहीं जा रहे हैं क्या ?

मिस्टर गिरधरबाबू-यहीं तक आये हैं और कहीं नही जाना है ।

मिस्टर रामअधार-कर्मकाण्ड में तो मेरा विश्वास नही है । हम तो बस भगवान को मानते है । खैर आप लेकर आये है तो मैं बुलाकर लाता हूं । आप तो बैठिये ।पंडितजी तो हमारे घर का पानी तो पीयेगे नहीं ।

मिस्टर गिरधरबाबू- क्यों नही पीयेगे जमाना बदल गया है । भाई साहब आपका बेटा विजय बडा इंजीनियर बन गया है,बेटी खुशबू भी नाम रोशन कर रही है । सबसे छोटा बेटा स्वतन्त्र भी ऊंची पढाई कर रहा है । भाईसाहब अब तो अब बडे हैं । आपके सामने तो हम छोटे है । भाई साहब रूढिवादी व्यवस्था ने तथाकथित जातीय छोटे लोगों की जिन्दगी में मुट्ठी भर आग रूप बदल बदल कर भरी है । जाति से आदमी बडा नही बनता कर्म से बडा बनता है ।

मिस्टर रामअधार-भाई साहब कथनी करनी में अन्तर होता है ।

मिस्टर गिरधर बाबू- होता होगा पर मैं नही मानता ।

मिसेज पुष्पा-क्यों बहस करने लगे विजय के पापा ।भाई साहब तो अतिथि है। अतिथि तो भगवान होता है ।

मिस्टर रामअधार-भागवान कहां बहस हो रही है । कोई कोर्ट कचहरी तो नही हैं यहां । बहस तो वकीलों के बीच जज साहब के सामने होती हैं ।

मिसेज पुष्पा-जातिवाद की बीमारी एक दिन में तो खत्म होने वाली नही हैं । जातीय अभिमान में लोग खत्म करने के लिये जाति तोडो अभियान भी तो नहीं छेड रहे है ।

रामअधार–वाह रे भागवान तुम तो उपदेश देने लगी ।
मिस्टर गिरधरबाबू–भाई साहब भाभीजी ठीक कह रही है । भाभीजी जाति तोडो आन्दोलन छिडे या ना छिडे पर जातिवाद की बीमारी तो खत्म होकर रहेगी धीरे धीरे । एक दो पीढी के बाद जाति बिरादरी को नामोनिशान नही होगा । रिश्ते भी जाति के आधार पर नही कर्म और शैक्षणिक योग्यताओं को देखकर तय होगें ।
मिसेज पुष्पा–भाई साहब आप बैठिये मैं कामिनी भाभी और बच्चो को लेकर आती हूं ।
मिस्टर गिरधर बाबू–पंडितजी भी साथ है । उन्हे नही भूलना ।
मिसेज पुष्पा– पंडित जी क्यों............
मिस्टर गिरधरबाबू–काम है.........
मिसेज पुष्पा–विजय के पापा तो कभी हाथ नही दिखाये आज तक अब बुढौती में क्या दिखायेगे ?
मिस्टर रामअधार–देखो दुनिया भले बुढा कह दे पर तुम ना कहना ।
मिस्टर गिरधरबाबू–भाई सीब को भले ही पंडित का काम न हो पर मुझे तो है।
मिसेज पुष्पा– अच्छा तो आप कोई नया काम करने जा रहे हैं ।
गिरधरबाबू–वही समझ लीजिये ।
मिसेज पुष्पा–ठीक हैं पंडितजी को भी लेकर आती हूं । पुष्पा सभी को आदर के साथ लेकर अन्दर आयी और बैठने का आग्रह करते हुए बीटिया खुशबू को आवाज देने लगी ।
मिसेज कामिनी–भाभीजी विजय नही दिखायी पड रहा है ।
मिसेज पुष्पा–कम्प्यूटर पर कुछ कर रहा होगा ।
मिसेज कामिनी–विजय बेटा बरखा के बचपन का दोस्त है । देखो कितने जल्दी सयाने हो गये । ब्याह गौने की उम्र के हो गये ।
मिसेजपुष्पा–समय को नही बांधा जा सकता भाभी जी ....
मिसेजकामिनी– ठीक कह रही हो भाभीजी । बरखा ओर उदय नन्हे नन्हे थे तो भाई साहब नहलाकर खूब तेल मालिश करते थे दोनो की धूप में बिठाकर ।
मिसेजकामिनी–याद है ।वही बच्चे अब कितने बडे हो गये । बरखा और विजय इंजीनियर बन गये । दोनो को साथ देकर मन बहुत खुश हो जाता है ।
मिस्टर रामअधार–अरे विजय देखो अंकल आण्टी आये है साथ में बरखा और उदय भी हैं । बाद में काम कर लेना । सचमुच कोई काम कर रहे हो या गेम खेल रहे हो । बाहर आ जाओ । अंकल आण्टी का पैर तो छू लो........
मिसेजपुष्पा– अपने बचपन में तो ऐसी कोई सुविधा थी ही नही । बेटा बच्चा तो है नही । समझदार है । बड़ाा इंजीनियर है ।
मिस्टर रामअधार– बच्चा कितना बड़ा क्यों न बन जाये मां बाप के लिये बच्चा ही होता है । बच्चे की तरक्की ही तो हर मां बाप का सपना होता है ।
विजय और खुशबू भाई बहन साथ साथ आये सभी के पांव छुये । विजय एक तरफ कुर्सी लेकर बैठ गया । खुशबू मिस्टर गिरधर से मुखातिब होते हुए बोली क्या अंकल आप भी हम बच्चों को भूल जाते हो ।
मिस्टर गिरधर–कैसे भूल जाता हूं । देखो न पूरा कुनबा लेकर तो आया हूं । साथ में पंडितजी भी है ।
खुशबू–बरखा के भी दर्शन दुर्लभ हो गये है। बचपन ही ठीक था । ना कोई चिन्ता ना फिकर । महीने में तो एकाध बार हम बच्चे भी मिल जाते थे । अब तो सब अपनी अपनी जिम्मेदारी सम्भालने में लगे है । बरखा भी इंजीनियर बन गयी । इयको भी फुर्सत नही रही अब ....

बरखा– हां दीदी ठीक कह रही हो । अब जिम्मेदारी का एहसास होने लगा है ।
मिसेज कामिनी – असली जिम्मेदरी तो अभी आनी बाकी है ।
बरखा– तुम भी मम्मी कहते हुए मुस्करा कर चेहरा घुमा ली......
मिसेजपुष्पा–अरे अभी तो बरखा के साल दो साल में दर्शन भी हो जाते हैं । ब्याह होने के बाद विदेश बस गयी तो सपना हो जायेगी । कामिनी भाभी बरखा का ब्याह ऐसी जगह करना की मुलाकात तो आसानी से होती रहे ना वीजा का झंझट हो ना दूसरे अन्य खुशबू के लिये भी ऐसे ही सोच रही हूं ।
मिस्टर गिरधर–बरखा तो कभी सपना नही होगी । इसकी तो गारण्टी मैं लेता हूं ।
मिसेजपुष्पा– काफी देर हो गयी चाय नाश्ता तो कुछ बना लें...
खुशबूं– मम्मी मै भी आपका हाथ बंटाती हूं ....
बरखा– दीदी मै। आपका हाथ बंटाती हूं ......
खुशबू– तुम बैठो बरखा मैं कर लूंगी । तुम मेहमान हो । बडी इंजीनियर हो चूल्ह चौके का काम तुमसे नही होगा ।
बरखा– दीदी मुझे भी तो कुछ सीखाओं ....
विजय–अरे वाह इंजीनियर साहिबा को अभी सीखना बाकी है । चार साल की इंजीनियरिंग की पढाई दो साल की पक्की नौकरी इसके बाद भी सीखना है ।
मिसेजकामिनी– बेटी गृहस्ती के गुण तो सीखने ही पडते है । चाहे कितनी ही पढाई कोई क्यो न कर ले ।
बरखा–सुने इंजीनियर साहब मम्भी क्या कह रही है कहते हुए बरखा खुशबू के साथ में कीचन में चली गयी ।
पंडितजी–गिरधर बाबू हम चाय नाश्ता नही करने आये है ।
मिस्टर गिरधर–पंडितजी इस घर में अतिथि देवता होता है । यह परम्परा अभी यहां तो कायम है । भले ही आपको दूसरी जगह नही देखने को मिलती हो ।
पंडितजी–हमे तो नहीपीना है ।
मिस्टर गिरधर– पीना होगा पंडितजी........
पंडितजी–यजमान हमें जातिपांति में अब विश्वास नही है । हम तो सम्मान के भूखे हो गये है ।इतिहास में कुछ गलतियां हुई हैं उसी प्रायश्चित कर रहा हूं । पुरखों की गलतियों के लिये क्षमा मांगता फिरता हूं । यजमान हम किसी काम से यहां आये हुए है । काम की बात क्यो नही करते ।
मिस्टरगिरधर–पंडितजी सब तो देख रहे है । क्या ये सब काम नही हो रहा है ।
पंडितजी–सब तो मंगल ही मंगल है यहां.....देखो बरखा केसे घुलमिल गयी आण्टी और अपनी खुशबू दीदी के साथ । विजय भी बरखा को अच्छी तरह से जानता है । भाई साहब और हमारे परिवार की जान पहचान हुए पच्चीस साल हो गये है ।
मिसेज कामिनी–देखो बरखा कीचन सम्भालना अभी से सीखने लगी है ।
मिसटररामअधार– क्या......? बरखा से काम करवा रही हो खुशबू बीटिया अतिथि से कोई काम करवाता है क्या ?
मिस्टरगिरधर–भाई साहब अपने से क्यो अलग करते हो ।
बरखा–अंकल मुझे भी तो कुछ समझना चाहिये ना......लो अंकल मेरे हाथ की चाय पीओ......शकर बहुत मामूली सी पड गयी है गलती से ।
मिस्टर रामअधार–बरखा तुम चाय बनाकर लायी हो ....

बरखा–हां अंकल कहते हुए ओढनी से सिर ढंकने लगी ।
मिस्टरगिरधर–बरखा अंकल नही अंकल नही डैडी कहो ।
बरखा–ठभ्क है डैडी डैडी ही कहूंगी । बरखा मिस्टररामअधार को डैडी कहते हुए उनका चरण स्पर्श कर मिसेज पुष्पा का भी पैर छूने को लटकी,इतने में मिसेज पुष्पा ने बरखा को गले से लगाते हुए बोली बेटी तुत खूब तरक्की कर । अपने मां बाप का नाम रोशन कर जिस घर में जा उस घर को मंदिर बना देना । मेरी दुआयें तुम्हारे साथ है।
खुशबू–अरे वाह क्या बात है । बरखा तो सिर ढंक कर है ।
बरखा–खुशबू की तरफ देखकर मुस्करा पडी ।
मिस्टरगिरघर–भाई साहब स्वीकार करो ।
मिस्टररामअधार–किसको.......
मिसेजपुष्पा– चाय और किसको ।चाय पीओ....
मिस्टर राअधार–चाय तो पीऊंगा चाहे जितनी मीठी क्यों न हो । बरखा बीटिया ने जो बनायी हैं पहली बार ।
पंडितजी–रामअधारबाबू गिरधर बाबू बीटिया को स्वीकार करने की बात कर रहे है ।
मिस्टररामअधार–क्या......... ?
मिस्टरगिरधर–हां भाई साहब मेरी बीटिया को अपने घर की बहू बना लीजिये ।
मिस्टररामअधार–नहीं यह नही हो सकता..........
मिस्टर गिरधरमेरे पास धन दौलत की कमी नही है । जितना धन चाहे मांग लो पर मेरी बरखा को अपने घर की बहूं बना लो ।
मिस्टररामअधार–जो ब्यवस्था समाज को जहर परोस रही हो उसका पोषण मैं कैसे कर सकता हूं । मुझे दहेज एक रूपया भी नही चाहिये । मुझे तो विषमतावादी समाज का डर है । पिछले साल की ही तो बात है हत्या हो गयी थी लडके कि अर्न्तजातीय ब्याह को लेकर । जबकि लडका लडकी दोनो खुश थे । लडकी पक्ष के लोग ही लडकी की हत्या कर लडकी को विधवा बना दिये ना...... गिरधरबाबू ना.............ये ब्याह तो नही हो सकता ।
मिस्टरगिरधर– जाति और बूढे समाज की सारी दीवारे तोड दूंगा । हम बेटी के मां बाप रिशता लेकर आये है । पंडितजी गवाह है । हम कन्यादान करने के लिये तैयार है । आप क्यों विरोध कर रहे हैं भाई साहब.......
मिसेजकामिनी–मान जाइये भाईसाहब अब जातिपांति की लडाई कहां रही । स्वधर्मी के घर रिश्ते नही होगे तो कहां होगे ।हमारा तो बस धर्म में विश्वास है जाति में नही । विजय से बढिया दमाद हमें और कहीं नही मिल सकता । बच्चे भी इस विवाह से खुश होगे । भाई साहब जिद ना करिये मान जाइये । तभी तो जाति टूटेगी । किसी न किसी को तो आगे आना होगा ।
मिसेजपुष्पा–भाभीजी अभी जातिवाद खत्म तो नही हुआ हैं । आपके समाज के लोग जीवन नरक बना देगे । यदि बच्चों ने गलत कदम उठा लिया या आपके समाज के लिये बच्चों की जान लेने पर उतर आये तो हम बर्बाद हो जायेगे ।
मिसेजकामिनी– भाभीजी ऐसा नही होगा । हम बच्चों की शादी कोट्र में करेगे और रिश्पेसन आलीशान होट्ल में देगे । आप तो तनिक भी चिन्ता मत करो । आप तो ब्याह की हामी भर दो बस........
मिस्टर गिरधर– हां भाभी कुछ नही होगा ।सभी अपनी बेटी योग लडके को सौपना चाहते हैं । यदि मैं सौंप रहा हूं तो कोई गुनाह तो नही कर रहा । मै बडी जाति का हूं मैं आपके पास आया हूं । आपका बेटा मेरी बेटी को तो भगाकर नही ले गया है ना कि कोइ विरोध करेगा । यदि कोइ करता

भी हैं मैं हूं ना मुंहतोड जबाव देने के लिये । छोटी बडी जाति के भेद को मन से निकाल दीजिये । ब्याह पर अपनी हां की मुंहर लगाइये बसभाई साहब जानता हूं वंचितों को बस मुट्ठी भर भर आग ही मिली है जिससे उनका मान सम्मान और विकास सब कुछ सुलगा है । समय बदल गया है। दूरियां कम हो चुकी है । आपकी हां के बाद बच्चों की मर्जी जानेगें........अपने बच्चे कुसंस्कारित नही है कि मां बाप का कहना नही मानेगे ?हम तो उनके भले के लिये सोच रहे है ।

मिस्टररामअधार–पहले बच्चों की राय जान लो ।

मिस्टरगिरधर–ठीक है।उनकी राय जान लेते हैं ।

मिसेजकामिनी–बरखा बेटी इधर आओ ।कुछ देर हमारे पास बैठो ।

मिस्टरगिरधर–विजय को बुलाने के लिये खुशबू को भेजे ।

विजय– खुशबू दीदी के साथ अपना काम रोक कर आ गया ।

मिस्टरगिरधर–विजय बेटा आप बरखा के सामने बैठो...........

विजय–क्या........ ?

मिस्टरगिरधर– बैठो तो सही.......

विजय–अंकल थोडा जल्दी बोलिये क्या बात है । मैं काम बीच में छोडकर आया हूं । इन्टरनेट चालू है ।

मिस्टरगिरधर–जिस काम के लिये मै आप ओर बरख को बैठाया हूं उससे बड़ा तो कोई काम हो ही नही सकता ।

विजय–कौन सा काम है अंकल ऐसा ?

मिस्टर गिरधर– बरखा से ब्याह करोगे ना । बेटा नही ना करना....

विजय–बरखा से ब्याह के बारे में तो कभी सोचा ही न था। खैर बरखा से पहले पूछ लीजिये । वह क्या चाहती है ।

मिसेज कामिनी– विजय बेटा बरखा तुम्हारे सामने है तुम पूछ लो ।

विजय–इंजीनियर मैडम आर यू एग्री टु मैरी विथ मी ....

बरखा– एस इंजीनियर सर ।

पंडितजी–सुन लिया यजमानों लडकी लडका दोनो राजी है।अब तो समधि–समधि और समधन–समधन गले मिल लो ।

सारे गुण मिल गये है बस एक गुण छोडकर । ब्याह बहुत सफल होगा । वर–बधू जीवन में बहुत तरक्की करेगे । अब देर किस बात की चट मंगनी पट ब्याह कर दो ।ऐसे आज्ञाकारी बच्चे तो हमने देखे ही नही थे । आज मेरा भी जीवन धन्य होगा ।अभी फेरे दिलवा देता हूं पर दक्षिणा पूरा लूंगा.. ......

मिस्टररामअधार–लड़का –लड़की दोनो राजी है तो मुझे भी अब कोई आपत्ति नही हैं । बरखा बीटिया की मर्जी जानना बहुत जरूरी था । बच्चों को तो जीवन साथ साथ बिताना है ।

पंडितजी–ये बच्चे जिन्दगी के हर सफर में सफल होगे । कुण्डली मिलाने की कोइ जरूरत नही है अब । बहुत अच्छा मुर्हुत है चाहो तो अभी फेरे दिलवा सकते है ।

मिस्टरगिरधर–पंडितजी फेरे तो बाद में होगे पहले रिंग सेरेमनी का कार्यक्रम शुभ मुर्हुत में सम्पन्न करा दीजिये ।

मिसेजकामिनी–हां पंडितजी ....

मिस्टरगिरधर–दो अंगूठी निकाले और पंडितजी के हाथ पर रखते हुए बोले पंडितजी इन्हें मन्त्रोचारित कर रिंग सेरेमनी का कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न कराइये ।

पंडितजी के घण्टे भर के मन्त्रोचारण के बाद पंडित विजय और बरखा को एक एक अूंगठी दिये और मन्त्रोचारण के साथ एक दूसरे को पहनाने के लिये बोले । विजय और बरखा एक दूसरे को अूंगूठी पहनाये ।

मिस्टरगिरधर–विजय बेटा अब ये बरखारानी तुम्हारी महारानी बन गयी हैं । मुझे यकीन है की इनके जीवन के साथ हमारा भी जीवन धन्य हो गया तुम जैसे दमाद पाकर । बेटा ये बरखारानी बहुत सयानी है । मुट्ठी में रखना । अपने बाप को बहुत चकमा देती थी ।रोटी मैं अपने हाथ से खिलाता था । बेटा बडे लाड़ प्यार से पली है । खैर आप लोग तो सब कुछ जानते है । फिर भी बाप होने के नाते इतना तो कहूंगा ही की मेरी बरखा के आखों में आसूं कभी न आने पाये । होठ पर हमेशा मुस्कान बनी रहे ।

मिसेजपुष्पा–भाई साहब और भाभीजी बरखा की तनिक चिन्ता ना करना ।हमारे परिवार का चिराग हो गयी है । विजय और बरखा देखना दोनो परिवार के नाम को रोशन कर देगें । दुनिया मिशाल दे देकर ना थकेगी ।

मिस्टर–हां समधनजी.................

बरखा–पापा अब बस करो ।क्यों रूलाना चाहते हैं ।

मिस्टरगिरधर–बेटी तू विजय की अमानत थी । उसकी हो गयी । सच मेरा जीवन सफल हो गया ।अब तो मैं चैन से मर सकता हूं । कहते हुए आखें मसलने लगे ।

मिसेजकामिनी– हां बेटी मेरी बरसो की तपस्या सफल हो गयी । तू सदा खुश रहे यही दुआ है । तू तो परायी थी ही तेरे पापा ठीक कह रहे है । हर लड़की परायी होती है । उसका बाप एक दिन कन्यादान करता हैं । डोली उठती है ।

मिस्टरगिरधर–कन्यादान और डोली उठने में सप्ताह भर अैर लगेगा। सप्ताह भर के अन्दर विजय और बरखा का अर्न्तजातीय विवाह विधिवत् सम्पन्न हो गया । मिस्टरगिरधर बेटी का कन्यादान कर समधि मि.रामअधार और समधन मिसेज पुष्पा और खुद पति–पत्नि चारो धाम की यात्रा पर निकल पडे ।

दण्ड

बाप को हत्या के जुर्म में पुलिस ने आंतरी थाने में कर दिया गया है । यह खबर बेटा श्रवण के कान में पिघले शीशे की तरह घाव कर दी । वह गैती तगाड़ी रेलवे लाइन पर छोड़कर सीधे घर की ओर भागा । घर में मां को अचेत और आधे दर्जन से अधिक छोटे भाई बहनों को रोता बिलखता छोड़कर वह थाने की ओर भागग । थाने की जेल में कैद बाप को अर्धचेतन अवस्था में देखकर उसे भी मूरछा आने लगा । वह गिरता इसके पहले सम्भल कर थाने के मुख्यद्वार पर रखे मटके से पानी लिया माथे पर छींटा मारा । एक गिलास पानी खुद की हलक में उतारा । गिलास भर पानी लेकर बाप की ओर बढा,तब तक तैनात प्रहरी डपटकर भगाने लगा । इतने में टी.आई.मोलकचन्द साहब आ गये । मोलकचन्द साहब श्रवण से पूछे किस कैदी से मिलना है तुमको ।

श्रवण–साहब अपने बाप से मिलना है ।

मोलकचन्द– तुम्हारे बाप का नाम क्या है ?

श्रवण–घुरहू .... ।

मोलकचन्द–अच्छा तो खूनी का बेटा है । इसीलिये इतना ताव खा रहा है । हवलदार इसकी तलाशी लो........

श्रवण–साहब मेरा बापू एक चूहा तो कभी मारे ही नही । सांप को देखते पसीना छूट जाता है । शिव शिव का जाप करते भागने लगते हैं ।चींटी पैर के नीचे भूले भटके आजाने पर ना जाने कौन कौन सा मन्त्र पढ डालते हैं । कत्ल कैसे कर सकते है साहब.....

मोलकचन्द–तुम्हारा बाप तो बहुत बड़ा कत्ली है । इतनी सफाई से खून करता है कि निशान भी नही छोड़ता । अंधे कत्ल का असली मुजरिम तेरा बाप घुरहूं ही है । जिस कत्ल की गुत्थी सुलझाने में पुलिस को कहां कहां तफदीश में भटकनाा पड़ा और मुजरिम थाने के पास में शराफत का चोला ओढे चकमा दे रहा था । कहावत कही जाती है ना गोद में बच्चा नगर में ढढेरा । वही हाल हुई अंधेकत्ल के खूनी को लेकर । खूनी शराफत का ढोंग कर रहा था थाने के पिछवाडे ही । अरे पुलिस पीछे पड़ जाये तो बडे से बड़े केस को सुलझा सकती है ।
श्रवण–साहब मेरे बापू कत्ल नही कर सकते कोई गलतफहमी जरूर हुई है । हाथ जोड़ता हूं मेरे बापू को छोड दो साहब । मेरे बापू धम्र कर्म में विश्वास करने वाले है । भला वे खून क्यों करेगे ।
मोलकचन्द– हो सकता है किसी सिध्दि के लिये । सुनो ज्यादा होशियार ना बनो । हर अपराधी बचने के लिये तरह तरह के झूठ बोलता है । आखिरकार उसका झूठ चल नही पाता। अपराधी कितनी भी सफाई से अपराध को इंजाम दे परन्तु सबूत तो छूट ही जाता है । तुम्हारा बाप झूठ बोल बोल कर थक चुका तो तुमने बोलना शुरू कर दिया । तेरा बाप खूनी है । उसे फांसी से कोई नही बचा सकता ।
श्रवण–साहब ये तो अन्याय है ।
मोलकचन्द– तेरा बाप मुजरिम है । तेरा बाप भी कबूल कर चुका है । इसका पुख्ता सबूत पुलिस के पास है । तू अपने बाप को फांसी के फंदे से बचाना चाहता है ।
श्रवण–हां साहब । मेरा बाप निरपराध है ।
मोलकचन्द–निरपराध नही तेरा बाप खूनी है । यह तो अब सिध्द हो चुका है । कल सूरज उगते ही तेरे बाप को कोर्ट में पेश कर दिया जायेगा । कोर्ट में पेशी के बाद फांसी से बचाया नही जा सकता । बस एक उपाय है बचाने के । मै तुमको बता दूंगा क्योंकि तुम अपने भाई बिरादर हो । मैं नही चाहता के अपने लोग मुश्किलों मे फंसे । मोलकचन्द की बातों पर श्रवण को कुछ कुछ यकीन होने लगा सिर्फ बिरादरी का सुनकर । वह बोला कौन सा उपाय है साहब।
मोलकचन्द–दस हजार का इन्तजाम कर लो सुबह तक ।
श्रवण–दस हजार तो दस लाख के बराबर की रकम है साहब हमारे लिये । मैं कहां से लाउुंगा ।
मोलकचन्द–बाप को बचाना है तो घर बेचो । खेत बेचों । खड़ी फसल बेचों । इससे कम में तो बात बनेगी नही । आखिर खून का मामला है । बिरादरी का होने के नाते इतनी रिस्क ले रहा हूं वरना कब का पुलिस रिमाण्ड पर भेजवा दिया होता । घुरहू की सारी हड्डियां बोल चुकी होती अब तक। तुम ठीक से पहचान भी नहीं पाते अपने बाप को । इन्तजाम कर लो ।खेतीबाारी की जमीन तो होगी ही । बाप के जीवन के लिये
इतना भी नही कर सकते तो ठीक है जाओ अपने बाप से मिल लो । फिर मिलना हो पायेगा की नही ? मोलकचन्द साहब प्रहरी को आवाज देते हुए बोले ले जा इस लड़के को घुरहू से मिलवा दो उसका बेटा है ।
श्रवण–बन्दीगृह का फाटक पकड़ कर खडा हो गया । बाप बेटे दोनों की आखों से तर तर आंसूं बह रहे थे। घुरहू बेजुबान हो चुका था और शरीर अधमरा सा । आखों की बाढ गवाही दे रही थी भोगी हुई यातना की । श्रवण बाप की हालत देखकर बेचैन हो उठा। वह सीधे मोलकचन्द साहब के पास गया और आंसू पोछते हुए बोला – साहब किस पाप का दण्ड दे रहे है मेरे निरपराध बाप को ।
मोलकचन्द–हत्या के जुर्म में तेरे बाप बन्द है । तुम नही जानते हो क्या ? देखो बहस करने का समय नही है । अपने बाप को मौत के मुंह से निकालना चाहते हो तो मेरी बात ध्यान से सुनो

–आखिरी मौका है । कुछ कर सकते हो तो कर लो। जाति भाई होने के नाते तुमको बारह घण्टे की और मोहल्ल्त दे रहा हूं । चूक गये तो मुझे दोष मत देना। बेटा चूक गये तो घुरहू को फांसी हो जायेगी हत्या का जुर्म है ध्यान रखना। घुरहू के फांसी पर झूलने के बाद तुम्हारे खानदान की नाक कट जायेगी बिरादरी में यह भी याद रखना । कोई शादी ब्याह तक नही करना चाहता खूनी के खानदान में ।

श्रवण थाने की हवालात में बन्द बाप को शााष्टांग प्रणाम किया । श्रवण अपने बाप से बोला बापू आसूं पर काबू रखों और भगवान पर विश्वास वही इस मौत के कुये से निकालेगा । बापू जान की बाजी लगा दूंगा तुमको कैद से छुडाने के लिये कहते हुए वह आंतरी थाने से घर आया । मां के आसूं और छोटे भाई बहनों के विलाप ने उसे झकझोर दिया ।मां के चरणो में शीश झुकाकर वह गांव के घर घर जाकर दुखड़ा रोया पर दस हजार जैसी भारी भरकम रकम का इन्तजाम नही हो पाया । सूरज ढलने लगा था वह निराश नीम के नीचे बैठा हुआ आसूं बहाने को बेबस था । श्रवण को रोता हुआ देखकर छोटी बहन रोती हुई एक गिलास पानी लेकर आयी ।पानी का गिलास श्रवण को थमाते हुए बोली भइया तुम इतना रोओगे तो हम सब कैसे जीयेगे । वह बहन के हाथ से पानी लेकर जल्दी जल्दी पेट में उतारा फिर कस्बे के बड़े साहूकार के पास पहुंचा । रोया विलखा अपनी पगड़ी साहूकार के पैरों पर रख दिया ।

साहूकार बोला–बेटा श्रवण तुम्हारे बाप घुरहू पुजारी खूनी नही हो सकते मैं जानता हूं । रही बात दस हजार रूपये की तो वो मैं जबान पर कैसे दे सकता हूं । दस हजार से अधिक कीमत का कोई सामान गिरवी रख दो,रूपया ले जाओ.......

श्रवण–सेठजी इतनी भारी कीमत का तो मेरे पास कुछ भी नही है ।

साहूकार–देखो समय बर्बाद ना करो । किसी धर्मात्मा के पास जाओ। मै तो साहूकार हूं गिरवी रखकर ही रकम दूंगा । सूद भी बाजार भाव से कम नहीं लूंगा । सौदा पटे तो रूपया मिल सकता है वरना और कहीं देखो ।

श्रवण–सेठजी मैं गरीब हूं । चार बीघा खेती की जमीन है । आधी में गेहूं बोया हुआ है । इतनी पैदावार नही होती कि साल भर रोटी का इन्तजाम हो जाये ।आंख खुली नही तब से मेहनत मजदूरी में लग गया हूं । कुछ दिनों से ग्वालियर दिल्ली रेलवे लाइन दिहाड़ी मजदूरी करके बाप का हाथ बटा रहा था । न जाने किसकी नजर लग गयी हमारे परिवार पर । बापू को खून के इल्जाम में फंस गये है । सेठजी मेरे बापू के बारे में तो आप अच्छी तरह से जानते है ।कई बार तो आपकी पूजा भी करवाये है ।

साहूकार–जानता हूं तभी तो तुम्हारी मदद करने को तैयार हूं वरना आज के जमाने में दस हजार दस लाख के बराबर है इतनी बडी रकम कौन देता है कर्ज में । आजादी मिले अभी महज उन्नतीस साल ही हुए है । देश कंगाली के दौर से गुजर रहा है । अपने ही अपने को ठग रहे है । बेगुनाह को गुनाहगार बनाया जा रहा है । घूसखोरी का दौर चल चुका है। मै कैसे सूदी रूपया दे दूं बिना चल या अचल सम्पति के गिरवी पर रखे । अरे घोड़ा घास से दोस्ती कर लेगा तो जीयेगा कैसे। वह तो बेमौत मर जायेगा। देखो बेटा आखिरी बार कह रहा हूं रूपया तभी दे सकता हूं जब तुम कोई सम्पत्ति गिरवी रखो । यदि गिरवी रखने की सम्पति नही है तो तुम जाओ । ना मेरा समय खोटा करो ना अपना । देखो दुकान बन्द करने का समय हो रहा है । मुनीमजी को भी तेरहवीं का भात खाने जाने है । जल्दी करो जो कुछ करना है ।

श्रवण–सेठजी दो बीघा खेत गेहूं की अधपकी फसल से भरा है । उसे गिरवी रखकर सूदी रकम दस हजार दे दो ।

साहूकार–दो बीघा गेहूं वाले खेत के साथ परती खेत को भी रखोगे तब रकम दे पाऊंगा । कल रूपये नही दे सके तो मेरे पैसा कहां से वसुल होगा ।
मरता क्या न करता श्रवण चार गवाहों की उपस्थिति में हामी भर दिया ।
सहूकार–जमीन के कागजात कहां है ।
श्रवण–घर पर ही है ।
सहूकार–कागज लाओ ।
श्रवण भागता हुआ घर गया जमीन का कागज लाकर साहूकार के सुपुर्द किया । तब साहूकार ने मुनीब से स्टाम्प पेपर मंगवाया । स्टाम्प पेपर पर श्रवण का अंगूठा चार गवाहों की उपस्थिति में लगवाया । सारी कागजी कार्रवाई पूरी हो जाने के बाद साहूकार ने मुनीब को दस हजार रूपया देने का हुक्म दिया । दो बीघा गेहूं की अधपकी फसल और दो बीघा परती खेत गिरवी रखकर रूपया लेकर श्रवण घर गया । रूपया रात भर छाती से लगाये रखाा । सूरज उगते ही श्रवण दो रिश्तेदारो के साथ आंतरी थाने पहुंचा । टी.आई मोलकचन्द जैसे श्रवण का इन्तजार ही कर रहे थे । वे उसे देखकर बोले श्रवण तुम तो आ गये । पहले ये तो बताओ इन्तजाम हुआ की नही । घुरहू को कोर्ट में पेश करना जरूरी हो गया है । तीन दिन तक तो थाने में खातिरदारी हुई अब नही हो सकती । कोर्ट की पेशी के बाद केन्द्रीय जेल जाना होगा । खूनी को बड़ी जेल में ही रखा जाता है ।जल्दी बोलो श्रवण बेटा देखो मुंशीजी सारी कागजी कार्रवाई पूरी कर चुके है ।अब तुम्हारे उपर है कि अपने बाप को मौत के मुंह में ढकेलते हो या घर ले जाते हो ।
श्रवण पोटली मोलकचन्द की तरफ बढाते हुए बोला लो साहब ....
मोलकचन्द–पूरे तो है ना ?
श्रवण– गिन लो साहब । देर मत करो । मेरे बापू को छोड़ दो ।
मोलकचन्द–कह रहे हो तो मान लेता हूं । अपने वालों का विश्वास तो करना ही पड़ता है । कहते हुए मोलकचन्द ने हवलदार को पुकारा ।
हवलदार आया टी.आई मोलकचन्द साहब को सल्यूट करते हुए बोला येस सर । क्या हुक्म........
मोलकचन्द–घुरहू को छोड़ दो । अंधेकत्ल का कातिल कोई और है । घुरहू जैसा पूजापाठ करने वाला आदमी खून कैसे कर सकता है कहते हुए मूंछ के नीचे मुस्करा उठे ।
श्रवण अपने बाप घुरहू को लेकर घर चलने को मुडा इतने में टेलीफोन घनघना उठा । मुंशी ने रिसीवर उठाया । दूसरी ओर से आवाज आई साहब से बात करवाईये । मोलकचन्दसाहब मुंशी से रिसीवर रिसीवर थामते हुए घुरहू को जल्दी भाग जाने का इशारा किया । घुरहु,श्रवण और साथ आये दोनो लोग थाने से भाग खड़े हुए । तब मोलकचन्द साहब बोले हेलो कौन बोल रहा है ।
दूसरी तरफ से आवाज आयी मैं कम्पू थाने का इंचार्ज बोल रहा हूं । आप जल्दी आ जाये ।
मोलकचन्द– जरूरी काम निपटा रहा हूं नही आ सकता ।
दूसरी तरफ से आवाज आयी साहब मैं लपेटचन्द,थाना इंचार्ज बोल रहा हूं । आप आ जाइये ।बहुत जरूरी काम है ।
मोलकचन्द–किस केस में तलब कर रहे हैं जनाब ।
थाना इंचार्ज–एक्सीडेण्ट का केस है ।
मोलकचन्द–मेरा क्या लेना देना आपके थाने के केस से ।
थाना इंचार्ज–है साहब । तांगे से फूलबाग के ठीक सामने आपके बेटे का एक्सीडेण्ट हो गया है ।
मोलकचन्द–नवीन कैसे है ।
थानाइंचार्ज– स्पांट डेथ हो गयी ।
मोलकचन्द–मेरे गुनाहो का दण्ड बेटे को मिल गया ।

थानाइंचार्ज–क्या ?
मोलकचन्दसाहब–कुछ नही मैं जल्दी पहुंचता हूं ।
मोालकचन्द,टी.आई साहब बेटे की मौत के गम से उबर ही नही पाये थे कि कम्पू में बने लाखों के मकान मोलकचन्दभवन पर किरायेदारों का कब्जा हो गया । कुछ ही महिनों में नौकरी से हाथ धो बैठे । एक विपत्ति से उबर नही पाते दूसरी में घिर जाते । कुछ सालों में खानदान नस्तानाबूत हो गया। घूसखोरी से जोड़ी गयी अकूत दौलत का पहाड़ विपत्ति की आंधी में पता ही नही चला कहां उड़ गया । मोलकचन्द भीखारी हो गये । लोग उन्हे देखकर कहते मोलकचन्द साहब गरीबो का खून नही पचा पाये । गरीबों की आह में बर्बादी के शोले होते है । मोलकचान्द साहब इस शोले के चपेट में आ ही गये ।फर्ज के साथ गदारी खूब किये । भगवान की लाठी से आवाज नही उठ्ती । हर गुनाह का दण्ड भगवान ने दे ही दिया मोलकचन्दसाहब को।
उधर घुरहू बेटा श्रवण के साथ रेलवे लाइन पर दिहाड़ी मजदूरी करने लगे दाल रोटी का इन्तजाम होने लगा । एक दिन ग्वालियर–दिल्ली रेलवे लाइन के किनारे खुदाई के दौरान उन्हें खजाना मिल गया । उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी हो गयी । वे दरिद्रता से उबर कर अकूत दौलत के मालिक बन गये । घूसखोरी की बदौलत राजा बने मोलकचन्द गली–गली भीख मांगने को मजबूर हो गये । गुनाहों के दण्ड को बोझ ढोते ढोते आखिरकार एक दिन लावारिस अवस्था पुलिस को में मरे पड़े मिले ।
मोलकचन्द की लाश को पहचानकर गोपाल साहब बोले बहुत बुरा अन्त हुआ मोलकचन्द साहब का।
मोहनसाहब–हां गोपाल साहब मोलकचन्दसाहब 1976 में हमारे अधिकारी थे जनसेवा के नाम पर जनता की मुट्ठी में आग ही परोसे। काश ऊंची कुर्सी पर विराजित लोग कुछ सीख जाते ।
गोपालसाहब–ठीक कह रहे है मोहनसाहब यदि ऐसा चमत्कार हो गया तो घूसखोरी रूपी दैत्य का अन्त हो जाएगा।

गुड़िया का ब्याह

काहो बेटवा कब आये शहर से । गुड़िया के ब्याह के दिन आ रहे हो ।एकाध महिने पहले आना था।
मायादीन–काका राह चलते संदेश पूछ रहे हो ।
मिठाई–लो बेटा कुछ देर तुम्हारे साथ गपशप कर लेता हूं । काम इतना फेल गया है कि मरने की फुर्सत नही है ।कटाई दवांई तो हो गयी पर भूसा ढोने को पड़ा है । नही ढो गया तो आंधी उड़ा ले जायेगी ।उपर से गृडी का ब्याह ।
मायादीन–काका गुडी करने लायक हो गयी ।कल की बच्ची इतनी बड़ी हो गयी । मायादीन कुछ बोल पाता इतने में प्रिया आ गयी और बोली अरे बाबा को टूटी खाट पर बैठा दिये हुक्का तम्बाकू पूछे कि नही । बातों में ही मग्न हो गये ।
मायादीन– हुक्का तम्बाकू का हाल मै। क्या जानूं ।मैने तो कभी खाया पीया ही नही कहते हुए सधना बीटिया को बुलाकर मीठा पानी देकर हुक्का चढाकर लाने को बोले ।
सधना–पापा हैण्डपाइप पानी बार बार छोड़ रही है ।वाल्व कट गया होगा । मैं कुये से बाबा के लिये ठण्डा पानी लाती हूं ।
मायादीन–काका गुडी के ब्याह के बारे में कुछ कह रहे थे ।
मिठाई–हां बेटा अपने को तो भगवान ने बीटिया दिया नही । अब पोतियों का ब्या कर गंगा नहां लूंगा ।
मायादीन–प्रेम को कितनी बेटियां हो गयी है ।
मिठाई–बेटा अभी तो चार है ।आगे भगवान की महिमा ।

मायादीन–काका गुडी कितने बरस की हो गयी कि ब्याह के नाम पर उसकी मुटठी में आग भरने जा रहे हो ।
मिठाई–ये क्या कह रहे हो मायादीन । पोती का ब्याह करने जा रही हूं । उसकी चिन्ता मुझे है । 12 बरस की हो गयी है ।
मायादीन–सच काका तुम गुडी की मुट्ठी में आग भरने जा रहे हो । तुम गुडी का कल तबाह करने जा रहे हो । काका गुडी का ब्याह नही तुम अपराध करने जा रहे हो ।रोक दो ब्याह गुडी के साथ अन्याय ना करो काका ।
मिठाई–क्या कह रहे हो ।सुना है कुछ दिन पहले हमारी गुडी से बहुत छोटी लड़की के ब्याह में मन्त्री तक आर्शीवाद देने गये थे ।हमारी गुडी तो बारह से उपर की होगी ।जातिवाद,भूमिहीनता ऐसी बीमारियां जो शोषितों वंचितों मुट्ठी में आग भर रही है । जीवन का असली सुख छिन रही है । उनका तो कानून कुछ बिगाड़ ही नही पा रहा है । तब तक तुम बाल विवाह रोकने वाले कानून की दोहायी दे रहे हो । बेटवा तुमको अपनी बिन मां की भांजी का ब्याह बहुत पहले कर देना था । सस्ते में निपट जाते । उन्नीस साल की हो जाने पर ब्याह करने जा रहे हो ।
मायादीन–हां काका मेरी भांजी गुड़िया की मां के साथ जो अन्याय हुआ वह तो गुड़िा के साथ नही होने दूंगा ना । बेचारी बहन असमय मर गयी । बहनोई ने दूसरी शादी कर ली । बेचारी गुड़िया को घर से निकाल दिया ।बाप की गलती बेटी को भुगतना पड़ा मेरी बहन का बालविवाह न होता तो अभी नही मरती ।बहन को मरे अट्ठारह साल हो गये । भांजी गुड़िया को जन्मे उन्नीस । समय कितना जल्दी बदल जाता है । हम आंख फाड़े देखते ही रह जाते है ।
मिठाई–ठीक कह रहे हो बेटा । परम्परायें तो तोड़ने के लिये बनती है पर लोग दम्भ में न तोड़ते हैं ओर न तोड़ने देते । ऐसी ही परम्पराये है जातिवाद,विधवाजीवन,बालविवाह एवं और भी बहुत सी बुरी परम्पराये है जो सभ्य समाज के माथे पर दाग है ।समाज और शासप प्रशासन ईमानदारी से काम किया होता तो ये सामाजिक बुरी परम्पराये ना जाने कब की खत्म हो गयी हो । आज भर भर मुट्ठी आग का एहसास न कराती ।कुप्रथाओं के खत्म होने से सत्ताधारियों को नुकशान होगा ना इसीलिये तो सारी सामाजिक कुप्रथ्याओं को स्वार्थ का आक्सीजन दिया जा रहा है तथाकथित श्रेष्ठजाति और श्रेष्ठ समाज के नाम पर और कुल की थोथी परम्परा के नाम पर ।
मायादीन–काका तुम तासे बात तो समाज बदलने की कर रहे हो ।काका तुमने गुडी के भविष्य के बारे में नही सोचा । नन्ही गुडी का ब्याह करना न्यायसंगत है क्या काका । अरे काका तुम जैसे सोच वालों के लिये तो सामाजिक कुप्रथाओं को कुचल देने के लिये कमर कसकर आगे आना चाहिये ।कुप्रथाओं को उखाड़कर फेंकने का वक्त आ गया है ।इन बुरी परम्पराओं से फुर्सत पाओ । समाज को आदमी को आदमी होने का सुखभोगने लायक बनाओ । सभी अपने पैर पर खड़े हो मान सम्मान के साथ जीयें । कुप्रथाओ को कुचल देना चाहिये, सांप के फन जैसे न बांस रहे ना बांसुरी बाजे काका ।
मिठाई–हां बेटवा बात तो अच्छी बता रहे हो ।
मायादीन–काका लाग पढ लिख रहे है । दुनिया ने खूब तरक्की की है ।काका कुप्रथाओं को से निजात तो पाना ही होगा । कब तक विषमतआवादियो की परोसी मुट्ठी भर आग के निशान पर आंसू बहाते रहेगे । खदु को कमर कसना होगा तभी बुराईयां दूर भागेगी । काका बुराईयों के दमन का वक्त आ गया है ।जमाना तेजी से बदल रहा है काका ।
मिठाई–बेटा जमाना तो मुझे बदलता हुआ नही दिखाई पड़ रहा है । एक बाल्टी पानी बाबू साहेब के कुयें से एक बाल्टी पानी आज भी नही ले सकते हैं। बाबू साहेब अंजुरी भर पानी की जगह जातिवाद के कलछुले से अंजुरी में आग भर देगे ।कुप्रथायें अपने देश से शायद ही खत्म हो पाये ।

बड़ी-बड़ी कुर्सियां तो जातिवाद की बैसाखी के सहारे तो नेता लोग कबाड़ रहे है । जातिवाद के शिकार तो हम सभी है । अखबारों में अत्याचार का काला चिट्ठा तो रोज ही छप रहा है । कहीं बलात्कार,कहीं जूते चप्पल पहनकर निकलने पर प्रतिबन्ध कही दूल्हे को घोड़ी पर चढ़ने पर प्रतिबन्ध इतना ही नही स्कूलों में बच्चों को अलग अलग भोजन परोसा जा रहा है जबकि यह योजना तो सरकार की है यहां भी जातिवाद । बेटा स्कूलों में जातिवाद कुप्रथाओं का ही तो नतीजा है । बेटा तुम्हारे साथ क्या अच्छा हुआ है । तुम इतने पढलिखकर भी जातिवाद का दंश झेल रहे हो । तुम्हारी तरक्का बाधित कर दी है सामन्तवादियों ने ।

मायादीन-काका मैं भी दंश झेल रहा है। आपकी बात मे सच्चाई है पर काका हाथ पर हाथ धरे बैठने से भला तो नही होने वाला है ना । पहले अपने घर से शुरूवात करनी होगी ।

मिठाई-बेटा तुम्हारी बात तो मैं समझ गया । मेरी गुडी का ब्याह रूकने से तो न बालविवाह की कुप्रथा खत्म होगी ना ही जातिवाद ।

मायादीन-काका क्या कह रहे हो बालविवाह के पीछे जातिवाद है ?

मिठाई-हां बेटा।असली जड़ तो जातिवाद ही है ।जिस दिन जातिवाद मिट जायेगा ससार सामाजिक बुराईयां मिट जायेगी । पहले तो चार साल से छोटे बच्चों का ब्याह भी हो जाता था । कभी कभी तो बच्चा पैदा होने से पहले बात पक्की हो जाता थी । कमजोर तबके के लोग जल्दी से जल्दी अपनी बेटी को जातिपूत को सौपकर गंगा नहाना चाहते थे ।

मायादीन-ऐसा क्यों काका ?

मिठाई-मां बाप का अपनी इज्जत बचाने के लिये बालविवाह करना जरूरी हो गया था । बेटा छोटी बिरादरी के लोगों के सामने यही एक सुरक्षित उपाय था जिससे उनकी बहन बेटियों की इज्जत बचायी जा सकती थी ।बेटा जब देश गुलाम था तब भी कमजोर तबके के लोगों पर गाज गिरती थी आज भी उन पर ही गिर रही है ।शोषित आज भी आजाद नही है और नही सुरक्षित है । पुराने समय में तो चारों तरफ से भेड़िया छोटे लोगों की इज्जत पर कुदृष्टि जमाये रहते थे । खैर आजकल थोड़ा कम तो हुआ है अत्याचार पर वंचितों को सम्मान से जीने का हक तो नही मिल सका है । भले ही कितने कानून बने हो पर सच्चाई तो यही है कि छोटे बिरादरी के लोगों पर अत्याचार कम नही हुआ है । बेटा जब अंग्रेजो का राज था और जमीदारों की तूती बोलती थी तब बालविवाह हम कमजोर तबके लिये अपनी इज्जत बचाने के लिये अच्छी परम्परा थी ।

मायादीन-काका तुम्हारी बात सुनकर मुझे बालविवाह के रहस्य का पता चल गया पपरन्तु काका पुराने जमाने में अंग्रेजों का राज था सामन्तवादियों के अत्याचार करने की पूरी छूट थी अब तो देश आजाद हो गया है कानूनी तौर पर सबको बराबर का हक है ।

मिठाई-काका सब कागज में कैद है । जातिवाद और रूढिवादी कुप्रथाओं का प्रचलन तो यही कहता है। भूमिहीनता और दरिद्रता तो कमजोर तबके की छाती पर आज भी सांप की तरह लोट रही है । बेटा जब तक जातिवाद खत्म नही होगा भारतीय समाज में सामाजिक बुराईया खत्म नही हो सकती । चाहे बाल विवाह हो या कोई और कुप्रथा ।

मायादीन-काका तुम्हारी बात में सच्चाई तो है आने वाला समय जातिवाद को नकार देगा । आने वाली पीढी जातिवाद के चक्रव्यूह में नही उलझेगी उसके सामने तो बस एक ही लक्ष्य होगा उज्जवल भविष्य ।यही लक्ष्य सारी कुप्रथाओं को रौद देगा । जातिवाद की दीवारे ढहा देगा । हमे भी तो अपनी ओर से पहल करनी होगी । जातिवाद के खिलाफ बालविवाह के खिलाफ और दूसरी बुराईयों के खिलाफ एक होना होगा ।

मिठाई- हां बेटा । सामाजिक सम्मान के लिये तो जरूरी हो गया है ।

मायादीन-विज्ञान के युग में सामाजिक बुराई जवान है बड़े दुर्भाग्य की बात है ।

मिठाई–बेटा जातिवाद के साथ ही पितृ सत्ता में बालविवाह को बढावा दे रही है ।जातीय बड़पन वंश और ना भी ढेरों अहंकार की बलिबेदी पर बेटियां चढ रही है ।अर्न्तजातीय विवाह की राह में जातीय दम्भ बड़ी रूकावट है ।जातिवाद सामाजिक समानता,सदभावना पनपने नही दे रहा है । बेटा जातिवाद पर जोरदार प्रहार हो जाये तो बालविवाह की कुप्रथा खत्म हो जायेगी ।
मायादीन–विवाह दो आत्माओं का पवित्र मिलन न होकर जातीय दम्भ और खानदानी प्रतिष्ठा का सौदा हो गया है ।
मिठाई–हां बेटवा ।
मायादीन–काका लोग बालविवाह और जातिवाद की बुराईयों को समझने लगे है । बदलाव तो आयेगा ।
मिठाई–अभी शदियां लगेगी ।कानून का पालन करवाने वाले भी तो किसी ना किसी जातीय दम्भ के वशीभूत होते है ।जाति के तराजू पर आदमी को पहले तौला जाता है कानून का पायजामा बाद में पहनाया जाता है । तभी तो आजादी के इतने बरसों बाद कुप्रथायें और रूढियां खत्म नही हुई है ।
मायादीन–धीरे धीरे सब सामन्य हो जायेगा भेदभाव की दीवार ढह जायेगी । काका जातिवाद बहुत पुरानी बीमारी है ।देखो न आजकल कोर्ट मैंरेज का चलन शुरू हो गया है । प्रेम विवाह भी अस्तित्व में आने लगा है । इसके कुठराघात से जातिवाद और दहेज भी नही बंच पायेगा काका ।
मिठाई–बेटा सजातीय प्रेमविवाह को ही कुछ मान्यता मिल पाती है । विजातीय प्रेमविवाह तो खूनखराबे की दास्तान लिख रहा है ।बेटा सजातीय विवाह दहेज जैसी कुप्रथा का पोषक भी तो है ।
मायादीन–काका बहुत घुमावदार बात कर रहे हो ।बालविह जातिवाद को बढावा देता है और जातिवाद दहेजप्रथा को ।
मिठाई–हां बेटा एक बुराइ्र दूसरी बुराई को ही जन्म देगी ना । यदि बुराईयों से बचना है तो बुराई को खत्म करना होगा ।
मायादीन–काका आपके कहने का मतलब है कि भारतीय समाज में सी बुराईयों की जड़ जाविद है ।
मिठाई–हां बालविवाह रोकना है तो जातिवाद खत्म करना होगा ।अब मैं चलता हूं बहुत काम पड़ा है ।
मायादीन–काका हुक्का तो पी लो ।
मिठाई–बेटा मुझे जाने दो । मेरी आंख खुल गया है । काश जातिवाद के दम्भियों की खुल जाती ।
मायादीन–क्या कह रहे हो काका ।
मिठाई–ठीक कह रहा हूं बेटा ।
मायादीन–मतलब.......
मिठाई–बेटा तुम गुड़िया की डोली उठाने का इन्तजाम करों और मैं गुडी की डोली रोकने का । बालविह रोकना है ना बेटवा ।

घरोही

कुतरीदेवी–बेटा सुर्तीलाल तुम्हारी घरोही सांप बिच्छू की स्थायी निवास हो गयी है । कुछ लोग तो भूतहाघर कहने लगे है ।आसपास वाले का तो अतिक्रमण भी शुरू हो गया है ।
सुर्तीलाल–काकी ज्रगह की तंगी की वजह स दूर बस झोपड़ी डालकर रहले लगा कि भाईयों को घर बनाने की जगह बनी रहे । पिताजी ना जाने कौन से परदेस चले गये कि लौट कर आये । दंबगो ने छल बल के भरोसे सारी खेती की जमीन हड़प लिये ।बीसा भर घरोही थी उस पर भी नजर आ टिकी है ।क्या करूं काकी ।

कुतरीदेवी–तेरा दद्र समझती हूं । तेरा बाप को दबंगो ने देश निकाला दे दिया। पखण्डी लेखपाल ने सारी जमीन लिप पोत दी । पखण्डी ने तुम्हारे बाप का जीना मुश्किल कर दिया था ।बेचारे अत्याचारियों के खौंफ से गांव छोड़ दिये फिर कभी ना लौटे ।
सुर्तीलाल–काकी पुराने घाव ना खुरच । घरोही के बारे में कुछ कह रही थी ।
कुतरीदेवी–बेटा तू कहता तो तुम्हारी घरोही की खाली जमीन पर गोबर पाथ लिया करती । परिवार की जमीन पर दूसरे कब्जा कर रहे है । देखा नही जाता । तुम्हारी घरोी की चिन्ता मुझे सता रही है । बेटा मैं नही चाहती की कोई कब्जा करे । अगर मेरी बात अच्छी लगे तो मुझे गोबर पाथने भर की जगह दे दो ।
सुर्तीलाल–काका घरोही तो मां बाप की निशानी है । जन्मभूमि तो जान से प्यारी होती है कैसे दे दूं ।
कुतरीदेवी–मैं एकदम से थोड़े ही मांग रही हूं । बस गोबर पाथने भर को मांग रही हूं इससे तुम्हारी घरोही की रखवाली हो जायेगी । अगर ऐसा ही रहा तो एक दिन सब आसपास वाले कब्जा कर लेगे हाथ मलते रह जाओगे ।
सुर्तीलाल–कैसे कोई हड़प लेगा चार नीम के पेड़ मां बाप की यादे है ।
कुतरीदेवी–बेटा देख तेरे भले की सोच रही हूं घरोही का तेरे पास कोई कागज तो नही है ।मैं पूरी देखभाल करूंगी तनिका चिन्ता ना करना । किसी को भर आंख देखने तक नहीं दूंगी ।बस मुझे गोबर पाथने और गोरू चउवा बांधने की इजाजत दे दो बेटा सुर्तीलाल । मान जा मेरी बात ।बाप दादा की इतनी बड़ी खेतीबारी चली गयी बीसा भर घरोही है वह भी कोई किसी दिन हड़प लेगा ।
सुर्तीलाल–काका डर लग रही है । मां बाप आत्मा उसी घरोही में बसी होगी । कैसे तुमको सौंप दूं ।
कुतरीदेवी–बेटा तेरी घरोही तेरी रहेगी । हमें कब्जा नही करना है । मैं तो बस इतना चाहती हूं कि तुम्हारे बापदादा की निशानी बची रहे ।
सुर्तीलाल–काकी गोबर पाथने में गोरूचउवा बांधने में कोई दिक्कत नही है पर तेरे बेटो की नियति में खोट आ गयी तो ।काकी चार बीसा जीमन है घरोही की ।
कुतरीदेवी–ना बेटा ना मेरे बेटे मेरी जबान कभी नही काटेगे ।
सुर्तीलाल–काकी खून के रिश्ते की हो देखना विश्वास नही तोड़ना ।
कुतरीदेवी–यकीन कर बेटा ।खून के रिश्ते की छाती में भाला घोपकर क्या चैन से मर सकूगी ।बेटा मुझे नरक जाने का कोई इरादा नही है नही तुम्हारी घरोही हड़पने को । परिवार को इसलिये तुमसे अपने मन की बात कह दी । देना ना देना तुम्हारी मर्जी घरोही तो तुम्हारी है ।
सुर्तीलाल–तेरी जबान का विश्वास तो मैं कर लूंगा पर तेरे बेटे तेरी जबान काट दिये तो ।
कुतरीदेवी–बेटी ऐसी नौबत नही आयेगी ।मैतुम्हारी मुट्ठी में आग नही भरूंगी नेकी के बदले ।
सुर्तीलाल–पाथ ले गोबर बांध ले गोरू चउवा पर काकी नियति खराब नही करना । अगर नियति खराब की तो मेरी घरोही पर कोई सुख से नही रह सकेगा । एक गरीब का ब्रहम मुहुर्त में कहा गया वाक्य खाली नही जायेगा ।
कुतरीदेवी–हां बेटा जानती हूं आजकल तुम्हारी जबान पर ब्रहमा बैठते है । तुम्हारी विश्वास नही टूटेगा ।
सुर्तीलाल–विश्वास तोड़ने वाले हमेश तकलीफ में रहते है । यहां तक की दीया बत्ती करने वाले नही बचते काकी तू तो जानती है इतिहास भी गवाह है । जा तुमको गोबर पाथने भर के लिये घरोही का उपयोग कर काकी ।

कुतरीदेवी–सुखी रह बेटवा कहते हुए घर गयी । आसपास वालों को सुनाते हुए दूर से आवाज लगाते हुए बोला ला धोखू बेटा फरसा सुर्तीलाल की घरोही के सामने का घासफूस सांफ कर दे कल से यही गोबर पाथना है । गोरूचउवा भी यही बांधेगे ।
धोखू– क्या कह रही हो माई सुर्तीलाल भईया गोबर पाथने देगे क्या ?
कुतरीदेवी–हां क्यों नही घण्टा भर से तो सिफारिस कर रही थी सुर्तीलाल की । मानता नही तो क्या करता ।ऐसी घड़ियाली आंसू रोयी हूं कि उसका दिल पसीज गया है ।एक दिन ये घरोही अपनी होगी धोखू ìाले ही खून बहाना पड़े ।
धोख–माई भइया की घरोही अपनी कैसे होगी ।
कुतरीदेवी–चुपकर मूरख कोई सुन लेगा । घासफूस काटकर साफ कर और कचरा सुर्तीलाल की बंसवारी में डाल दे। बंसवारी को भी कब्जे में एक दिन लेना है ।
धोखू–मां तू तो अपनी मोहरे चलती रहना हमे तो झूला डालने के लिये नीम का पेड़ मिल गया । नागपंचमी के दिन यही झूला डालूंगा । सुर्तीलाल भइया के बच्चों को भी लाकर झूलाऊंगा ।
कुतरीदेवी–जो करना दिल खोलकर करना ।अब तो तुमको करना बाकी है । मुझे जो करना था कर दी ।अभी तो मेरा हाथ बंटाओ । फरसा से जमीन जमीन छिल कर बरोबर कर दो । मैं खटिया डालने के लिये गोबर डाल देती हूं । दो घण्टे भर में तो कुतरीदेवी ने बिल्कुल साफ कर दी ।
मां का हाथ मशीन की तरह चलता देखकर धोखू बोला सब काम आज कर डालोगी क्या माई । कुछ कल के लिये भी तो छोड दे । मैं तो थक गया हूं ।
कुतरीदेवी–कल सुर्तीलाल बदल गया तो । साफ सफाई हो गयी चार खांची घूर में से गोबर उठाकर ला बेटा आज कुछ उपले बनाकर खड़ा कर देती हूं ।
धोखू–ठीक है माई जैसा कहो वैसा करूंगा ।
कुतरीदेवी ने शाम होते होते गोबर पाथकर उपले भी खड़े कर लिये ।दूसरे दिन से तो आसपास वालों का आनाजाना बन्द करने लगी जैसे सुतीध्लाल की घरोही उसने खरीद ली हो ।आसपास वालो को कुतरीदेवी का नियति में खामी दिखी ।हर आदमी कुतरीदेवी से पूछता क्या सुर्तीलाल ने घरोही तुमको दे दी ।
कुतरीदेवी– हंसहंसकर हां में जबाब देती ।
कुतरीदेवी आसपास वालों का सवालो से वह तंग आकर रात के अंधियारे में हैरान परेशान का स्वांग रचकर सुर्तीलाल के पास पहुंची ।
सुर्तीलाल बोला क्या हुआ काकी किसी से झगड़ा करके आ रही हो ।
कुतरीदेवी–हां बेटा देखो हरहिया और उसके परिवार के लोग मारने के लिये दौड़ा रहे है बीच घरोही से रास्ता मांग रहे है ।
सुर्तीलाल–काकी बीच घरोही से रास्ता कैसे दे सकते है ।बाप दादा की निशानी किसी को कैसे हड़पने दूंगा ।
कुतरीदेवी– बेटा तू चिन्ता ना कर किसी की दाल नही गलने दूंगी तू तो बस चार छः बासं मुझे दे दे। बांस का पैसा भले ही ले लेना । मैं दे दूंगी फोकट में नही मांग रही हूं सुर्तीलाल ।बाउण्डरी बना देती हूं। हरमजादो का रास्ता बन्द कर देती हूं ।देखती हूं कौन क्या करता है । अरे राहजनी तो नही मची है कि कोई किसी की घरोही पर जर्बदस्ती कब्जा कर लेगा ।
सुर्तीलाल–काकी ऐसे कैसे हो सकता है कि मैं बीच घरोही में से रास्ता दे दूं ।
कुतरीदेवी–बेटा तू चिन्ता ना कर तेरी घरोही की ओर कोइ आंख उठाकर मेरे जीते जी देख भी नही सकता है ।
सुर्तीलाल–चल देखता हूं कौन मेरी घरोही के बीच से रास्ता मांगता है ।

कुतरीदेवी–ना बेटा तू ना चल तू तो वेसे ही मुसीबत का मारा है । मैं देख लूंगी । तू तो बस कुछ बांस दे दे ।
सुर्तीलाल–जा काकी बंसवारी से जितना बांस लगे बाउण्डरी में काट ले । काकी अकेला आदमी किस किस से झगड़ा करूंगा ।
कुतरीदेवी–बेटा झगड़ा लड़ाई से कुछ मिला है । किसी के बाप की जमीन तो है नही कि जो मुंह उठाकर आये तुम उसे दे दो ।
सुर्तीलाल–जा काकी मेरी बंसवारी से बांस काटकर कर लो बाउण्डरी । कुछ नीम के पौधे लगाकर आया हूं` भी बंच जायेगे ।बकरी नही खायेगी बाउण्डरी हो जाने से ।
कुतरीदेवी–बाउण्डरी हो जाने से उपले भी उधमी बच्चे नही तोड़ेगे । ओसाई मड़ाई का काम भी कर लिया करूंगी ।
सुर्तीलाल–ठीक है काकी कर लेना ।
धीरे धीरे दस साल बित गये । कुतरीदेवी का बेटा धोखू बालबच्चेदार हो गया । कुतरीदेवी के मन में पाप घर कर गया वह एक दिन गोधूलि बेला में रोनी सूरत बनाकर सुर्तीलाल के घर गयी और बोली बेटा एक मंड़ई डालने की इजाजत दे दो जब तुमको जरूरत होगी तो हटा लूंगी ।
सुर्तीलाल –काकी मेरे भी बाल बच्चे है चार भाईयों का परिवार है आज बाहर हे कल आयेगे तो उनको भी तो जरूरत होगी घरद्वार की । कैसे मंड़ई रखने दूं । ना काकी ना मंड़ई तो रखने की बात ना करो ।
कुतरीदेवी गरज कर बोली मंड़ई तो डालकर रहूंगी ।देखती हूं कैसे रोकता है ।
सुर्तीलाल–काकी तू क्या कह रही है मेरे बाप दादा की विरासत तो यही घरोही बची है । उस पर भी तुम जबरिया कब्जा करने की कह रही हो ।काकी घरोही तो हमारे लिये देवस्थान के बराबर है । तू हड़पना चाह रही हो । इसके लिये तो मेरी लाश पर से तुमको गुजरना होगा ।
कुतरीदेवी–सुर्तिया जरूरत पड़ी तो वह भी कर सकती हूं ।घरोही पर मेरा कब्जा है पूरी बस्ती जानती है जोर जोर से चिल्ला चिल्लाकर कहने लगी ।
सुर्तीलाल– काकी मेरे बाप दादा की आखिरी निशानी पर तेरी गिध्द नजर पड़ गयी ।काकी मेरी यकीन को ना तोड़ मैने तेरे उपर विश्वास किया तू धोखा दे रही है ।
सुर्तीलाल की बात सुनते ही कुतरीदेवी झूठमूठ में जोर जोर से रोरोकर कहने लगी देखो बस्ती वालो सुर्तीलाल मुझे बेइज्जत कर रहा है । मेरी साड़ी फाड़ रहा है । झूठमूठ में बखेड़ा खड़ाकर रोते हुये अपने घर की ओर भागने लगी ।बस्ती वालो कुतरीदेवी की करतूत पर थू–थू कर रहे थे । दूसरे दिन सुबह अच्छे,कच्छे,सन्पति,जीवा,घिसुन जैसे और कुछ बदमाश किस्म को लेकर सुर्तीलाल की बांस की खूंटी से ढेर सारे बांस काटी और सुर्तीलाल की घरोही पर मड़ई रखकर जबरिया कब्जे की तैयारी कर ली ।कुतरीदेवी की करतूत की भनक सुर्तीलाल को लगी वह घरोही पर गया । कुतरीदेवी उसे देखते ही हंसिया लेकर मारने दौड़ पडी । कुतरीदेवी के आदमी लाठी डण्डा लेकर मारने के लिये दौड़ पड़े । बेचारा सुर्तीलाल जान बचाकर भागने लगा । इतने में एक बड़ा से ईंट का टुकड़ा उसके सिर पर लगा और सिर से खून की धार फूट पड़ी । वह बड़ी मुश्किल से जानबचाकर घर पहुंचा। खून में लथपथ देखकर सुर्तीलाल की घरवाली और उसके बच्चे रोने लगे ।उधर कुतरीदेवी अपना ब्लाउज साड़ी फाड़कर थाने पहुंच गयी । बेचारा सुर्तीलाल गांव के प्रधान और अन्य बाबू लोागें के सामने अपने बापदादा की आखिरी निशानी पर कुतरीदेवी के जबरिया कब्जा हटवाने की गुहार लगाया पर गरीब की किसी ने न सुनी । कुतरी देवी सुर्तीलाल के खिलाफ छेड़छाड़ का केस कायम करवा दी । पुलिस भी सक्रीय हो गयी । कुतरीदेवी का कब्जा हो गया । सुर्तीलाल की घरोही पर जबरिया कब्जा करके कुतरीदेवी मददगारों और असामाजिक तत्वों को भोज भी दे दी ।

सुर्तीलाल के सारे प्रयास विफल हो गये । प्रधान और बड़े लोग सुर्तीलाल को डांट्ते कहते तुम छोटे लोग तनिक तनिक बातों में लड़ने मरने लगते हो । भुगते कौन भुगतेगा । सुर्तीलाल कहता मैंने तो कुतरीकाकी को खून के रिश्ते की वजह से उसकी मदद किया था पर काकी ने तो मेरी घरोही छिनकर बेईमान के चिमटे से मुझे मुट्ठी भर आग दिया है । क्या यही न्याय है । बाबू लोग कहते जैसा किये हो भरो जब कुतरीदेवी को गोबर पाथने की इजाजत दिया था तो किसी से पूछा था । आज फंसी है तो बाबू लोग याद आये है । सुर्तीलाल कुतरीदेवी के बुने जाल में एकदम फंस गया । उसका टट्टी पेशाब के लिये भी घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया । कुतरीदेवी जान से मारने तक साजिश रच चुकी थी । एक दिन सुर्तीलाल हत्थे चढ गया । कुतरीदेवी के गुण्डे पीछे पड़ गये । वह आगे पीछे मौत को देखकर हिम्मत करके खड़ा हो गया । कुतरीदेवी सादा कागज लेकर आयी बोली ले सुर्तीलाल अंगूठा लगा नही तो जान से जायेगा या जेल में सड़ेगा पुलिस भी आती होगी ।

सुर्तीलाल बोला–काकी कैसे अपने पुरखों से गद्दारी कर दूं ।

कुतरीदेवी– पुलिस को आता देखकर जोर से बोली बदमाश एक तो बुरी नजर डालता है दूसरे काकी कहता है । देखो कैसे भींगी बिल्ली सरीखे बोल रहा है । इतने में पुलिस के दो जवान आ गये । कुतरीदेवी बोली लो हवलदारसाहब मुजरिम आ गया है पकड़ में । यही बलात्कार की कोशिश करने वाला सुर्तीलाल ।साहब मेरे साथ बहुत बुरा सलूक किया मेरा ब्लाउज फाड़ दिया मैं इज्जत बचाकर भागी थी ।

सुर्तीलाल–साहब ये काकी मेरी घरोही हड़पने के लिये साजिश रची है । मां समान काकी को बुरी नजर से देख सकता हूं ।

हवलदार–क्यों बे तू सही कह रहा है ।

सुर्तीलाल–हां साहब बिल्कुल सही कह रहा हूं । कुतरीकाकी मेरी ही घरोही पर मेरी ही बंसवारी से बांस काटकर जबरिया कब्जा कर रही है ।

हवलदार–क्या ?

सुर्तीलाल–हां साहब ।

कुतरीदेवी–साहब सुर्तिया झूठ बोल रहा है । मै अपनी जमीन पर मड़ई डाली हूं । ये सारे लोग है पूछ लो साहब.....

हवलदार–वहां हाजिर एक एक से पूछे सभी ने कहां कुतरीदेवी की घरोही है ।

कुतरीदेवी– और गवाही तो नही चाहिये साहब......

हवलदार–देखो सुर्तीलाल सुलहा कर लो । क्यो जेल में सड़ना चाहते हो बलात्कार का केस है । कागज पर अंगूठा लगा दो ।

सुर्तीलाल की कोई सुनना वाला न था वह आगे खाई पीछे मौत देखकर रोते हुए अंगूठा लगाते हुये बोला कुतरीकाकी हमारी घरोही तुमको आंसू के अलावा और कुछ न देगी । बाप दादा की विरासत में छोड़ी गयी घरोही पर कुतरीदेवी का जबरिया कब्जा हो गया । हवलदार बोला कुतरीदेवी मालिकाना हक भी तुम्हारे पास है । हमे साहब के सामने हाजिर होना है । समझ गयी ।

कुतरीदेवी न हवलदार को साहब के सामने हाजिर होने की शक्ति जेब में भर मुट्ठी डाल दी । हवलदार लोग मूछ पर हाथ फेरते हुए थाने की ओर चल पड़े । तनिक भर में भीड़ छंट गयी ।

कुतरीदेवी के उपर दैवीय प्रकोप शुरू हो गये । कुतरीदेवी के बेटे धोखू की बुढौती की लाठी टूट गयी। बेटा धोखू पागल सा हो गया । कुतरीदेवी को जीते जी कीड़े पड़ गये । बहुत दुख भोगकर मरी । सुर्तीलाल भर भर अंजुरी यश बटोर रहा था । कुतरीदेवी की साजिश में शामिल वही लोग जो सुर्तीलाल के उपर लांछने लगवाये थे घरोही पर कुतरीदेवी का कब्जा करवाये थे वही लोग यह

कहते नही थक रहे थे कि बेईमानी नरक के द्वार खोलती है । देखो सुर्तीलाल का ब्रहममुहर्त में कहा गया ब्रहम वाक्य खाली नही गया । नेक और सच्चे आदमी की मदद ईश्वर करते है, मतलबी आदमी भले ही बद्नियति के चिमटे से क्यों न ईमानदार,सच्चे और कर्मठ आदमी की मुट्ठी में आग भरे ।

गज भर कफन

धनिया दादी मर गयी । यह खबर पूरे गांव में जंगल की आग की तरह फैल गयी।वही तो थी एक धनिया दादी जो किसी के घर नातहित आने या परदेसी के आने की खबर सुनकर तुरन्त पहुंच जाती थी भले ही बहु बेटे भला बुरा कहे । इससे वे बेखबर रहती थी क्योंकि बेटे बहुओं का भला बुरा सुनने की आदत जो पड़ गयी थी । घर में उनकी कोइ्र्र सुनने वाला भी तो न था । जगु दादा साल भर पहले ही तो धनिया दादी को छोड़कर भगवान के पास चले गये । जगु दादा के मरते ही धनिया दादी के इतने बुरे दिन आ गये थे कि भर पेट रोटी के लिये तरसने लगी थी दो दो जवान कमासुत बेटे के रहने के बाद भी कभी कभी तो फांके में दिन बिताने पड़ते थे पर धनिया किसी से कुछ न कहती । औलादें सुख की रोटी देने बजाय बेचारी विधवा धनिया दादी हाथों पर जैसे आग परसती हो । बेचारी चुपचाप औलादों का जुल्म सहती रहती । तन्दुरूस्त और खुश रहने वाली धनिया दादी पर जगुदादा के मरते ही मुसीबतों का पहाड़ गिर पड़ा ।बेटे बहुये एकदम से नजर फेर लिये ।इन्ही बेटों के लिये धनिया दादी संयुक्तपरिवार से अलग हुई थी । दुनिया की सभी सुविधाये अपने बेटो को उपलब्ध कराती थी ।बेटों की नादानी को जगुदादा क नही पहुंचने देती थी । जगुदादा शहर में अच्छी नौकरी करते थे । धनिया दादी बेटों के आगे बढने के लिये हर सम्भव प्रयास करती दोनो बेटों को बड़ा अफसर बनाना चाहती थी ।दो बेटे ही तो थे बेटी एक भी न थी दहेज का भय भी न था । बस यही उद्देश्य था कि बेटे पढ़लिखकर बडे अफसर बन जाये। जगुदादा भी बेटों की हर फरमाईश पूरा करने के लिये एक पांव पर खडे रहते थे ।धनिया दादी भी तनिक कम ना थी बेटों के खाने की भर थाली में तैरता घी उन्हे सकून देता था । वही बेटे जुल्म पर उतर गये हट्ठी कट्ठी धनिया दादी भूख से मर गयी ।

जगुदादा रिटायरमेण्ट के बाद गांव आकर खेती करने लगे थे । बंजर भूमि में भी अनाज पैदा करने लगे थे । रूपया बेटों पर खर्च करते रहे पर कोई उम्मीद पर खरा नही उतरा । धीरे धीरे सारा रूपया सरक गया ।जगु दादा की आंखे ने धोखा देनेलगी और घुटने भी भार उठाने में थकने लगे ।इसके बावजूद भी जगुदादा खेती के कामों में लगे रहते । धनिया दादी बार बार समझाती पर वे नही मानते कहते जब तक हाथ पांव चल सकता है तब तक चलाऊंगा । जगुदादा से दूसरों का बुरा नही देखा जाता था । जहां बुराई देखे झट उठ खड़े हो गये । सुबह शाम हुक्का खूब गुड़गुड़ाते थे हां खाली समय में भी तनिक परहेज नही करते थे ।कभी कभी धनिया दादी से नोकझोंक हो जाती थी तो वे बोलना बन्द कर देते थे पर धनिया दादी जहां खाने की थाली आगे रखे गुस्सा दूर कहते क्या तू आज मुझे खुश करने के लिये व्यंजन बनायी है । बहुत खुशबू आ रही है भले ही चटनी रोटी ही क्यों न हो ।

धनियादादी कहती अरे पहली बार तो नहीं बनायी हूं । तुम्हारी रोटी बनाते बनाते आंख भी जबाब दे रही है ।

जगुदादा- अरे हमे कहां अंधेरे में दिखता है ।

धनियादादी- खाना खाओ । हमें तो दिखता है ।देखो अब ना आंख दिखाना । मैं लड़ने की मूड में तनिक भी नही हूं ।

जगुदादा-भागवान हमें क्या सींघ जमी है कि लड़ूगा वह भी तुमसे कल से रोटी बन्द कर दी तो।किसके सामने हाथ फैलाऊंगा । अब तो खाना खिला दी एक और उपकार कर दे ।

धनियादादी–वह क्या..... ?
जगुदादा–हुक्का भागवान और क्या.......... ?
धनियादादी–रोटी पेट में गयी नही हुक्का की तलब ।
जगुदादा–खाने के बाद हमे ही नही तुमको भी लगती है । जरा जल्दी ला दे खेत देखकर आता हूं ।
धनियादादी–हुक्का पी लो थोड़ी आराम करो क्यों बूढी हड्डियों को थूर रहे हो ।बहू बेटो ने ठुकरा दिया जीवन की आखिरी बेला में । अपनी तन्दुरूस्ती का भी तनिक ख्याल रखा करो । खटिया पर पड़ गये तो कौन पूछेगा। दो रोटी के लिये नस्तवान हो जायेगे ।आंख से वैसे ही कम दिखाई देने लगा है ।बुढौती की गाड़ी खुद को खींचना है कोई सहारा देने वाला नही है ।बेटवा पतोहूं तो जैसे सिर में जू निकाल कर फेंके वैसे ही फेंक चुके है ।
जगुदादा–अरे क्यो कल की सोच कर आज परेशान हो रही है ।इतने बुरे तो अपने कर्म नही रहे कि खटिया पर पड़े पड़े रिरकेगे । भगवान की मर्जी के सिवाय कुछ नही होने वाला है । वही जैसा चाहेगा वैसा करेगा । हमने बेटों के पालन पोषण शिक्षादीक्षा में कोई कमी तो नही छोड़ी वही दुत्कार दिये तो और किसका भरोसा करे भगवान के अलावा ।जब तक हाथपांव चल रहा है तब तक को चलाते रहना होगा पेट परदा चलाने के लिये। आखिरकार धनियादादी को जगुदादा की बात माननी ही पड़ती जगुदादा भी तो ततर्कसंगत बात करते थे । धनियादादी ही क्या पूरे गांव के लोग उनकी बात मानते थे ।
धनियादादी– तन्दुरूस्ती देखकर काम किया करो ।शरीर को आराम तनिक दिया करो ।
जगुदादा–आराम अपनी किस्मत में लिखा होता तो बेटे दगा देते कहकर हुक्का का धुंआ हवा में उड़ा देते और धनिया देती से कहते भागवान गम को कम करने के लिये दिल दुखाने वाली बातों को ऐसे ही उड़ा दिया करो ।
जगुदादा की आखे बुढौती के सहारा की रकम अपनी तन्दुरूस्ती पर खर्च करवाकर तनिक रोशनी देने लगी थी । आंखों के आपरेशन के बाद जगुदादा और धनिया दादी की गृहस्ती की गाड़ी खींच रही थी कि जगुदादा के पेट में अचानक जानलेवा दर्द शुरू हो गया । गांव के नीमहकीमों की दवा बहुत दिनों तक खायें कोई आराम नही हुआ । थक हारकर मेहनगर के पास एक डांक्टर से इलाज शुरू करवाया । महीनों के इलाज के बाद कोई आराम नही हुआ तब डांक्टर ने आपरेशन की सलाह दी दर्द में तड़प रहे जगुदादा आपरेशन करवाने को तैयार हो गये । आपरेशन हो गया पर क्या घाव सुखने की बजाय पकना शुरू हो गया । देखते ही देखते कीड़े पड़ गये पूरा पेट सड़ंने लगा ।जगु दादा नीम हकीम के चक्कर में फंसकर एक दिन दुनिया को अलविदा कर गये भरा पूरा परिवार होने के बाद भी धनियादादी लावारिस हो गयी ।
बेचारी धनिया दादी के उपर मुसीबतों का पहाड़ गिर पड़ा। जगुदादा के कमाये अन्न धन से धनियादादी जगुदादा का क्रियाकर्म पूरा की। जगुदादा के मरते ही धनियादादी बीमार रहने लगी । रोटी बनाये तो खाये कोई ण्क गिलास पानी तक देने वाला नही था जबकि बेटे बहूं सब एक ही हवेली घर में रहते थे । पहली पितृविसर्जन के दिन बेटे बहुओ की राह ताकते ताकते थक गयी तो खुद दौड़धूप कर बाजार हाट से सरसमान लाकर जगुदादा के पसन्द की व्यंजन बनाकर दोनी निकाली थी जबकि यह विधान बेटें को सम्पन्न कराना था । बेटो ने तो एक घूंट पानी भी नही गिराया बाप के नाम पर ।
मुसीबत की मारने धनियादादी को लाचार कर दिया । बेटे बहुओ का जुल्म बढने लगा उसी धनियादादी पर जिसने सारी पूंजी बेटों को राजा बनाने के लिये स्वाहा कर दी थी आज वो रोटी के लिये तरसने लगी थी ।जगुदादा की चोरी बेटों को एक रूपये की जरूरत होने पर दो दे देती ।आज

वही धनिया पेट की भूख से तड़पने को विवश थी । धनिया दादी की दुर्दशा देखकर बस्ती वालों ने दोनो बेटो किशन और बिहारी को खूब लताड़ा । किशन और बिहारी दोनों अपने साथ धनियादादी को अपने साथ रखने को तैयार न थे ।आखिरकार धनियादादी के बंटवारा हो गया हफते हफते भर के लिये दोनो के बेटों के बीच पर धनियादादी को दो चार दिन तो फांके करने ही पड़ जाते थे । बासी–तिवासी रोटी धनियादादी को मिलती । धनियादादी को लगता कटोरी में रोटी नही मुट्‌ठी भर आग परोसी हो पर क्या करे पानी में गीली कर पेट में डाल लेती पर किसी को भनक तक नही लगने देती थी । हुक्की तम्बाकू की शौक आसपड़ोस में बैठकर पूरा कर लेती थी ।

धनियादादी महीने भर बीमार रही । कोई दवादारू का इन्तजाम नही किया बेटो ने न ही उनके खानपान पर ध्यान दिया । बेचारी पेट में भूख लिये मर गयी ।

दोनें बहुये गुणगान कर रो रही थी । दोनो बेटे दो तरफ मुंह करक बैठे थे । धनियादादी का मृत शरीर धूप में सूख रहा था । आकाश में चील कौवे मड़रा रहे थे । दोनो बेटा दाहसंस्कार के जिम्मा एक दूसरे पर थोप रहे थे । कफन दफन के खर्चे से बचने की कोशिश कर रहे थे । गावं वालें की किशन और बिहारी की नियति का पता लग गये वे धनियादादी के कफनदफन के लिये चन्दा इक्‌ट्‌ठा करने में जुट गये । इसी बीच सुरतीनाथ ने कन्हैया को भेजकर धनियादादी के मरने की खबर उसके भाई छमरू तक पहुंचा दी । खबर लगते ही छमरू चार आदमी के साथ आ गये । भांजों की बेरूखी और बेगानापन देखकर दंग रह गये ।गांव वाले धनियादादी के मृतदेह का अन्तिम संस्कार बनारस ले जाकर करने की पूरी तैयारी कर चुके थे । छमरू गांव वालें के प्रति आभार प्रगट करते हुए बोले मेरी बहन मरी है । मैं सारा खर्च वहन करूंगा । भांजों ने तो लाश को गिध्द कौवों को देने का इन्तजाम कर लिया था ।

कुछ ही देर में गाड़ी आ गयी । धनियादादी के मृतदेह का अन्तिम संस्कार बनारस में हुआ । भाई छमरू ने मुखाग्नि दी ।

बस्ती वालों एक दूसरे से कह रहे थे क्या जमाना आ गया है अपनी औलाद जीते भूख से तड़पातड़पाकर मार रही है और मरने पर गज भर कफन तक देने को राजी नहीं हो रही है । कैसे बुढ़ौती कटेगी भगवान ......?

मां बाप औलाद से यही उम्मीद करते है कि उनकी लाश पुत्र के कंधो पर श्मशान तक जाये । इसी दिन के लिये तो खुद तकलीफ सहते है औलाद तक दुख की परछाई भी नही पहुंचने देते है । औलादे खुद को बचाकर बूढे ,लाचार मां बाप के कांपते हाथों में मुट्‌ठी भर भर आग परोस रही है ।

गांव वालों की बाते सुनकर पहलू काका बोले मां बाप धरती के भगवान होते है उन्हे दुख देने वाला कभी भी सुखी नही रह सकता । भगवान के घर देर है अंधेर नही भगवान सब कुछ देखता है । जुल्म करने वाला खुद गवाह होता है जैसी करनी वैसी भरनी । एक ना एक दिन किये का फल मिलेगा । किशन और बिहारी ने जो किया है उसको देखकर कफन भी कराह उठा होगा । ऐसी औलादे रहने से बेहतर है कि आदमी बेऔलाद रहे। औलाद के गज भर कफन के लिये मां की लाश तरस गयी । भगवान ऐसी औलादें किसी को देना कहते हुए पहलू काका बाढ़ रोकने के लिये आंखों पर गमछा डाल लिये।

मरते सपने

चन्द्रप्रकाश खुली आंखों से ख्वाब देखने वाला व्यक्ति था ।उसे बेरोजगारी और विषमता का अनुभव काफी नदीक से था ।वह शिक्षा भी वह विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला करके ही लिया था ।चन्द्रप्रकाश खुली आंखों में ख्वाब और विषमता की मुटठी भर आग में सुलगता हुआ आगे बढने का अथक प्रयास कर रहा था । रात दिन की मेहनत और पेट में भूख लेकर कटुपरिस्थितियों में भी

उसने कई विषयों में दक्षता के साथ तकनीकी योग्यता भी हासिल कर लिया पर नौकरी उससे अछूत समझकर दूर भागती रही या भगा दी जाती रही । उम्र के बत्तीस से अधिक बसन्त बित जाने के बाद एक छोटी सी नौकरी तो मिली ।चन्द्रप्रकाश की सामाजिक और आर्थिक दशा दयनीय थी हां शैक्षणिक रूप से तो काफी सुदृढं हो गया था । इसके लिये उसे दिन में मेहनत मजदूरी करनी पड़ी रात में पढाई । उसकी मेहनत कामयाब रही वह काफी उच्च योग्यताये हासिल कर लिया ।छोटे कर्मचारी चन्द्रप्रकाश की उच्च शैक्षणिक योग्यता दम्भियों और तथाकथितश्रेष्ठ लोगों के लिये उपहास की विषयवस्तु के अलावा और कुछ न थी । चन्द्रप्रकाश चन्दन के पेड़ की भांति सर्पो के झुण्ड में कर्म उजली सुवास छोड़ने का अथक प्रयास करता पर दम्भी लोग छोटा मानकर धकिया देते । छोटे–बड़े के भेद के चिमटे से मुट्ठी भर आग चन्द्रप्रकाश पर फेंकने से भी तनिकी परहेज नहीं करते ।चन्द्रप्रकाश के हृदय पर से गांव के हादसों की छाप धुली तो नही थी । शहर में नये घाव मिल रहे थे परन्तु अपनी धुन का पक्का चन्द्रप्रकाश खुली आंखों के सपने सच करने के लिये आगे बढने की कोशिश में बूढा हो रहा था । चन्द्रप्रकाश की धुन में शामिल था–समता,सद्भाना,परमार्थ बहुजनहिताय और बहुजनसुखाय की सर्वमंगल कामना परन्तु उसकी राह में काटें बिछे हुए थे शदियों से । चन्द्रप्रकाश जीवित आंखों में मरते हुए सपने लेकर आगे बढने को व्याकुल था ।उत्पीड़न,दर्द,अभाव और विषमता के घावों से लहूलुहान चन्द्रप्रकाश की आंखों खुली आंखों का सच साफ साफ झलकता था।

चन्द्रप्रकाश को आंख खुलते ही गरीबी,भेदभाव,शोषण और उत्पीड़न जैसे विरासत में मिल गये थे । उसकी बस्ती के लोग खेतिहर भूमिहीन मजदूर, सामाजिक और आर्थिक रूप से रौंदे हुए थे ।सामाजिक स्थिति कुत्ते बिल्लियों से बुरी थी । तथाकथित सामाजिक रूप से उच्च लोग के घर उनके प्रवेश पर अपवित्र हो जाते थे जिन्हे पानी छिड़ककर पवित्र किया जाता था । इन सारी कुरीतियां भी उसके जीवन पथ में रूकावटे पैदा कर रही थी । घिनौने तेवर दिखाने से बाज भी नही आ रही थी । मानवता विरोधियों द्वारा खड़ी दीवारे उसके बंशजों के अस्तित्व को नस्तानाबूत कर चुकी थी परन्तु चन्द्रप्रकाश शिक्षा के हथियार से खोये हुए अस्तित्व को पाने के लिये शूल भरी राहों पर गिरगिरकर चल रहा था खुली आंखों में मरते हुए सपनों को लेकर । तथाकथित खुद को श्रेष्ठ कहने वालों को अत्याचर करते देखा अपने मां बाप के साथ । उसके दिल सारी भयवाह यादे बसी हुई थी जो बारबार भूलाने की कोशिश के बाद भी नही भूलती थी ।

एक बार चन्द्रप्रकाश भैंस चरा रहा था गलती से भैंस जमींदार के खेत की मेड़ पर चली गयी । जमीदार सेटीबाबू ने चन्द्रप्रकाश को जाति सूचक अनेकों गालियां दी थी। सेटाबाबू की गाली सुनकर चन्द्रप्रकाश के बाप जो पास के खेत में काम कर रहा था बोली बाबू भैंस है मेड़ पर ही तो चढी है । कोइ नुकशान तो नही कि क्यों गन्दी गन्दी गाली बेटवा को दे रहे हो । इतना सुनना था कि सेटीबाबू दौडकर अपनी हवेली गये दो हाथ की तलवार लेकर आये और चन्द्रप्रकाश के बाप दयाराम को जान से मारने के लिये दौड़ा लिये थे भला हो आसपास के खेत मे काम करने वाले मजदूरों का जो इक्टठा होकर दयाराम का बचाव किये थे ।सेटीबाबू की आंख में तैरते खून की तस्वीर चन्द्रप्रकाश की आंखों से धुधली भी नही हई थी कि एक भयावह तस्वीर और जुड़ गयी हुआ यों था कि चन्द्रप्रकाश की मां रामरती जमींदार सूरजनाथबाबू का गेंहू मजदूरी पर काटकर ढो रही थी । बोझ सूरजनाथ बाबू के खलिहान ले कर आ रही थी उसका सिर बोझ में घुस गया दिखायी नही पड़ रहा था । बेचारी अभागिन हन्सी जमीदारन के खेत में पड़ गया । दुष्ट हंसी जमीदारन ने रामरती के सिर से बोझ जर्बदस्ती रास्ते पर पटकवायी और जोर जोर से चिल्लाकर अपने लड़को को बुलायी खुद और बच्चों ने मिलकर रामरती को बुरी तरह पीटा। मार मार कर नही भरा तो हन्सी ने मोटी लकड़ी के डण्डे से उसके गर्दन पर ले तेरा गर्दन तोड़ देती हूं न रहेगा गर्दन ना बोझ ढोयगे । बोझ

नही ढायेगी तो मेरी खेती भी चौपट नही करेगी कहते हुए जोर से मारी । रामरती के गर्दन की हड्डी चटक गयी। बेचारी रामरती जीवन भर गर्दन के दर्द से उबर नही पायी । आखिरकार कराह कराह कर मर गयी ।
बेचारा चन्द्रप्रकाश मां बाप के कठोर परिश्रम और त्याग के भरोसे पढ लिखकर शहर गया जहां उसे गांव की रूढियां चैन नही लेने दे रही थी ।नौकरी की राह बार बार जातीयभेद की बिल्ली काट देती । सात बरस की लम्बी बेरोजगारी के विषपान और उत्पीड़न के बाद नन्हे से ओहदे की नौकरी एक कम्पनी में मिल गयी। नौकरी पाते ही उसके मरते सपनों को जैसे जीवनदान मिलने लगा था ।काफी पढा लिखा चन्द्रप्रकाश निष्ठा और वफादारी के साथ काम करता पर जातिवाद का नरपिशाच यहां भी डंस रहा था । उसकी बेहत्तर कार्यशैली और श्रेष्ठ सदाचारपूर्ण व्यवहार में भी दम्भी शोषकों तनिक रास न आती । चन्द्रप्रकाश तथाकथित जातीय श्रेष्ठ और बड़े ओहदेदारों की आंखों का जैसे चैन छिनने लगा था । तथाकथित श्रेष्ठ लोग चन्द्रप्रकाश के बबार्दी के सपने बुनने लगे थे । इस षणयन्त्र में श्रेष्ठता का ताज जर्बदस्ती अपने सिर रखने वाला चपरासी रहीस पहली पंक्ति में शामिल हो गया था । चन्द्रप्रकाश की खुली आंखों के सपनों पर तलवार लटकने लगी थी । वह खुद को बेबस और अकेला महसूस करने लगा था । उसकी नौकरी पर गिध्द नजरे टिकी हुई थी । चन्द्रप्रकाश उदास रहने लगा था । उसकी समस्या का समाधान नही था । किसी ने किसी रूप में भय और आतंक उसका पीछा कर रहे थे । छोटे से बड़ा ओहदेदार उसे उच्चशिक्षित चन्द्रप्रकाश को मूरख समझता जातीयता की आंधी में बहकर ।चन्द्रप्रकाश के सामने यह कहावत झूठी लगने लगी थी कि असफलता अक्सर निराशावादी दृष्टिकोण में पायी जाती है असफल लोगों को काम और दुनिया से शिकायत रहती है परन्तु यहां तो पढे लिखे कर्मठ तथाकथित जातीय छोटे एवं छोटे ओहदे पर काम करने वाले चन्द्रप्रकाश की उपस्थिति बेचैनी का कारण बनी हुई थी। यही कारण चन्द्रप्रकाश की उन्नति के सारे रास्ते अवरूध्द किये हुए थे ।
चन्द्रप्रकाश के साथ कम्पनी ज्वाइन किये लोग बड़े बड़े अफसर बन गये थे परन्तु चन्द्रप्रकाश वहीं घिस रहा था जहां ज्वाइन किया था । शिक्षित पढें लिखों और खुद को श्रेष्ठ समझने वालों के उत्पीड़न से चन्द्रप्रकाश का चैन छिनने लगा था । कभी कभी तो उसके ख्वाबों में भयाह साजिशों की तस्वीरे उभर आती वह नींद में बचाओ बचाओ चिल्ला उठता था । उसकी पत्नी कर्मावती झकझोर कर जगाती । उसके माथे का पसीना पोछते हुए पोछती क्या हुआ क्यों घबराये हुए हो । कोई बुरा सपना देखा है क्या ? वह कहता भागवान ख्वाब देखने भर तो अपनी चलती है । ख्वाबों में ही तो जी रहे है पर वे भी अब मरने लगे है ।लगता है खुली आंखों के ख्वाब आसूंओं में बह जायेगे ।
चन्द्रप्रकाश के विचार सर्वमंगलकारी थे वह कहता अच्छे विचारों से हम खुद पर उपकार करते है ।जब अच्छे विचारों को जेहन में जगह मिलती है तो तकदीर संवर उठती है । आत्म विश्वास बढता है और जीवन संवर जाता है परन्तु उसके जीवन में तो बेअसर साबित हो रहा है था । हां उसके जीवन में मुश्किलें बढ रही थी जातिवाद और साम्राज्यवाद / सामन्तवाद की फुफकार से ।
चन्द्रप्रकाश में एक जिद थी सच्चाई कहने की । वह बेधड़क सच्चाई कह देता था ईमानदारी के साथ ।वह कहता जातिवाद मनोवैज्ञाानिक,सांस्कृतिक और आर्थि यथर्थ है न कि कोई अमूर्त परिघटना । जातिवाद शोषित पीड़ित जनता के खिलाफ एक युध्द है जिसका उद्देश्य कमजोर वर्ग को डरा धमाकर अपने अधीन बनाये रखना है ।कमजोर वर्ग को आदमी होने के सुख से वंचित करना है । चन्द्रप्रकाश कर्म में विश्वास और आदमियत को श्रेष्ठ धर्म मानता था परन्तु सामाजिक विषमता के पोषको को यह तनिक भी पसन्द न था । सामाजिक विषमता के पोषक कर्म को पूजा और आदमियत को धर्म मानकर जीवन पथ पर चलने वालों की राह में गाड़ने से तनिक भी नही हिचकिचाते । आज के युग में भी जातिवाद और सामन्तवाद / साम्राज्यवाद कमजोर वर्ग की उन्नति

में बाधक है पर विषमता के पोषक मानते ही नहीं ।जातिपांति की कैद में प्रतिभाये दम तोडती नजर आती तो है पर झूठी शान में डूबा विषमतावादी आदमी दोष कमजोर के माथे ही मढता है । निश्चित रूप से समता के पुजारियों द्वारा बनाये गये सामाजिक उत्थान और बदलाव के कार्यक्रम चुनौतियों पर आधारित होते है जिनका विरोध जातीयता के पोषक करते है । परिणामस्वरूप सामाजिक समानता कुचली जा रही है। शोषित पीड़ित व्यक्ति खुली आंखों से मरते हुए सपनों को देखकर आतंकित हैं । श्रेष्ठता के दम्भ में डूबे हुए लोग शोषित जनों की मुट्ठी में उत्पीड़न की आग शान के साथ जाति की तगाड़ी से भर रहे है । यही आग वंचितों को दे रही है सामजिक और आर्थिक तबाही ।

चन्द्रप्रकाश को सामाजिक बाधाये चैन से रहने नही देती । जातिवंश ने देश और समाज को बांटा है । जातिवंश में बिखण्डितों का पानी का रूप धारक लेना चाहिये । यही एकता नवयुग निर्माण का शंखनाद होगी परन्तु खुली आखों का सच ये है कि भेदभाव को धर्म मान बैठे हैं ।जातीय बिखराव दबे कुचले समाज को अवन्नति की ओर धकियाता जा रहा है । चन्द्रप्रकाश अफसर की योग्यता रखने के बाद भी अदना सा कर्मचारी था । इस साजिश में जातिवाद पूरी तरह से शामिल था । उसके बार बार के प्रयास को रौद दिया जाता । कुछ दम्भी अधिकरी तो यहां तक कहते सुने गये कि नीचों को उपर उठाना खुद के पांव कुल्हाड़ी मारना है । जहां तक हो सके अपने बचाव करते हुए छोटों लोगो का मुट्ठी भर आग परोसते रहना चाहिये।इसी में श्रेष्ठसमाज का भला है और उनकी उन्नति निहित है ।

चन्द्रप्रकाश जिस कम्पनी में नौकरी कर रहा था मरते हुए सपनों की सम्भावना की आक्सीजन देते हुए उसी कम्पनी द्वारा खाली पदों के लिये आवेदन आमन्त्रित किये गये ।चन्द्रप्रकाश को उसकी सम्भावनाये आकार लेती हुई दिखने लगी । वह आवेदन किया परन्तु ह सारी योग्यताओं के बाद भी फेल हो गया श्रेष्ठकुल और बड़ी पहुंच के आग उसके सपने दम तोड़ दिये ।कम्पनी में जितने भी मौके आये सारे मौके चन्द्रप्रकाश गंवा बैठा सिर्फ जातीय अयोग्यता के कारण । एक साक्षात्कार में खूबश्रेष्ठा साहब ने तो यहां तक कह दिया कि तुम इस कम्पनी में आ कैसे गये ।

चन्द्रप्रकाश के सिर से उच्च शैक्षणिक योग्यताओं के बाद भी अयोग्यता का अभिशाप उतर नही रहा था । वह बेचैन रहने लगा था । एक दिन दफ्तर से तिरस्कार गहरी चोट लेकर घर आते ही धड़ाम से गिर पड़ा । चन्द्रप्रकाश की पत्नी गीतादेवी घबरा गयी । फूट फूट कर रोते हुए आंचल से हवा करने लगी ।चन्द्रप्रकाश के मुंह से स्वर ही नही फूट रहे थे । चन्द्रपकाश की दशा देखकर गीतादेवी बोली –क्यों दुनिया भर के दर्द पी जाते हो ।अरे दफ्तर में तुम्हारी कोई सुनने वाला नही है तो घर में बाते कर मन हल्का कर लेते । कागल पर लिखकर मन को हल्का कर लेते पर नही तुम सारे गम पीने के आदी हो गये हो । अरे चिन्ता की लपटों में क्यों झुलसते रहते हो । गम पीना खतरनाक साबित हो सकता है । मैं समझती हूं तुम सोचते हो कि दफ्तर की बातों से घरवाले परेशान होगे । नहीं इससे तुम्हारा मन हल्का होगा । दिल पर से चिन्ता का बोझ कम होगा ।

गीतादेवी की बाते सुनकर चन्द्रप्रकाश की आंखे भरभरा आयीं। चन्द्रप्रकाश की आंखों से बहते आंसूओं को देखकर गीतादेवी का मानो सब्र का बांध टूट गया ।वह अपनी और बच्चों की कसम देकर सारी बात चन्दप्रकाश से उगलवाने की कोशिश करने लगी ।

चन्द्रप्रकाश–भागवान मै रिटायर होने की कंगार पर आ पहुंचा हूं पर मेरी तरक्की नही हुई । मेरे ही साथ में कम्पनी में आये लोग बड़े बड़े पद पर पहुंच गये है जातीय योग्यता की सीढी से । मै जहां से चला था वही पड़ा हुआ हूं । उपर से प्रताडना का शिकार हो रहा हूं । छोटे मैनेजर राजदरवेश साहब,कुटिलनाथ ने तो जातिवाद के नाम अपशब्द कहे,साजिशें रचे ,एस.धोखावत अपशब्द आर्थिक नुकशान पहुंचाने के साथ मेरी ईमानदारी पर अंगुली भी उठाये । प्रदेश के सबसे बड़े

मैनेजर डां.ए.पी.साहब ने तो आज यहां तक कह दिया कि तुम जैसे छोटे आदमी को बड़ा अफसर बनने की इतनी लालसा है तो गले में बड़े अफसर की नेमप्लेट लटका ले । अरे अपनी बिरादरी की हालत क्यों नही देखता । तुम्हारे लोग क्या कर रहे है । अन्न वस्त्र को तरस रहे है । तुमको तो भर पेट रोटी मिल रही है दफतर में बैठ रहे हो । क्या इतनी तरक्की कम है तुम जैसे छोटे आदमी के लिये ?

गीतादेवी–क्या ....? इतने बड़े मैनेजर के मुंह से ऐसी घटिया बात । यह तो उच्च शैक्षणिक योग्यता के साथ अन्याय और इंसानियत का कत्ल है । अच्छा तो आज आपकी बेचैनी का राज खुला है । दम्भी अफसरों के उत्पीड़न से परेशान रहते हो । अच्छा पढा लिखा होने के बाद भी कम्पनी में आपकी उन्नति नही हो रही है । उपर से नौकरी से भगााने की भी साजिश रची जाती रहती है । उत्पीड़न और साजिश से परेशान होकर से आप एक बार बेहोश होकर गिरे भी थे पर आपने झूठ बोला था कि एकदम उठकर चलने से ऐसा हुआ था । वाह रे उच्च ओहदे पर बैठे अमानुष लोग कर्म को नही जाति को प्रधान मानते है ।

चन्द्रप्रकाश–यही खुली आंखों का सच है । मै जान सुनकर उत्पीड़न का जहर पी रही है ताकि मेरे बच्चे आगे निकल सके ।

गीतादेवी– मैं समझ गयी हूं अपने भविष्य के मरते सपनों और आंखों में आंसू लिये परिवार के लिये सम्भावनाये तलाश रहे हो । बहुत बड़ी तपस्या कर रहे हो परिवार के लिये ।बहुत उत्पीड़न सह लिया डंटकर मैनेजमेण्ट के आगे अपनी बात रखो । क्या होगा नौकरी से निकाल देगे ना। मेहनत मजदूरी और सिलाई पुराई कर परिवार पाल लेगे ।

चन्द्रप्रकाश–भागवान कई बार अपनी बात रख चुका हूं पर कौन सुनेगा । सभी तो नाग की तरह फुफकारते रहते है ।कई बार अपमानित कर भगा दिया गया । मेरे भी मन में विचार आया था कि रिजाइन कर दूं पर बच्चों का मुंह देखकर हिम्मत नही पड़ी । हमने दृढ प्रतिज्ञा कर लिया है कि देखता हूं ये अमानुष कितना घाव देते है । आज के युग में अमानुषता हमारी कम्पनी के जातिवाद के पोषक कुछ अफसरों में देखी जा सकती है । जिनसे नित नया चोट मुझे मिलता रहता है । बच्चों का भविष्य उज्जवल बने कराह कर आगे बढने की कोशिश कर रहा हूं ।

गीता–बच्चों को एहसास भी नहीं होने देते हो अपने दर्द का यही ना ।

चन्द्रप्रकाश–कोशिश तो यही करता हूं पर नाकाम हो जाता हूं अब क्योकि हमारे बच्चे अब समझदार हो गये है । आज की पीढी रूढियों का दहन कर सामाजिक समानता कायम करने में कामयाब हो यही कामना हो ताकि हर दबे कुचले को तरक्की का भरपूर अवसर मिल सके।

गीता–तुम्हारी बीमारी को देखकर गगन ज्योति ही नही नन्ही कंचन भी समझने लगा है कि पापा के साथ कहीं ना कहीं बुरा हो रहा है पर पापा भनक तक नही लगने देते ।

चन्द्रप्रकाश –जानता हूं फिर उसकी सांस सदा के लिये थम गयी। उसकी खुली आंखों के ख्वाब रूकी हुई धड़कनों में थम गये थे ।

चन्द्रप्रकाश के मौत की खबर दूर दूर तक फैल गयी । जातिवाद के नाम जहर बोने वालों के कानों को यह खबर भी सकून दे रही थी एक योग्य ,कर्म को पूजा मानने और मरते सपनों में भी सम्भावनायें तलाशने वाले के साथ नाइंसाफी कर ।जीते जी चन्द्रप्रकाश का जनाजा दम्भियों ने तो कई बार निकाला था पर आज मरने के बाद निकल रहा था । यह जनाजा जमाने की खुली आंखों के लिये भयावह सच तो था परन्तु विषमतावादी शूल बरसा रहे थे और अपनों की आखों से बरस रहे थे आसूं........चन्द्रप्रकाश के बूढे मां बाप गम के समन्दर में डूबे विषमतावादी समाज से सवाल कर रहे थे – अरे जातिवाद की मुट्ठी भर आग से करोड़ों वंचितों के सपनों का दहन कब तक करते रहोगे ?

लहू के निशान

अरे चन्दा के पापा अखबार पढ रहे या अफसोस जाहिर कर रहे हो। तुम्हारी आंखे डबडबायी हुई क्यों है । भाग्यलक्ष्मी चाय का प्याला पति ब्रहमदत्त के सामने रखते हुए बोली ।
ब्रहमदत्त–ठीक कह रही हो भागवान । आदमी कितना बदल गया है ।दौस्त पर सगे रिश्तेदारो से ज्यादा यकीन लोग करते थे । आज दोस्ती के दामन पर लहू के निशान छोड़ने लगे है आजकल के दोस्त । खुद की खुशी का कैनवास दोस्त के लहू से सजाने लगे है ।
भाग्यलक्ष्मी– क्या कह रहे हो। सबेरे सबेर तो शुभ शुभ बोलो ।
ब्रहमदत्त अखबार सरकाते हुए बोला लो खुद की आखों से देख लो । यक दरिन्दा दोस्त खुद को मृत साबित करने के लिये दोस्त की हत्या कर दी मोटे मोटे अक्षरों में छपा है और साथ में बेचारे चन्द्रशेखेर की फोटो भी छपी है ।
भाग्यलक्ष्मी–ये क्या हो गया । ये तो सतीश के रिश्ते का भाई है । दरिन्दें ने बेचारे को मार डाला । अच्छा चित्रकार था । भला इंसान था ।अपनी चन्दा को बहन मानता था सतीश की तरह । हे भगवान कसाईयों को बहुत बुरी मौत देना । दरिन्दें बेसारे के बूढे मां बाप की लाठी तोड़ दिये उनके सपनों में आग भर दिये ।
ब्रहमदत्त–अच्छा चित्रकार था आगे चलकर देश का नाम दुनिया में रोशन करता। दोस्त की नजर लग गयी बेचारा बेमौत मारा गया ।
भाग्यलक्ष्मी–सृजनकार तो सचमुच जगत का भला चाहने वाले इंसान होते है ।दलप्रपंच से इन लोगों का कोई लेना देना नही रहता । सद्‌भावना में बह जाते है। खुद का भला बुरा तक नही सोचते ।
ब्रहमदत्त–भोलेपन का शिकार हो गया । किसी के ब्याह में गया था । ब्याह के जश्न के बाद उसे हास्टल पहुंचना था पर वह दोस्त के यहां चला गया । दोस्त दरिन्दा साबित हुआ । कैसा घोर कलयुग आ गया है दोस्त हत्या करके जला दिया । लाश की जगह नरकंकाल पुलिस को बरामद हुआ था । पुलिस की महीने भर की भागदौड़ के बाद तो मामले पर छाये घने कुहरे छंट पाये है ।
भाग्यलक्ष्मी– अखबार पढकर बताओ बेचारे निरपराध चन्द्रशेखर को किस वजह से मारकर जला दिये ।
ब्रहमदत्त–दरिन्दे योगेश और संजय ने शराब में जहर मिला दिया था । इसके बाद पीट पीट कर मारा था ।
भाग्यलक्ष्मी–भगवान दरिन्दों को इससे भी बुरी मौत देना । कोई दरिन्दा पकड़ाया की नही । इन्हें कड़ी से कड़ी सजा मिलने चाहिये । आजकल तो न्याय के मंदिर में भी जाने अनजाने अन्याय होने लगा है । पैसे वाले और शातिर बच निकलते है ।
ब्रहमदत्त–दरिन्दों कानून के हाथ से बंच तो नही पायेगे क्योंकि कानून के हाथ बहुत लम्बे होते है । हां यह बात मायने रखते है कि कानून के रखवाले अपने फर्ज पर कितने खरे उतरते है । दो दरिन्दों पुलिस के हत्थे तो चढ गये है तीसरा दरिन्दा अभी पुलिस को चकमें दे रहा है ।खैर बकरे की मां कब तक खैर मनायेग एक ना एक दिन दरिन्दा पकड़ा तो जायेगा । यह तीसरा दरिन्दा खूनी संजय है जो मकान मानिक का बेटा है जिस मकान में चन्द्रशेखर की हत्या कर जलाया गया था ।
भाग्यलक्ष्मी– बेचारे का दरिन्दा क्या मार डाला ? क्या बिगाड़ा था बेचारा चन्द्रशेखर । क्यों मारा बेचारों को दरिन्दों ने रहस्य से पर्दा उठा कि नहीं अखबार पढकर बताओं ।

ब्रहमदत्त–उठ गया है ।
भाग्यलक्ष्मी– पढकर सुनाओ दिल बैठा जा रहा है ।
ब्रहमदत्त–क्या सुनाऊ ?
भाग्यलक्ष्मी– अरे किस कारण से दरिन्दों ने चन्द्रशेखर की हत्या की । बूढे मां बाप की लाठी तोड़ दी । जब हत्या के रहस्य से पर्दा उठ गया है तो सब कुछ तो छपा होगा की नही ?
ब्रहमदत्त–चन्द्रशेखर के कत्ल के पीछे औरत है । एक औरत को पाने के लिये यह कत्ल हुआ है ।
भाग्यलक्ष्मी–क्या....... ?
ब्रहमदत्त–ठीक सुनी है देवीजी औरत के लिये ।
भाग्यलक्ष्मी–पूरी बात पढ़कर बताओ ।
ब्रहमदत्त–सुनो देवीजी । अखबार में छपी खबर के अनुसार मुख्य आरोपी संजय का प्रेम सम्बन्ध एक लड़की से है जो अब शादीशुदा है । उस लड़की को पाने के लिये संजय ने यह खूनी खेल खेला ।
भाग्यलक्ष्मी– क्या ?
ब्रहमदत्त–हां संजय उस लड़की के प्रेम में पागल हो गया था । उसे पाने के लिये वह कुछ भी करने को तैयार था । वह खुद को मरा हुआ साबित करने के लिये चन्द्रशेखर को मार कर जला डला योगे और दूसरे साथी के साथ ।
भाग्यलक्ष्मी–बाप रे ऐसी साजिश ?
ब्रहमदत्त–संजय की योजना थी कि जब वह लोगों की नजरों में मरा हुआ साबित हो जायेगा तो वह उस लड़की को कही और बुला लेगा किसी को पता भी नही चलेगा कि संजय लेकर भाग गया । दुर्भाग्यवस चन्द्रशेखर दोस्त के झांसे में आ गया दोस्त संजय ने शराब में जहर मिलाकर हत्या करके पेट्रोल डालकर जला डाला ।
भाग्यलक्ष्मी–ऐसे दरिन्दें से चन्द्रशेखर की दोस्ती कैसे हो गयी । दरिन्दें न पढ रहे थे और नही हास्टल में रह रहे थे । कैसे दोस्ती हो गयी । दोस्ती के नाम पर दरिन्दों ने कालिख पोत दिया । दोस्ती जैसे पाक रिश्ते को नापाक कर दिया ।
ब्रहमदत्त–संजय और योगेश किसी मोबाईल कम्पनी में काम करते थे ।मोबाईल के काम के सिलसिले मे चन्द्रशेखर को कई बार कम्पनी जाना पड़ा इसी दौरान दोस्ती हो गयी । दोस्तों ने दोस्ती के कैनवास पर लहू पोत दिये ।
भाग्यलक्ष्मी–चन्द्रशेखर दरिन्दों के झांसे में कैसे आ गया कि ब्याह से सीधे दरिन्दों के जाल में जा फंसा ।
ब्रहमदत्त–फोन करके बुलाया था ।
भाग्यलक्ष्मी–पूरा चक्रव्यूह रच कर दरिन्दों ने फाने किया होगा ।
ब्रहमदत्त–23 जनवरी की रात में संजय ने फोन किया था । रात के नौ बजे चन्द्रशेखर पहुंच गया ।दारू में जहर मिलाकर दरिन्दों ने पिला दिया । दारू पिलाने के बाद सरिये से सिर पीट डाले । इसके बाद तीसरे माले पर ले जाकर जला डाले । कंकाल के पास संजय अपना जूता छोड़कर फरार हो गया ।
भाग्यलक्ष्मी–ऐसा क्यों किया खूनी ।
ब्रहमदत्त–ताकि लोग समझे कि संजय की हत्या हुई है और नरकंकाल उसी का है ।
भाग्यलक्ष्मी–दिल दहला देने वाली साजिश । बाप रे आदमी अपना हित साधने के लिये कैसा हैवान हो जाता है यह तो संजय ने कर दिखाया। इससे तो पुलिस भी भ्रमित हो गयी होगी ।

ब्रहमदत्त– पुलिस भ्रमित तो हुई पर कुछ दिन के लिये । जब पुलिस को पता चला कि 23 जनवरी से संजय लापता है तब पुलिस का माथा ठनका और जांच का रूख बदल गया ।पुलिस चन्द्रशेखर के रिश्तेदारों से जांच पडताल करने में जुट गयी ।
भाग्यलक्ष्मी– आगे क्या हुआ बताओं ना ।
ब्रहमदत्त–चन्द्रशेखर के भाई ने कंकाल के दांत को पहचान कर चन्द्रशेखर होने की पुष्टि कर दी ।
भाग्यलक्ष्मी–एक चित्रकार के जीवन का अन्त कर दिया दरिन्दों ने । बेचारा चित्रों में रंग रंग भरते भरते बेरंग हो गया साजिश में फंसकर वह भी दोस्ती के नाम । भगवान ऐसे दरिन्दों को ऐसी जगह मारना कि रिरिक–रिरिक कर मरें दोस्ती जैसे पवित्र रिश्ते के कैनवास पर खून पोतने वाला संजय और उसके कत्ली दोस्त ।
ब्रहमदत्त–चन्द्रशेखर को गहरे रंगों से बहुत लगाव था । वह इन्ही रंगों से कैनवास पर खेलते खेलते जिन्दगी को उकेरता रहता था । बदकिस्मत संजय के जीवन का सारा रंग ढुल गया । जिन्दगी खत्म हो गयी बेचारे की बची है तो बस यादे ओर बूढे मां बाप की चीखे । जब हत्या के रहस्य से पर्दा उठा तो सहपाठी भी रो उठे ।
भाग्यलक्ष्मी–एक निरपराध चित्रकार के लहू से दोस्ती के केनवास को रंगकर खूनियों ने घोर अपराध किया है वह भी एक शादीशुदा ओरत के लिये ।दरिन्दे को इतना ही प्यार था तो पहले ही ब्याह कर लेना था । भोले भाले मासूम चित्रकार की जान क्यों ले लिये ?
ब्रहमदत्त– विनाश काले विपरीत बुध्दि । कुबुध्दि ने हत्यारा बना दिया । दोस्ती के नाम पर धब्बा लगा दिया । बेचारा चन्द्रशेखर एक दिन पहले ही तो जिन्दगी को बेहतरीन ढंग से कैनवास पर उकेरा था । ये देखो चन्द्रशेखर की ही पेण्टिंग छपी है अखबार में । दो चार दिन पहले ही उसकी अव्वल दर्जे की पेण्टिंग दिल्ली में बीची थी । बहुत खुश तो भर दरिन्दों ने उसकी जिन्दगी में आग भर दी और मां को गम के समन्दर में ढकेल दिया ।
भाग्यलक्ष्मी–बहुत होनहार लड़का था । चन्दा बता रही थी कि पेण्टिग बनाते समय अक्सर –तड़प तड़प के इस दिल से आह निकलती रही गाना गाता रहता था । यही तड़प उसकी पेण्टिग को जीवन प्रदान करती थी ।
ब्रहमदत्त–ले ली दरिन्दों ने एक जीवन । उजाड़ दिया एक परिवार का सपना । छिन लिये बूढे मा बाप का सहारा । भर दिया आश्रितों की मुट्ठियों में आग ।
भाग्यलक्ष्मी–खूनी तो लील गये चन्द्रशेखर को पर दोस्त के चुनाव के जल्दीबाजी न करने की नसीहत भी दे गये । स्वार्थी,अपराधी एवं असामाजिक लोगों से दोस्ती का प्रतिफल तो दुखदायी ही होगा । स्वार्थ के ईंट पर टिकी दोस्ती की नींव कभी भी भरभरा कर गिर सकती है और इसके परिणाम भयावह हो सकते है । दोस्त बनाने से पहले बहुत सोच विचार करने की जरूरत अब आ पड़ी है । यदि असावधानी हुई संजय जैसे दरिन्दें मुट्ठी में आग भरने से तनिक भी नही चुकेगे ।
ब्रहमदत्त–चन्दा की मां आंसू पोछो । दरिन्दों ने तो बहुत बड़ा गुनाह किया है । इसकी सजा तो उन्हे जरूर मिलेगी । युवको को दोस्ती के कैनवास चन्द्रशेखर के लहू के निशान को ध्यान में रखते हुए सावधानी बरती होगी ताकि फिर कोई अमानुष संजय दोस्ती के पाक रिश्ते को नापाक न कर सके ।
भाग्यलक्ष्मी–भगवान चन्द्रशेख्र की आत्मा शान्ति बख्शना । परिवार को आत्मबल और जिन्दगी के कैनवास पर सुनहरा रंग भरने की शक्ति देना । भगवान दरिन्दों को ऐसी सजा देना कि फिर कभी दोस्ती जैसा रिश्ता बदनाम न होने पाये ।

ब्रहमदत्त–हां ठीक कह रही हो ऐ दरिन्दें कठोर से कठोर सजा के हकदार है । युवा पीढ़ी से भी गुजारिस है कि दोस्ती को स्वार्थ के तूफान से बचायें ताकि दोस्ती के कैनवास पर फिर कभी लहू के निशान न पड़ सके ।

दुखिया माई

का रे दुखिया अब तो तेरे करेजे को ठण्डक मिली मेरा पूरा धान तेरी भैस चौपट कर दी । खाने को अन्न नही रहने को घर नही । पाल रही हो भैंस । तेरी भैंस हांकर ले जाऊं और अपने दरवाजे पर बांध लू...... कुंवर बहादुर गरज पड़े ।

दुखिया के उपर तो जैसे बिजली गिर पड़ी भैंस हांक ले जाने की बात से । उसकी आखें सावन–भादों हो गयी । वह आंचल से आसूं पोछते हुए बोली– बाबू ना जाने कैसे भैंस खूंटा से छुडा ली अच्छी तरह से गांठ लगा कर बांधी थी। बिरछवा की भैंस मेरी खूंटे से बंधी भैंस से लड़ने लगी थी । मेरी भैंस की सींग भी टूट गयी है बाबू । बरछवा की भैस आक न मेरी भैंस से लडती न खूंटा टूटता और नही मेरी भैंस बाबू आपके धान के खेत मे जाती । बाबू नुकशान तो हो गया है जानबूझ कर तो मैंने नही किया है ना । भैंस का सहारा था उसकी सींग भी टूंट गयी । सोची थी भैंस बेचकर जरूरत की कई चीजें लाऊंगी । जाड़ें के लिये एक रजाइ्र्र बनाऊंगी बाबू मेरा भी तो बहुत नुकशान हो गया । भैंस की कीमत आधी रह गयी । टूटी सीग वाली भैंस कौन खरीदेगा ।

कुवर बहादुर–अभी कल रोपाई हुई तेरी भैस ने सारा खेत रौंद डाली । तुमको अपने नुकशान की फिर्क है हमारे नुकशान की भरपाई का्ैन करेगा ?

कुवर बाबू की फटकार सुनकर नन्दू आ गये और बोले बाबू दुखिया माई की भेंस तो एक किनारे से भागी थी ।

दुखियामाई–हां बाबू । मेरी भैंस कोने से निकली थी और सड़क पकड़ ली थी ।

नन्दू– हां बाबू दुखियामाई भैंस को ललकारते हुए उसके पीछे पैछे भाग रही थी। दुखियामाई भैंस हांकने के लिये अलग,बकरी हांकने के लिये अलग डण्डा रखती है पर बाबू आज उसकी भैंस आपके खेत में पांव क्या रख दी बेचारी अपराध बोध के समन्दर में डूब गयी और बकरी चराने वाले डण्डें को लेकर भैस के पीछे पीछे दौड़ रही थी । आज ना जाने दुखियामाई की भैंस को ना जाने क्या हो था कि आवाज सुनकर भाग रही थी जबकि कुछ देर पहले वही भैंस दुखियामाइ्र की एक आवाज पर दौड़ी चली आती थी ।धन की फसल की भांति दुखियामाई की भैंस लहर लहर कर भाग रही थी शायद सींग टूटने की वजह से ।

कुंवरबहादुर–क्यों रे क्या बात है नन्दुआ तू तो बड़ी तरफदारी कर रहा है दुखिया की । क्या कल से दुखिया की जमीदारी जोतकर पेट पालेगा ?

नन्दू–बाबू हम गरीबों के पास जमींदारी होती तो गरीबी की मुट्ठी भर आग में क्यों जलते मरते रहते । बाबू हम गरीब जिस बुरी हाल में जीवन बिता रहे है उसके लिये आप भी जिम्मेदार हो ।

कुंवरबहादुर–क्या बकवास कर रहा है । दो अक्षर तुम्हारे लड़के पढने क्या लगे कि तुम अपनी औकात ही भूल गये । नन्दू बराबरी करने में अभी शदियां लगेगी ।

दुखियामाई– बाबू गुस्सा थूक दो । मेरी भैंस ने आपका धान नही रौंदा है विश्वास करो । जल्दी की रोपाई है । तेज हवा की वजह से धान के रोप से कुछ धान के पौधे निकल गये है वही किनारे लगे है । ना मेरी और नही किसी दूसरे की भैंस खेत में गयी है । खुद सोचों बाबू मेरे दरवाजा आपके खेत में खुलता है । क्या मैं अपनी भैंस से आपकी खेती चौपट करवाउंगी । आज तक कभी ऐसा हुआ है ।

नन्दु– हां बाबू यकीन करों दुखियामाई ठीक कह रही है ।

दुखियामाई– बाबू मैं तो भैंस यही पकड़ लेती सड़क पर नही जा पाती पगहा तो उसकी गर्दन में ही था । बाबू डर के मारे नही पकड़ी कि कही और तेजी से खींचाकर भागने । मेरी दशा ठाकुर जैसी न हो जाये ।बेचारे ठाकुर की जान तो भैंस का पगहा खींचाकर बंध जाने से हुई थी ना । बेचारे ठाकुर पहचानने लायक तक नही बचे थे ।
कुवरबहादुर–तुम मुझे कहानी सुनाकर बेवकूफ नही बना सकती हो दुखिया ।
नन्दु–हां बाबू गरीब लोग बेवकूफ नही बनाते ।
कुंवर बाबू–नन्दुआ तू नही बोल तो ठीक है ।
नन्दू– बाबू गांव के जाति–परजाति के बहुत लोगों ने देखा हैं भैंस आगे आगे दुखिया माई दौड़ रही थी । आवाज सुनकर भैंस घोड़े की रफतार से भाग रही थी । बड़ी मुश्किल से कई लोगो ने घेरकर पकड़ा है । मालूम है दुखियामाई भैंस लेकर आ रही थी फिर अचानक भैंस विदक गयी और पोखरी में चली गयी दुखियामाई का जान बच गयी है बाबू।
कुंवरबाबू–बन्द कर अपनी बकवास नन्दुआ तुम सब साजिश रच रहे हो ।
दुखियामाई–कैसी साजिश बाबू । भला हम पेट में भूख दिल में मरते सपने और बंटवारे में मिली मुट्‌ठी भर आग में सुलगते लोग क्या साजिश रचेगे ?
नन्दू–माई देख तेरे पैर से खून बह रहा है गहरी घाव है । फिटकरी हो तो घाव में भर लो । बाबू सुनो चाहे न सुने मैं अपनी बात कह कर रहूंगा । बाबू दुखियामाई की हाल देख रहे हो आंखों में आसूं भरा हैं पैर में शीशा फाड़ लिया भैंस को पकड़ने के लिये भागते समय । उसके तन के वस्त्र की हालत देख रहे है । जो भैंस आपकी तरफ मुंह करके चुगाली कर रही है वही कुछ देर पहले रणचण्डी बनी हुई थी। घण्टा भर से अधिक पानी में बैंठी रही । दुखियामाई पोखरी के किनारे बैठे बैठे भै।स को गालियां दे रही थी । जब दुखियामाई के गालियां का खजाना खत्म हो गया तब भैंस पानी से निकली है और दुखियामाई के पीछे पीछे आकर दरवाजे पर खड़ी हुई है । बाबू पशु भी समझदार होते है । भैंस की सींग टूट गयी है वह भी गुस्से में थी पोखरी के पानी में घण्टे भर बैठी रही जब उसका गुस्सा ठण्डा हुआ है तो खुद ब खुद चलकर आयी है । भैंस बांधकर दुखियामाई ने बहुत मारा है । दुखियामाई पीट रही थी भैंस टुकुर–टुकुर देख रही थी । देखों भैंस भी शर्मसार है जबकि उसकी गलती नही है । वह तो खूटे में बंधी थी बिरछवा की भैंस आकर हमला कर दी थी । वह तो आत्मरक्षा में भागी थी टूटी सींग लेकर ।
कुंवरबहादुर–नन्दुआ ऐसी ही तेरी जबान चलती रही तो तेरी सींग तो नही तेरी जबान जरूर टूटेगी । कुवरबहादुर दुखियामाई की ओर रूख करके बोले भैंस पालने का शौक छोड़ दो सूअर पालो तुम्हारे फायदे का सोदा है गांव की गन्दगी भी साफ हो जाया करेगी ।
नन्दु–बाबू एक भैंस ने पैंर रख दिया खेत में वह भी गलती से तो इतना लाल–पीला हो रहे हो पच्चीस पच्चास सूअर खेत में चले जायेगे तब क्या होगा ?
कुंवरबहादुर– अपना मुंह बन्द रख नन्दुआ । जिस दिन गांव के जमीदारों को गुस्सा आ गया न खड़ा होने की जगह नही मिलेगी । हंगना मूतना सब तो बाबू लोगों की जमीन में करते हो और जबान की जगह तलवार चलाते हो । देख दुखिया अब कोई नुकशान न होने पाये तेरी भैंस ने बहुत नुकशान कर दिया । अगर अब कोई नुकशान हुआ तो महीने भर बिना मजदूरी के काम करना होगा ।
दुखियामाई कुंवरबहुादर की बात टुकुर–टुकुर सुन रही थी । उसके होंठ जैसे सिल गये थे । आखों से आसूं और पैर से खून बह रहा था ।
कुंवर बहादुर की बिजली की तरह कड़कती आवाज सुनकर बिसुन के पांव थम गये । वह दुखियामाई की झोपड़ी की ओर मुड गया । दुखियामाई की दशा देखकर पूछ बैठा क्या हो गया

भौजाई क्यों आंखों से आंसू और पैर से खून बह रहा है । कौन सी अनहोनी हो गयी की कुंवरबहादुर गरज रहे है बिजली की तरह ।
कुंवरबहादुर–बिसुनवा तुमको अनहोनी का इन्तजार है । दुखिया की भैंस सारा धान चौपट कर दी क्या किसी अनहोनी से कम है ।
बिसुन–बाबू ये भी कोई अनहोनी है । दो पूंजा क्या उखड़ गये । आतंक मचा दिया । गरीब की दशा नही देख रहे हो । चिल्लाये जा रहे हो । देखो दुखिया भौजाई के पांव में कितना बड़ा घाव है । अरे गरीब की आंसू का कोई मोल नही आप जैसे बड़े लोगों की निगाहो में । बाबू आप का एक पैसे का नुकशान नही हुआ है । हवा चलती है तो ताजे रोपे खेत में छुटे छिट्के धान के पौंधे किनारे तो आते ही है ।
कुंवरबहादुर–नेता हो गया है क्या बिसुनवा तू बस्ती का ?
बिसुन–बाबू गरीब के दर्द का एहसास आपको तो होगा नही क्योंकि गरीबी तो आपने देखी नही हैं ।दर्द का एहसास तो उसे ही होता है जिसने दर्द्र का अनुभव किया हो । बाबू आपको लगता है कि मैं नेतागिरी कर रहा हूं तो यही मान लीजिये ।
बिसुन की बात ने कुंवरबहादुर के गले में जैसे गरम कोयला डाल दिया हो । वह बौखला गये और देख लेने की धमकी देते हुए उलटे पांव भाग खड़े हुए ।
भैसं कुंवरबहादुर के धान के खेत में चली गयी थी और बाबू कुंवरबहादुर बूढी दुखिया को बहुत बुरी बाते सुना गये कि खबर लल्लू दादा को कामराज बाबू की हवेली लग गयी थी । वह काम छोड़कर आ नही सका था मजदूर कट जाने की वजह से । अंधेरा के पूरी तरह पांव पसारते ही वह झोपड़ी वापस आया । आव देख ना ताव लाठी लेकर भैंस पर पिल पड़ा । दुखिया लल्लू को अपनी कसम देकर रोकने में कामयाब हो गयी ।
लल्लूदादा अपने गुस्से पर विजय प्राप्त कर भैंस को समझााते हुए बोले तूने आज बहुत बड़ी गलती कर दी ना । जमीदार कुंवरबहादुर के खेत में चली गया । तुमको पता है हम सामाजिक आर्थिक गरीबों के बारे में । तेरे दूध दही को भी ये बाबू लोग अपविर्त मानते है क्योंकि तू एक सामाजिक और आर्थिक रूप से गरीब के खूटें पर बंधी है । बाजार में भी जगह नही है। कितना दुख सहकर तुमको पाल रही है ये बुढिया तू है कि तनिक भी परवाह नही करती। ये बाबू लोग तो हम गरीबों की परछाई पड़ने तक को अपराध मान लेते है । तुम तो धान के खेत में पेर रख दिया । पता है तुमको कुंवरबहादुर बुढिया को कितनी गांलिया दे गये है । अरे हम अपने पेट में रूखी सूखी डालने के पहले तुम्हारा इन्तजाम करते है तू है कि आंसू दे रही है । देखा बूढिया के आंख का आंसू दर्द तो तू भी समझती है ना ।
दुखिया– हां बुढ्उ ये भैंस भी समझती है दर्द। देखों उसकी आंखों से भी आसूं भरभरा पड़ा है । दुखिया भैंस के सिर पर हाथ फेरने लगी । भैंस दुखियामाई का पांव चाटने लगी ।
नन्दू और बिसुन एक स्वर में बोले जानवर भी समझते है पर उन्माद में डूबा आदमी कुछ नही समझ रहा है । काश खुद को बड़ा समझने वाले बाबू लोग शोषित दुखियों के दर्द का एहसास कर पाते तो अत्याचार की आंधी थम जाती ।
लल्लूदादा– हां भइया पर बाबू लोगों को अत्याचार से फुर्सत नही है । चल बुढिया बत्तीजार कर ले । घाव गहरी है । ठीक तो हो जायेगी पर कुवर बहादुर की दी गयी घाव तो कभी नही ठीक हो सकेगी किसी दवादारू से । क्या तकदीर हो गयी है हम गरीबो की कि चहुंओर से मुट्ठी भर भर आग ही मिलती है । रूढीवादी व्यवस्था द्वारा परोसी आग में हमें सुलगते रहना है । तू ठीक कह रही है बाबू लोगों से तो अधिक समझती है ये भैंस हम दुखियों के दर्द को ।

दंश

सांप को दूध पिलाना महंगा पड़ गया । अपनी औकात दिखा गया । बच्चों का पेट काट कर अमानुष का पेट भरी । रहने को जगह दी । नेकी के बदले दंश दे गया कहते हुए रामप्यारी धम्म से गिर पड़ी ।
प्रसाद–क्या हुआ भगवान । किसको कोस रही हो ।
रामप्यारी–अपनी किस्मत को और किसको । तकदीर में सुख चैन तो नही मुट्ठी भर भर आग का दुख जरूर लिखा है ।
प्रसाद–क्या बुझनी बुझा रही हो । साफ साफ क्यों नही कहती । कहां सांप दूध पी रहा है
रामप्यारी–बहुत भोले बन रहे हो । किसी पर भी आंख मूंद कर लेते हो। ऐरो गेरों के घड़ियाली आसूं पर यकीन कर दे देते हो पनाह घर में । ये नही देखते घर में जगह है की नही । खाने को अन्न है कि नही । सड़क से उठा लाते हो मुट्ठी भर आग का दर्द अपने और आश्रितों की जिन्दगी में भरने के लिये ।
प्रसाद–क्यों इतनी दुखी हो रही हो भागवान ।
रामप्यारी– तुम कह रहे हो क्यों दुखी हो रही हूं । सालों तक इस घर का एक आदमी नमक खाया । तुम्हारी वजह से वह आबाद हुआ है । देखो दिन बदलते ही आंख दिखाने लगा है ।
प्रसाद–खोटाचन्द की बात कर रही हो क्या ?
रामप्यारी–क्यों इतने भोले बन रहे हो सब जानकर ।
प्रसाद–क्या हो गया भागवान ?
रामप्यारी–क्या बाकी रहा । अरे जिस थाली में खाया उसी में छेद कर दिया खोटाचन्द ।हमने तो भलाई किया और उसने दंश दे दिया ।
प्रसाद–क्या बात हो गयी । खोटाचन्द क्या कह गया ?
रामप्यारी–अरे सांप डसेगा और क्या करेगा ?दिन क्या बदल गया उसका तो रंग–ढंग ही बदल गया । एक दिन था कोई आंसू पोछने वाला न था । ये बच्चे सगे से ज्यादा चाहते थे उस खोटाचन्द को । सारी नेकी बिसार कर परायेपन की दरार को संवार गया । कैसे लोग लोगों पर मुसीबत में तरस खायेगे ?
प्रसाद–तुमने त्याग किया है । आदमी माने या न माने भगवान जरूर मानेगा ं दुखी होने से क्या फायदा सब प्रभु की इच्छा अरे अपने पास तो अपना परिवार पालने भर को ठीकठाक अउमदनी नही है उपर से एक पराये का कई बरसों का खर्चा उठाना उपर वाले का चमत्कार मानो । अपने दिल को तसल्ली दो । उपर वाला अपने साथ तो है । किसी के साथ नेकी करके उससे उम्मीद लगाना अच्छी बात नही है । तुम तो भगवान से प्रार्थना करो प्रभु हमें इतना सबल बनाओ कि हम दूसरों के काम आ सके । क्यों दुखी होती हो तुमने तो भलाई का काम किया है । भलाई करने वाले अफसोस करेगे तो प्रभु नाराज होगे । तुमने परोपकार पुण्य का काम किया है । दुख दर्द और शारीरिक ब्याधि के दिनों में भी तुमने एक पराये को अपनों जैसे कम से कम दोनो वक्त का भोजन दिया है ।रहने का आश्रय दिया है । सचमुच तुम्हारा यह परोपकार का भाव मेरे लिये नाज का विषय है ।यदि खोटाचन्द ने तुम्हारे दिल को ठेंस पहुंचाया है तो माफ कर दो ।
रामप्यारी–नेकी के बदले दंश झेलते रहो । क्या नेकी के बदले यही ईनाम है ।
प्रसाद–देखो मनछोटा ना करो । तुमने दायित्व को पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाया है ।यह तो आत्म–गौरव का विषय है । आंखों में आंसू और पेट में भूख लिये दर दर भटक कर खोटाचन्द इसी चौखट पर गिरा था ना । तुमने अपने हाथों से निःस्वार्थ भाव से कई बरसों तक रोटी बनाकर खिलायी । उसी रोटी का कमाल है कि आज वह सोने की डाल काटने लगा है । तुमको तो खुश होना चाहिये ।

रामप्यारी–तसल्ली देना तो कोई तुमसे सीखे । अमानुष करा–धरा सब गोबर कर गया । बच्चों से झगड़ा कर गया ।बीटिया को चांटा मार गया । बीटिया बहुत रोयी है ।यही बच्चे अपने गुल्लक तक उस खोटाचन्द के लिये तोड़ देते थे । वही खोटाचन्द बच्चों को अपशब्द कह गया । तुम अपने दयालुपन के भाव का अब त्याग करो । कोई नेक मानने वाला नही है । जिस किसी को मुसीबत में देखते हो दौंड़कर मदद करने चले जाते हो । बदले में अपने को क्या मिलता है –बुराई ना ।इससे अच्छा तो है कि भलाई ही न करो । भलाई के बदले किस किस बुराई लोगो । अभी तक तो ऐसा कोई नही मिला जिसने काम निकलने के बाद अपने को बदनाम न किया हो चाहे वे केवलनाथ रहा हो । मंजय चाटक रहा हो,कण्ठधारी या लठधारी रहे हो सभी ने दगाबाजी किये है अपने साथ जबकि हमने उनके उपर एहसान किया है । दगाबाजों ने एहसान के बदले हमारी खुशियों में मुट्‌ठी भर भर आग ही भरा है हमारे भोलेपन का फायदा उठाकर। अब ये खोटाचन्द हमारी नेकी के बदले दंश दे गया ।

प्रसाद– बीटिया से कौन गलती हो गयी कि खोटाचन्द चांटा मार गया ? बच्चों को अपशब्द बक गया । यह तो बहुत बुरा कर कर गया खोटाचन्द ।

रामप्यारी–क्या नही किया इन तीनों बच्चों ने खोटाचन्द के लिये । उसकी मदद ये बच्चे अपनी बचत से किया करते थे । सालों तक बिठा कर खिलाये आपने घर में रखे । अपना ओढना बिस्तर दिये । बच्चें बिस्तर तक बिछाते थे । एक पैसा खोराकी तक नही लिये । वही खोटाचन्द अपनी गैरहाजिरी में घर देखने को क्या कह दिये कि वह तो अपनी इज्जत सड़क पर लाकर रख दिया । चिल्ला चिल्लाकर कह गया कि मैं अपना किराया भाड़ा लगाकर आता हूं । ये लड़की खाना नही देती है । बीटिया ने इतना शायद कह दिया कि क्यों आते हो तो मालूम हैं उसने क्या बोला ?

प्रसाद–हमें तो कुछ भी नही पता । बताओगी तब ना जानूंगा ।

रामप्यारी– बडें निरादर के साथ बोला था तेरा बाप बुलाया है । बेटी को चांटा मारकर चला गया । बच्चों से झगड़ा करके अपनी इज्जत को सड़ंक पर लाकर रख दिया खोटाचन्द ने । भला लोग मुसीबत के दिनों में किसी की मदद कैसे करेगे ।अमानुष जिस थाली में खाया उसी में थूक गया । कहते हुए रामप्यारी आंसू बहाने लगी ।

प्रसाद–देखो तुमने आंसू बहाने का काम नही किया है । क्यों ये मोती बहा रही हो व्यर्थ में । अरे भलाइ किया है । कोई गलत काम तो नही किया है कि अपराधबोध में दबे । भलाई के बदले यदि दंश मिल रहा है तो इसमें हमारी क्या गलती । गलती तो उसकी है जो भलाई के बदले घाव दे रहा है । हमने जो किया निःस्वार्थभाव से किया है । क्या हमारे लिये यह कम खुशी की बात है कि हमने दुख सहते हुए भी किसी का भाग्य संवार दिया । हंसों मुस्कराओं । तुमने आंसू बहाने लायक कुछ नही किया है । तुमने तो त्याग किया है ।आज के आदमी से उम्मीद नही करनी चाहिये । भगवान का आदेश मानकर जो कुछ भलाई का काम हो सके कर देना चाहिये । यदि खोटाचन्द ने भलाई के बदले दंश दिया है तो उसका फल उसे मिलेगा । तुमने तो किसी लालच में उसे पनाह तो नही दी ना ?

रामप्यारी– उस भीखमंगे से कैसी लालच । जो दाने दाने को नस्तवान था । जिसे अपनों ने मुसीबत के दिनों में ठुकरा दिया था ।आज भले ही खास बन बैठे है। उस दिन तो कोई एक रोटी तक देने को नही था । अब तो खोटाचन्द के बडें बड़े ओहदेदार,पैसेवाले और मदद करने वाले खड़े होने लगे है । मुसीबत के दिनों में तो वही लोग परछायीं से बचते थे ।आज खास हुये है । हम तो बेगाने थे आज भी बेगाने है । उससे कैसी लालच ?

प्रसाद– क्यों खुद को तकलीफ दे रही हो ?

रामप्यारी–तुमको पता है गांव में ससुरजी को तुम्हारे खिलाफ कितना भड़का आया है। प्रसाद–भड़कने वालों के पास भी तो दिमाग है की नही ?
रामप्यारी–तुम तो हर बात को बहुत सरल तरीके से लेते हो । तुमको पता है क्या क्या ससुरजी से कहकर आया आया है ।
प्रसाद–मुझे तो नही पता । तुमको मालूम है तो बता भी दो ।
रामप्यारी–तुम्हारी कमाई की रोटी सालों तक तोड़ा । तुमने नौकरी दिलवाया । वही तुम्हारे परिवार में बंटवारे पर तूल गया ।
प्रसाद–अरे ऐसा क्या कह आया कि अब परिवार के बंटने की नौबत आ गयी ।
रामप्यारी–सुनो । खोटाचन्द तुम्हारे पिताजी से कहकर आया है कि बीटिया की पढाई अनापशनाप खर्च कर रहे है । दो कमरे का पक्का घर बनवा दिये सफाई तक नही करवा रहे है । पुश्तैनी घर गिर रहा है तनिक भी उन्हे चिन्ता नही है । उन्हे तो बस अपनी बीटिया और बेटवा की चिन्ता है । हाथ से निकल गये है ।देवरजी कह आया है कि देवचरन तुम भ अपने बच्चों को बीमा करवा लो तुम्हारे भइया ने तो अपना अपनी बीबी और तीनों बच्चों तक का बीमा करव लिया है ।सुसरजी खोटाचन्द की बातों में आकर बहुत गालीफकड़ दिये थे पूरी बस्ती इस बात को जानती है । क्या यह परिवार तोड़ने की खोटाचन्द की साजिश नही है । यह वही खोटाचन्द है जिसे अपने बच्चों जैसा हमने रखा । क्या भलाई के बदले ऐसा होना चाहिये ।लोग कितने स्वार्थी हो गये हैं । हमने तो इंसानियत के नाते मदद की थी । वह हैवान हमारी पारिवारिक जिन्दगी में मुट्ठी भर आग भरने से तनिक भी नही चूका ।
प्रसाद–भाई देवचरन और पिताजी कोई मूरख तो नही हे कि घर बिगाड़ने की बात नही समझेगे । हर मां बाप अपने बच्चों को अच्छी तामिल देना चाहते है । हम बच्चो की पढाई पर पैसा खर्च कर रहे है तो कोई अपराध तो नही कर रहे । बीमा तो सरकारी टैक्स में छूट लेने के लिये सभी नौकरी धंधे वाले करवाते है । इसमें क्या गलती है ?
रामप्यारी–खोटाचन्द की निगाह में तुम तो परिवार से चोरी कर रहे हो ।खुद परिवार सहित ऐश कर रहे हो । अपने बाप ,भाई और भाई के परिवार को एक पैसा नही दे रहे हो । कपड़ालता खानखर्च सब कुछ देखने के बाद भी बदनामी हो रही है । मानती हूं तुम्हारा दिल साफ है तुम घरपरिवार को साथ लेकर चलते हो । अपने दुख को भूलाकर भी कुटुम्ब के सुख की चिन्ता करते रहते हो । बार बार किसी की बुराई करने पर सुनने वाला का मन तो बिगड़ता ही है । देवर जी और तुम्हारे पिताजी का भी मन बिगड़ा है । खोटाचन्द हमारे ही टुकड़े पर पलकर हमारे ही घर में आग बो रहा है ।
प्रसाद–भागवान सदकर्म की राह पर कांटे तो है पर इस राह पर चलकर आदमी देवत्व को पा जाता है । भगवान बुध्द को देखा कभी वे राजा था पर परमार्थ बस राजपाट तक छोड़ दिये । भगवान पर भरोसा रखे अच्छे काम का फल भी अच्छा मिलता है । आदमी मौका पाते ही दंश दे जाता है, सभी जानते है पर परमार्थ की राह पर चलने वालों का जनून खत्म नही हुआ है । जिस दिन यह जनून खत्म हो जायेगा इंसानियत भी धरती से उठ जायेगी ।
प्रसाद और रामप्यारी बाते कर रहे थे इसी बीच बेटा आत्मा आंख मसलते हुए खड़ा हो गया । आत्मा की आंखों में आंसू देखकर प्रसाद पूछे क्या हुआ बेटा ? क्यों रोनी सूरत बनाये हो ?
आत्मा–पापा रात में चाचा का फोन आया था ।
प्रसाद– क्या कह रहा था खोटाचन्द ?
आत्मा–चाचा धमका रहे थे । कह रहे थे तेरे बाप ने नौकरी दिलायी है । मै छोड़कर जा रहा हूं ।तुम लोगो ने बहुत एहसान मेरे उपर किया है ।

प्रसाद–बेटा मुझसे तो उसे बात करवाना था ।
आत्मा–चाचा बड़े गुस्से में थे । बहुत खराब लहजे में बात कर रहे थे । उनकी बात मुझे बेचैन कर दी । मै रात भर सो नही पाया । इसके पहले चाचा ने दीदी के साथ भी बहुत बद्तमीजी की थी । आपको कुछ बुरा कह देते तो ।
प्रसाद–बात तो करवाना था । मैं भी सुनता क्या कहता है ? कुत्ता एक रोटी का टुकड़ा खाकर आगे पीछे पूंछ हिताता है । खोटाचन्द बरसों तक इस घर का नमक खाकर हमें और हमारे परिवार को दोषी बना रहा है ।
रामप्यारी–देख लो सड़क पर से उठाकर लाये । छोटे भाई जैसा मान दिये । बेटवा की नई गाड़ा चला चला कर तोड़ डाला ।रहने खाने सब का भार उठाया । आज वही हमारे बच्चों के साथ बदसलूकी कर रहा है । दिन बदलते ही हमारी नेकी पर कीचड़ उछाल रहा है । खोराकी जोड़े तो पच्चीसों हजार बन जायेगे ।सांप क्या पाले वह तो हमे ही काटने को दौड़ा रहा है । कोई किसी मुसीबत के चक्रव्यूह में फंसे के साथ कैसे नेकी करेगा ।
प्रसाद–क्यों खुद का कोस रही हो । कोई बुराइ तो नही किये है ना । अच्छाई का काम किया है दुनिया जानती है । आसपास वालों तो सगा समझते है ।खोटाचन्द ने बदसलूकी कर दिल को ठेंस तो पुहचाया है । मुझे भी दुख हो रहा है पर क्या कर सकते है सन्तोष ना ।
रामप्यारी– तुमने कितना सहजता से इतनी बड़ी बात को छोटी सी करके सन्तोष के आवरण में ढक दिया ।
प्रसाद–क्षमा करने वाला बहुत बड़ा होता है । सब कुछ भूल जाओं ।सन्तोष से बड़ा कोई सुख नही होता । हमने नेकी की है कोई गुनाह नही किया है ।
रामप्यारी–परायेपन का रिश्ता जख्म दे गया खोटाचन्द । हमने तो उसके साथ सगे से ज्यादा किया । आजकल के जमाने में मां बाप बोझ हो रहे है । हमने तो एक पराये को पनाह दिये । उसको खुली आंखों से सपने दिखाये ही नही उसके सपने साकार करने में तन, मन और धन से मदद भी किये ।देखो कामयाबी मिलते ही हमें फुफकारने लगा ।
प्रसाद–अरे वह तो पराया था । हमने अपना सगा मानकर उसकी मदद की । यदि वह मदद का बदला हमें बदनाम कर देना उचित समझता है तो उसकी मर्जी । वह अपना उल्लू सीधा हमारे परमार्थ के जनून पर मुट्ठी भर आग जरूर रखा है । तकलीफ की बात तो है पर क्या फायदा । हम परमार्थ के बीज बो रहे हैं अगर खोटाचन्द स्वार्थ का कांटा बो रहा है तो बो लेने दो एक दिन जरूर पछतायेगा ।
रामप्यारी–लोग तुम्हारी राह में कांटे बिछाये तुम फूल बिछाओ । जब तुम्हे दूसरें की मदद करने का इतना ही जनून है तो ।हां एक बात कहे देती हूं । अब किसी को सड़क से उठाकर घर में मत पनाह देना ।
प्रसाद–परहित से बड़ा कोई धर्म नही है । जहां तो हो सके करते रहना चाहिये ।
रामप्यारी–खोटाचन्द के दिये घाव के दर्द को तुम भले ही भूल जाओ पर मैं ओर बच्चे तो नही भूल सकते ।
प्रसाद–मैं तुम्हारी पीड़ा को समझता हूं । सन्तोष और परहित का जज्बा भी । भगवान इतना निर्दयी नही है । वह सब पाप पुण्य का लेखा–जोखा रखता है । परमार्थ का हवन करते रहो ।
रामप्यारी–चाहे हवन में हाथ जल जाये ।
प्रसाद–हवन में ही तो जलेगा ना । इसमें कोई बुराई नही । भगवान की यही मर्जी है तो करते रहो हवन और जलने दो हाथ ।ठीक तो उसे ही करना है । हम क्यों चिन्ता करें ।

रामप्यारी–वाह रे इंसान । खोटाचन्द, रईसवा ही नही और कई आदमी नेकी के बदले दंश दे गये । इसके बाद भी परमार्थ का जनून तुम्हारे सिर पर सवार है । धन्य हो महाप्रभु ।
प्रसाद–आखिरकार तुम भी मान गयी नेकी के रहस्य को ।
रामप्यारी– बन्द करो ये उपदेश लगता है किसी की दस्तक हो गयी है दरवाजे पर । इतने में कालबेल घनघना उठी ।
दरवाजा खोलते ही देवदत्त हाथ जोड़े नमस्कार की मुद्रा में खड़ें मिले ।गयाप्रसाद रामप्यारी को आवाज देने लगे । अरे आत्मा की मां देखो देवदत्त आये है बहुत दिनों के बाद । चाय नाश्ते का बढिया इन्तजाम करो ।
रामप्यारी पानी की ट्रे रखती हुई बोली लो भाई साहब आप अकेले आये भाभीजी और बच्चों को भी साथ लाना था ।
देवदत्त–कभी फुर्सत में आयेगे । आपके हाथ के बने दाल बाफले लड्डे खाने ।
रामप्यारी–आप तो आज ही खालो। जब मुर्हुत निकलवाकर आओगे तब और बन जायेगा ।
गयाप्रसाद–हां देवदत्त दाल बाफले बना है ।
देवदत्त–जरूर खाउूंगा पर भाभी जा एक बात बताओ मेरे आने से पहले आप दोनों का लडाई तो नही हो रही थी ।
रामप्यारी–जब नई नवेली आयी थी । तब तो कभी लड़ाई ही नही हुई अब बुढौती में क्या लडाई करेंगे ।
देवदत्त–भाभी आपकी बोझिल आवाज और लाल लाल आंखे कुछ तो चुगली कर रही है ।
रामप्यारी–ऐसी कोई बात नही है । दूसरें के मदद के लिये खुद को कुर्बान करने वाले आपके भाई साहब भला मुझसे लड़ेगे ?चलो दाल बाफले ठण्डे हो रहे है । खा लीजिये ।
देवदत्त–दाल बाफले का नाम सुनकर अंतडियों में कुलबुलाहट होने लगी है । जरूर खाउुंगा पेट भर कर ।
देवदत्त और प्रसाद बातचीत में ऐसे मशगूल हो गये कि कब शाम हो गयी अंधेरा पसर गयाा । आत्मा ने कमरे की ट्यूबलाइट जला दी तब जाकर देवदत्त को पता चला की बहुत देर हो गयी कहते हुए खड़े हो गये और जाने का अनुरोध करने लगे ।
प्रसाद–चले जाना । चाय तो पी लो । ऐसे हा आ जाया करो । अपने से मिलकर मन को सकून मिलता है । मन हल्का हो जाता है अपनों से बात करके ।
देवदत्त–लगता है भलाई के दामन किसी ने मुट्‌ठी भर आग रख दी है । उसकी पीड़ा कराहट है ना। देखो भइया परमार्थ के जनून में भौजाई को मत भूलना । मैं चलता हूं ।
प्रसाद–ठीक है भइया सावधानी बरतना । अंधेरा है और शहर की सड़के तो अपने गांव की पगडण्डी से भी खराब हो गयी है । उपर से अस्त–व्यस्त ट्रेफिक भगवान ही मालिक है ।
देवदत्त– हां भइया।साधानी तो बरतना ही पड़ेगा आंख भी चकमा देने पर उतर आयी है ।
देवदत्त के जाते ही रामप्यारी प्रसाद से कहने लगी देखो देवदत्त भइया क्या कह कर गये है ।
प्रसाद– सुना हूं ।
रामप्यारी–एक कान से सुनते हो दूसरे से निकाल देते हो । देखो अपनी किस्मत की चादर में छेद हो गया है । तुम तो क्या ओढे क्या बिछाये की चिन्ता करो । बच्चों को अच्छी तालिम दो । परमार्थ के जनून से कोई भला नही होने वाला है । अच्छाई करो तो बुराई मिलती है ।
प्रसाद–बिना सोचे समझे कुछ भी बोल देती हो ।
रामप्यारी–अपनी जरूरतो को अनदेखा करो । बच्चों का पेट काटो । कहां तक उचित है । अरे कोई नाम निहोरा भी तो नही करता । बताओं किसने तुम्हारे साथ अच्छा किया है ।

प्रसाद–देवीजी ठीक तो कह रही हो पर किसी का दर्द देखा नही जाता ।
रामप्यारी–भले ही दंश झेलो ।
प्रसाद–दंश का दर्द तो होता है पर दुखिया को देखकर सब भूल जाता है ।
रामप्यारी–तुम्हारी उदारता का लोग फायदा उठा लेते है । कुछ लोगों ने तो भाई के बदले रोजी–रोटी तक पर लात मारने की पूरी तैयारी कर ली थी । याद है की भूल गये । भगवान ने बचा लिये अमानुषों ने तो पूरी तैयारी कर ली थी ।
प्रसाद–जिसका कोइ नही होता उसका भगवान होता है । अपनी मदद भगवान करेगा आत्मा की मां ।लोक नायक जयप्रकाश, विनोवा भावे जैसे नेकी की राह चलने वालों को कभी जमाना भूल पायेगा क्या ? ठीक है तुम्हारी समझाइस को ध्यान मे रखूंगा क्योकि साथ साथ जीने मरने की कसमें जो खायी है ।
रामप्यारी–हवन करो पर हाथ न जलने पाये ।इंसानियत,सद्भावना,दीन दुखियों की सेवा की राह चलो पर खोटाचन्द जैसे अमानुषों की पहचान तो करनी होगी ।
प्रसाद–बहुत बहुत धन्यवाद देवीजी तुमने मेरी आंखे खोल दी। मेरा विनती है तुमसे ।
रामप्यारी– क्या कह रहे हो ? विनती कैसी । तुम्हारे हर कर्म की आधे की हकदार तो मैं भी हूं । बताओ क्या करना होगा मुझे ।
प्रसाद–खोटाचन्द ने जो दंश दिया है उसके दर्द का एहसास अपने तक ही रखना वरना लोग परहित की राह पर चलने से कतरायेगे ।
रामप्यारी–सात कसम तो पहले ही खा चुकी हूं । आठवीं आज खा लेती है।
प्रसाद–भगवान के लिये इतनी मेहरबानी करना ।
रामप्यारी–आठवीं कसम तुम्हे साक्षी मानकर खाती हूं । भलाई के बदले खोटाचन्द के दिये दंश को कभी भी जबान पर नहीं आने दूंगी किसी के सामने ।

चुभती यादें

दिन भर प्रचण्ड गर्मी का प्रकोप था । ज्ञानप्रकाश के उपर लटका पंखा कराह कराह कर जैसे आग उगल रहा था। दोपहर ढलने के बाद की हवा तनिक राहत दे रही थी पर देखते देखते यही हवा आंधी का बिगड़ैल रूप धर ली । आंधी बन्द होने के बाद हवा में तनिक ठण्ड का एहसास होने लगा । इसी वक्त कनि.अधिकारी,धरमेश सहा.अधिकारी,प्रताप के कान में महिला मण्डल की सेवा करके आता हूं पापाजी के उठावने में जाना है। कहकर झटके से विभागाध्यक्ष के केबिन में गये । केबिन से बाहर निकलकर सरकारी कार में बैठकर फुर्र से उड़ गये । सहा.अधिकारी,प्रताप के कान में बड़ी सावधानीपूर्वक कही बात कान से बाहर निकल चुका थी । यह बात दफतर में काम करने वाले कर्मचारी ज्ञानप्रकाश को जैसे अछूत की तरह दूर झटक दी । ज्ञानप्रकाश दफतर से मिली चिन्ता की गठरी चाहकर भी नही छोड़ पाता । चिन्ता उसके साथ चली जाती । दफतर में मिली ठेंस उसे चैन से जीने नही देती । ज्ञान प्रकाश चिन्तन की मुद्रा में बैठा हुआ था घर के बाहर ओटले पर। राह चलते नरायन की निगाह ज्ञानप्रकाश पर पड़ी उसके पांव ठिठक गये । वह बगल में बैठ गया । ज्ञानप्रकाश बेखबर था ।नरायन उसके कान में बोला क्या बात है प्रकाशबाबू ध्यान मग्न बैठे घर के बाहर । आने जाने वाले तुमको निहारते हुए चले जा रहे है पर तुम सबसे बेखबर हो । भाई मुझे ही पांच मिनट तुम्हारे पास बैठे हो गया है ।
ज्ञानप्रकाश–क्यो घाव पर खार डाल रहे हो नरायन बाबू ।
नरायन–तुम्हारी आखों में जमें आसू पढ रहा हूं ।भला मैं तुमको घाव कैसे दे सकता हूं ।
ज्ञानप्रकाश–लोग घाव कर पीछे मुडकर देखते नही । हां छोटा कहकर छींटाकसी कर जाते है । दुखते हुए घाव को खरोच कर मुट्ठी भर आग डाल जाते है ।

नरायन–लगता है कोई दिल दुखाने वाली बात है ।
ज्ञानप्रकाश–छोटे आदमी के दिल पर सभी चोट देते है । बाते भी आदमी के पद,दौलत और जातीय निम्नता और श्रेष्ठता को देखकर कही जाती है । ये इण्डिया है । यहां बहुत सी बातों का फर्क पड़ता है ।
नरायन–भईया मेरे भेज में बात नही बैठ रही है । साफ साफ कहो ना ।
ज्ञानप्रकाश–गरीब की खुशी तो मरणासन्न पर पड़े आदमी जैसी होती है । मुसीबत भी परिहास का कारण बन जाती है । घमण्डी लोग दौलत और पद के मद में रौद जाते हैं ।
नरायन–बात अब भेजे में घुसने लगी है ।
ज्ञानप्रकाश–यही बीमारी तो डंस रही है ।
नरायन–किस बारे में इतने दुखी हो असली बात बताओ । प्याज जितना छिलोगे। छिलका निकलेगा ।
ज्ञानप्रकाश–क्या क्या बताऊं । मै तो ऐसे बबूल की छांव का कैदी हो गया हूं कि हर पल मुझे चुभन ही मिलती है । सामाजिक परिवेष बहुत दूषित हो गया है । हर जगह बंटवारे की बात ।
नरायन–मुद्‌दे की बात तो बताओ ।
ज्ञानप्रकाश –राजकुमार साहब के पिताजी मर गये जिन्हे पापाजी कहते थे ।
नरायन–सभी मरेगे । वे तो नाती पोते सभी का सुख भोग चुके थे ।
ज्ञानप्रकाश–बात उनकी नही है ।बात हमारे दफतर के अफसरों और कमचारियों की है ।
नरायन–क्या बात है । बताओ तब ना मालूम चले कि तुम्हारे दिल को कौन सी चुभती यादें चैन नही लेने दे रही है ।
ज्ञानप्राकश– राजकुमार साहब के पिताजी कइ्र दिनों से अस्पताल में थे । दफतर के सभी लोग बारी–बारी से सरकारी वाहन से देखने जाते थे । मेरे लिये मनहायी थी । मैं छुट्‌टी के बाद अपने साइकिल से जाता था पापाजी को देखने ।
नरायन–यह तो भेदभाव वाली बात हुई ।
ज्ञानप्रकाश–सच्चाई तो यही है । हर बात में मेरे साथ भेदभाव होता है । श्रेष्ठता के पांव तले मुझ अदने को दबाने बार–बार प्रयत्न होता है ।
नरायन–तुम्हारे जैसे लोगों के साथ हर जगह समस्या है । कम्पनियों में तो अधिकतर ऐसी बाते होती है । तुम्हारी कम्पनी तो वैसे ही सामन्तवाद की उर्जा से संचालित है । मैं गलत तो नही कह रहा ?
ज्ञानप्रकाश–ठीक कह रहे हो अधिकारी ही नहीं ड्राइवर, सबसे छोटा रईस चपरासी भी मुझसे वरिष्ठ बनता है । जाति के नाम पर जहर उगलता रहता है । चपरासी की दी हुई चुभती यादें चैन नही लेने देती ।सोचता हूं हमारी जाति में इतनी कौन सी खराबी है कि सभी नफरत करते है । कहने को तो सभी कहते है कि कर्म महान बनाता है पर ये दोगलापन किस लिये ।
नरायन–यह तो अन्याय है ।सरेआम भेदभाव है ।
ज्ञानप्रकाश–हमारे साथ हमेशा भेदभाव होता है । राजकुमार साहब के पापाजी के उठावना क दिन दफतर के सभी लोग और उनका परिवार दफतर की कार से गये आये पर मेरी ओर किसी ने उलट कर नही देखा जबकि उठावना दिन में ही नही आफिस टाइम में था । मेरे साथ अछूतो जैसा बरताव किया गया । सभी का परिवार उठावने में कार से गये । मेरे और मेरी घरवाली के कार में जाने से दफतर की कार अपवित्र हो जाती क्या ? नरायन बाबू मैं रोज अपमान की दरिया में मर कर नौकरी कर रहा हूं । सच बताऊं तो नौकरी करने का मन नही होता ।

नरायन- तुम्हारी कम्पनी के उपर सामन्तवाद का अंधियारा छाया हुआ लगता है । यही अंधियारी तुम्हारी जड़ में मट्ठा डाल रहा है ।
ज्ञानप्रकाश-मेरे साथ बहुत दुखद चुभती यादे जुड़ी है क्याा क्या बयान करूं । एक बार पूरे दफतर के लोग परिवार साहित पिकनिक पर जा रहे थे । सभी कार से गये । बड़े साहब ने मुझसे भी बोला तुम सपरिवार तैयार रहना कार तुमको भी स्अेशन तक छोड देगी पर कार नही आयी । बड़ी मुश्किल से स्टेशन पहुंचा ट्रेन को हरी झण्डी हो गयी था । आते समय भी स्टेशन से मैं और मेरा परिवार आटो करके घर आये । कई दिन बात एक अधिकारी बोले ज्ञानप्रकाश स्टेशन आटो का किराया कितना लगता है, टी.ए.बिल बनाना है ।
नरायन-जब तक आदमी की नियति साफ नही होगी समानता और सद्भावना तो उपज ही नही सकती सामन्तवाद और रूढिवादी विचारधारा से पोषित दिलों में । ऐसे लोग दीन दुखियों को चैन तो नही बेचैन रखने के लिये मुट्ठी भर भर आग जरूर बोते रहेगे ।
ज्ञानप्रकाश-छोटा होने दुख मुझे बार बार मिलता है । कुछ साल पहले डी.पीसी.थी । बाहर से अधिकारी आये हुए थे । डी.पीसी. की रिपोर्ट मैने ही टाइप किया । अधिकारी लोग पिकनिक पर चले गये । मैं रिर्पोट लेकर आठ बजे रात्रि तक बैठा रहा । इसी बीच दफतर में बड़े पद पर काम करने वाले चतुरमाणिक रोनाधर आये और मुझसे हमदर्दी जताते हुए बोले क्यों बैठा है रे ज्ञानप्रकाश तुम्हारी घरवाली खटिया पर पड़ी है । घर जाना था ना । मैने कहा साहब ऐसी बात है कैसे जा सकता हूं । चतुरमाणिक रोनाधर बोले अरे तू जा मैं बता दूंगा । साहब लोग तो कल जायेगे । खुद पिकनिक मना रहे है । छोटे कर्मचारी को बंधुवा मजदूर बना दिये है । तू जो मैं दे दूंगा रिर्पोट तू चिन्ता न कर जा । मेरी अक्ल पर पत्थर मार गया मैं चला गया । मेरे जाते ही साहब लोग भी आ गये । चतुरमणिक रोनाधर ने मेरी शिकायत कर दी । वह बड़े साहब का खास हो गया । मेरी नौकर जाते जाते बची थी ।
नरायन- चतुरमाणिक रोनाधर तो तनिक भी अच्छा नही किया खुद को उपर उठाने के लिये छोटे कर्मचारी के उपर उल्टेपुल्टे इल्जाम लगा दिये । रोटी रोजी पर लात मारने पर उतर गया । कैसा अमानुष है ।
ज्ञानप्रकाश-भइया नरायन जब से आंख खुली है तब से ही जख्म पर जख्म मिल रहा है। आदमी द्वारा खड़ी की गयी मुश्किले मुट्ठी की आग भांति तड़पा देती है ।
नरायन-ठीक कह रहे हो भइया जातिवाद,ऊंच-नीच का भेद मुट्ठी भर आग ही तो है ।
ज्ञानप्रकाश-इसी मुट्ठी भर आग की लपट में तो झुलस रहा हूं । भेद की मुट्ठी भर आग न होती तो हमारी उन्नति के रास्ते बन्द ना होते । मेरी शैक्षणिक योग्यता जातीय योग्यता के आगे एकदम से छोटी हो गयी है सामन्तवादी व्यवस्था के चक्रव्यूह में फंसकर । चुभती यादों में अच्छाई ढूढ़ने का प्रयास कर रहा हूं ताकि जिन्दगी बोझ न बन सके ।
नरायन-बढियां सोच है । गरीबों की राह में कांट बिछाने वालों का मन परिवर्तित होने मे भइया आपका कृतित्व सहायक होगा । तुम इतिहास रच रहे हो । तुम्हारी राहों में कांटा बिछाने वाले एक दिन तुम्हारे उपर गर्व करेगें ।
ज्ञानप्रकाश- मेरे साथ छल तो विषमतावादी आदमी कर रहा है । चहुंओर से आती अजगरों की फुफकार से लगने लगा है कि मेरी योग्यता का यौवन नही निखर पायेगा । मेरे आंसू पाषाण पर दूब उगा दे यही भगवान से प्रार्थना है ताकि सद्भावना की जड़ों को बल मिल सके ।
नरायन-तुम्हारा दुख सहकर दूसरों के सुख के लिये जीना जरूर सद्भावना के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा ।

ज्ञानप्रकाश–मैं तो समानता की अभिलाषा में जहर पी रहा हूं । योग्यता को हारता हुआ देखकर भी कर्म से मुंह नही मोड़ रहा हूं ।
नरायन–सच व्यवस्था में जातिवाद की फुफकार हक मार रही है ।गरीब गरीब होता जा रहा है ।जातिवाद की महामारी इंसानियत को डंस रही है इसके बाद भी समाज और लोकतन्त्र के प्रहार जाति तोड़ो के अभियान को हवा नही दे रहे हैं । जातिवाद देश और समाज को कोई तरक्की नही दे सकता । धर्मनिर्पेक्षता का नारा बुलन्द करने वाले जातिनिर्पेक्षता को क्यो भूल जाते हैं । जब तक जातिवाद की आग सुलगती रहेगी कमजोर वर्ग पूरी तरक्की से तरक्की नही कर पायेगा ।
ज्ञानप्रकाश–हां भइया इसी महामारी ने तो मेरी योग्यता को डंस लिया है । मुझसे कम योग्यता वाले बड़ी बड़ी पोस्टों पर विराजित होकर मुझे चिढाते है ,क्योकि मेरे पास जातीय श्रेष्ठता नही हैं । वह कम्पनी जहां मैं नौकर हूं वह सामन्तवादी व्यवस्था द्वारा शासित है । वहां मुझ कमजोर की योग्यता आंसू बहा रही है ।
नरायन– तुम्हारी चुभती यादों के बयान से तो सच्चाई झलक रही है ।
ज्ञानप्रकाश– बहिष्कृत होकर भी पत्थर दिलों पर सद्भावना की बेल उगाने की कोशिश कर रहा हूं ।मेरा भविष्य तो तबाह हो गया हे पर मैं नही चाहता कि किसी और कमजोर की शैक्षणिक योग्यता को जाति का ज्वालामुखी न भस्म करें ।
नरायन–विज्ञान के युग में योग्यता को जातिवाद के तराजू पर तौला जा रहा है । यह तो अन्याय है,साजिश है । इस तरह से तो कमजोर तबके का आदमी तो कभी उबर ही नही पायेगा ।
ज्ञानप्रकाश–मैं कहां उबर पा रहा हूं । वर्णवाद की मुट्ठी भर आग ने मेरी शैक्षणिक योग्यता को डंस लिया है । मेरे आंसू भी उपहास बन रहे है । कुछ शीर्ष पर बैठे लोग भी भविष्य तबाह करने की प्रतिज्ञा कर चुके है ।
नरायन–तुम्हारा कर्म के प्रति सच्चा समर्पण जरूर क्रान्ति लायेगा । तुम तो भविष्य को सुलगता हुआ देखकर भी सामाजिक न्याय के लिये काम कर रहे हो । पत्थर दिल जरूर पसीजेगे ।तुम समानता के लिये कलम चला रहे हो ऐसे ही चलाते रहे । ठीक है तुम्हारी पदोन्नति में जाति बाधा बनी हुई है पर तुम एक दिन हर दिल अजीज बनोगे । तुम्हारा त्याग व्यर्थ नही जायेगा ।
ज्ञानप्रकाश–सामाजिक कटुता की जड़ में सद्भावना की खाद डालने का प्रयास कर रहा हूं अपनी कलम के भरोसे देखो कहा तक सफल होता हूं ।
नरायन–सभी विश्व प्रसिध्द लोग प्रतिकुल परिस्थितियों में तपकर कुन्दन हुए है। प्रतिकुल परिस्थितियां आदमी को अमरता प्रदान करती है ।
ज्ञानप्रकाश–चुभती यादें चैन तो नही लेने देती फिर भी सम्भावना के रथ पर सवार होकर समानता के लिये खुद को स्वाहा कर रहा हूं मौन ताकि कल का सूरज सामाजिक समानता लेकर आये ।
नरायन–ज्ञानप्रकाश तुम्हारे हर शब्द में चुभती यादों की कराह समायी हुई है । जब से तुमने होश सम्भाला है तब से ही प्रतिकुल परिस्थियों से गुजर रहे हो। चुभती यादों के जख्म ढो रहे हो पर तुम टूटे नही । ज्ञानप्रकाश तुम्हारा हौशला जरूर श्रेष्ठता प्राप्त करेगा कहते हुए नरायन माथे से चू रहे पसीने को पोछे और जाति के नाम पर भविष्य बर्बाद करने वालों के नाम पर थू–थू करते हुए अपने गन्तव्य की ओर दौड़ पड़े ।

दास्तान–ए–गांव

शोषितों,कमजोर तबके के पिछड़ेपन की जिक्र यदा कदा सुनायी पड़ जाती है । गरीबी,जातिवाद और भूमिहीनता के रिसते जख्म में तड़प रहे वंचितों का दर्द सत्ताधीशों के कान को नही खुजला पाया ।

मई और जून के महीनों को छोड़कर सभी महीने खेत अपनी सौन्दर्य पर इतराते रहते है । जोत की जमीनो एंव अन्य जमीनों पर सबल वर्ग का एकाधिकार है । अधिकतर शोषित वंचित वर्ग भूमिहीन खेतिहर मजदूर है । जमीदारों के खेत में खून पसीना करके बहाना वंचितों का पेशा है । मील, कारखानों का अकाल सा पड़ा हुआ है । नतीजन अधिकतर वंचित शोषित समाज के लोग जमीदारों की हवेली से खेत खलिहान तक हाड़ फोड़ने को मजबूर है । गरीबी के प्रेत का इतना आतंक है कि बच्चे आठवीं दसवीं के आगे पढाई कर नही पाते । आजादी के इतने दशकों के बाद भी चौकी गांव की चौखट तक तरक्की नही पहुंच पायी है । भले ही सरकार आंवण्टन का ढिंढोरा पीट रही हो पर इस गांव में आवण्टन नही हो सका है । गांव समाज की जमीन शोषक समाज के कब्जे में है । गांव के शोषित मेहनत मजदूरी के बल पर जिन्दा मात्र है । दुर्भाग्य है कि यह गांव प्रजातन्त्र की नाक के नीचे तरक्की से कोसो दूर है । शोषण,गरीबी,सामाजिक बुराईयों की मुट्ठी भर आग में तड़प तड़प कर जीवन बिताने को मजबूर हैं ।चौकी गांव के शोषितों में सहनशीलता और हाड़फोड. मेहनत कूट कूट कर भरी हुई है । यही मेहनत की थाती इन्हे जिन्दा रखे हुए है । शोषित वर्ग गरीबी,अशिक्षा,बीमारी,नशाखोरी के चंगुल में भी पूरी तरह फंसा हुआ है । कुछ दसवीं जमात तक पढे लडके दूर शहर के कल कारखानों में काम करने लगे है । कमाई तो उन्हे अधिक नही हो पाती है पर शहर में मिल रही इज्जत उन्हे ज्यादा रास आने लगी है । वहीं जमीदारों के खेत में काम करने वालों को तो इज्जत दूर अछूत कहकर दुत्कार तक दिया जाता है । गांव के शोषित वर्ग के मजदूर जमींदारों के क्या कोई दुसरी भी बड़ी जाति के बर्तन नही छू सकते । गांव के शोषित गरीबी से ऐसे जकड़े हुए है कि बच्चे के आठवीं क्लास तक जाते जाते हार जाते है । नतीजन बच्चे की पढाई छूट जाता है । वह भी मां बाप के साथ जमीदारों के खेत में हाड़फोड़ना शुरू कर देता है । गिने चुन पढे लिखे बेरोजगारी का अभिशाप झेलने को मजबूर हो जाते है । उनके मां बाप कुढते रहते है । मां बाप के बढते बोझ को देखकर ऐसे गरीब भूमिहीन खेतिहर मजदूर मां बाप के लड़के के सपने मर जाते है और वे भी दो जुन की रोटी के लिये मालिको के खेत में हाड़फोड़ने लगते है। दूसरा उनके पास कोई चारा भी नही होता है । राजनेताओं मन्त्रियों के आश्वासन तो थोथा चना बाजे घना को ही चरितार्थ कर रहे है ।

चुनाव के दिनों में मन्त्री और नेता डेरा डाले रहते है । बाकी दिनों में आसपास से निकल जाते है पर गांव की ओर ताकते नही । विकास के नाम पर सड़के और बिजली गांव तक दौड़ तो चुकी है आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के लिये कोई पुख्ता इन्तजाम नही हो सका है ।

गांव को वंचितों के नाम महकू राम ,धनकू राम,दुखीराम, कड़कु राम, महंगू राम, तनकू राम, जोखनराम पर दशरथ पुत्र श्रीराम से तनिक भी नजदीकी नही । वंचितों के नाम के साथ जुड़ा राम का नाम छोटी जाति का प्रतीक हो गया है । देश को आजाद हुए कई दशक तो बित चुके है पर चौकी गांव के वंचितों को न सामाजिक और न ही आर्थिक उत्थान हुआ है । सामाजिक बुराईयों ,जातीय भेदभाव और आर्थिक मुश्किलों के दलदल में वंचित धंसे जा रहे है । राजनैतिक चेतना का अलख जगा तो है पर आार्थिक ,सामाजिक,शैक्षणिक जागृति अभी भी कोसो दूर है इस गांव से । गांव और गांव के से कोसो दूर तक उद्योग धन्धे नदारत है । खेती की जमीन भी नही है जबकि वंचितों को पुश्तैनी धंध खेतीबारी है । जमीन का मालिकाना हक जमीदारों के पास है । वंचितों के पास आजीविका का कोई साधन नही है । पूरी बस्ती के लो खेतिहर भूमिहीन मजदूर है । सरकार भले ही पूरी तरह आवण्टन हो गया है का ढिंढोरा पीट ले पर इस चौकी गांव के वंचितों को आवण्टन का लाभ नही मिला है । सरकारी एवं गांव समाज की भूमि पर दबंगों का कब्जा है । कहीं घूर के नाम पर कही खलिहान के नाम पर कहीं हरियाली के नाम पर कही तालाब के नाम

पर तो कही कुएं के नाम पर या और किसी नाम पर । यदि आंवण्टन हुआ भी है तो बस खानापूर्ति हुई है । दबंगों के कब्जे मजबूत में है ।

गांव आवश्यक चिकित्सीय सुविधाओं से वंचित है । खेत मालिक और पैसे वाले तो शहर जाकर इलाज करवा लेते हैं परन्तु गरीब शोषित वंचित नीम हकीमों के जाल में और ओछाई सोखाई के चक्रव्यूह में फंस जाते है । बदलतते वक्त में भी चौकी गांव के वंचितों का उध्दार नही हुआ है । आजादी के बाद पहली बार इस गांव का प्रधान वंचित समुदाय का तो बना है पर वह भी दबंगो का गोबर उठाने में अपनी शान समझता है । वंचित आवण्टन की बात करते है तो कहता है आवण्टन तो हो गया है । तीन भूमिहीनों को दो-दो बीसा जमीन मिली है । कई एकड़ जमीन दबंगों के कब्जे में है । इतनी जमीन में तो चौकी गांव के पच्चीसों परिवार के पास इतना खेत हो जाये कि सभी कमा खा ले पर प्रधन तो उल्टे डांट देता है यह कहकर कि कहां जमीन खाली है । आवण्टन का लाभ चाहने वाले जमीन बताते है तो वह कहता है कि फला बाबू का कब्जा है । कौन जायेगा रार लेने । पानी में रहकर अजगर से कौन बैर लेगा । कब होगा आवण्टन । कब कटेगा भूमिहीनता का अभिशाप । बेचारे वंचित बाट जोह रहे है तरक्की की परन्तु तरक्की उनकी चौखट तक नही पहुंच सकी है । हां राजनीति की घुसपैठ जरूर हो चुकी है पर चालाक किस्म के लोग उनका भरपूर फायदा उठा लेते है । शोषित वंचित मुंह ताकते रह जाते है, जातिवाद,भेदभाव गरीबी और अभाव की वेदना से कराहते हुए । वर्तमान समय में शोषितों की बस्ती के कुये का पानी अपवित्र है । वंचित लोग तनिक तनिक बातों में लडने मरने को तैयार हो जाते है । हुक्का पानी बन्द होना आम बात होती है । राजनीति की बिसात पर भी वंचित समुदाय तरक्की से दूर फेंका जा रहा है । हां इंच इंच भर जमीन के लिये इनकी अगुवाई करने वाले चतुर लोग इन्हे लड़ाते रहते है अपना उल्लू सीधा करने के लिये । कई कई बार तो ये भोले लोग अपना भारी नुकशान तक कर बैठते है । जन जागरण की बयार गांवों से काफी दूर है । शदियों से सताये गये लोगों की बुनियादी जरूरतें भी पूरी नही हो पा रही है । शोषित लोग आंसू में रूखी सूखी रोटी गीली कर बसर करने को विवस है ।

गांव के अधिकतर शोषित लोग अपने पिछड़ेपन का दोष रूढिवादी व्यवस्था को ठहराते है,जिसकी कोख से ही उपजी है सारी मुश्किले चाहे छूआछूत हो निरक्षता हो । गरीबी हो या कोई अन्य तरक्की की बाधायें । शोषित भूमिहीन खेतिहर मजदूर किसी कृषि विशेषज्ञ से कम नही है परन्तु वे अपने ज्ञान का उपयोग खेत मालिकों के लिये करते है हाड़फोड़ मेहनत और माथे झुर्रियों के बदले मिलती हैं बस अभाव भरी जिन्दगी । यदि इन मजदूरों के पास कुछ जोत की जमीन होती तो ये लोग अच्छी पैदावार लेकर अपने परिवार का भरण-पोषण अच्छी तरह से कर सकते है। सरकारी कानून होने के बाद भी पूरी तरह से आवण्टन का लाभ चौकी गांव के भूमिहीनों को तो नही मिल पाया है । इस तरह की लीपा-पोती शोषितों की जड़ खोदने पर लगी हुई है ।

चौकी गांव के शोषितो को देखकर उनकी बेबसी का अन्दाजा लगाया जा सकता है । सरकारी सुविधाओं के लाभ से शोषित समाज वंचित है । चुनाव आते ही सभी पार्टियां बडे बड़े वादा करती है इनके कल्याण का पर चुनाव जीतते ही सब भूल जाते है। सरकार लाख आरक्षण की ढोल पीटे पर इस बस्ती का शायद ही कोई आदमी सरकारी नौकरी मे हो । पढे लिखे शोषित युवक चारो ओार से निराश लौट आते है । नौकरी पाने के लिये जरूरी योग्यता के बाद भी नौकरी नही मिल पाती है क्योंकि इनकी इतनी पहुंच भी नही होती है और इनका खिस्सा भी तो तार तार होता है । प्राइवेट क्षेत्र इस वर्ग को प्राथमिकता के आधार पर रोजगार मुहैया करा दे तो यह वर्ग भी चैन का जीवन जी सकता है पर प्राइवेट क्षेत्र में इनकी पहुंच सुनिश्चित हो तब ना । आज भी तो कई क्षेत्र है ऐसे है जहां जाति के नाम पर प्रवेश वर्जित है । सामाजिक उत्थान के लिये काम कर रही

स्वयं सेवी संस्थायें शोषितों के लिये आशा की किरण साबित हो सकती है पर संस्थायें जाति–भेद से उपर उठकर काम करे तब ना ।
देश के दूसरो प्रतिभावानों की तरह चौकी के बस्ती के शोषितों में भी प्रतिभाये छिपी हुई है पर कोई निखारने वाला नही मिल रहा है । दंबग लोग तो दुत्कार के अलावा कुछ कर भी नही सकते । उन्हे तो बस अपने एकाधिकार से मतलब है । दबंग लोग अपना हित शोषितों के शोषण में सुरक्षित पाते हैं । विज्ञान के इस युग में दुनिया जातिवाद की बुराई जान चुकी है ।इसके बाद भी जातिवाद को बढावा दिया जा रहा है । धर्म के ठेकेदार भी अपना सिंहासन इसी में सुरक्षित देखते है ।
देश का संविधान बदलने की साजिश तो रची जा रही है । रूढिवादी व्यवस्था में बदलाव की कोई बात ही नही उठ रही है जबकि जातिवाद की महामारी ने तो आदमी को खण्ड खण्ड कर दिया है । सामाजिक समानता दम तोड़ चुकी है । जातिवाद का विषधर फुफकार रहा है । काश जातिवाद का विषध खत्म हो जाता तो चौकी गांव ही नही पूरे देश में समानता का साम्राज्य स्थापित हो जाता । शोषित समाज को सम्मान से जीने का हक मिल जाता । वह भी चहुंमुखी विकास की धारा से जुड़ जाता । काश ऐसा हो जाता जीवन बाबू तो मैं उतना खुश होता जितना पंखविहीन पंक्षी पंख पाने पर ।
जीवन बाबू –ठीक कह रहे हो दीनू दादा मूलभूत अधिकार की रक्षा के लिये हमें खुद के बलिदान के लिये तैयार होना होगा तभी विषमता की मुट्ठी भर आग शान्त हो सकेगी ।
दीनूदादा–सामाजिक समानता और न्याय के लिये हमें एक होकर उठ खड़ा होना होगा तभी अधिकार की जंग जीत सकेगे ।
जीवन बाबू –चलो सभी शोषित समुदाय के लोग मिलकर आज से ही जंग का ऐलान कर दें ताकि शोषित समुदाय के लोग भी विकास की मुख्य धारा से जुड सके ।

पिकनिक

श्यामविहारी– लगता है रामविहारीबाबू नया साल बढिया जायेगा । कम्पनी नये आयाम छूयेगी ।
राम बिहारी–कम्पनी में क्या फायदेमंद हो रहा है लोवर केटेगरी के लिये । खैर सभी कम्पनी का विधान अच्छा होता है पर लाभ तो उपर वाले और पहुंच वाले ही उठा लेते है । लोवर केटेरगरी तक तो गंध भी नही पहुंच पाती है । अभी तक तो कोई लाभ नही मिला है आगे की तो कुछ कह नही सकते । लाभ की तो कोई उम्मीद नही है हो जाता है तो कोई दैवीय चमत्कार समझो ।पतिर दिल इंसान को तो दैवीय चमत्कार ही चसीजा सकता है ।
श्यामविहारी–लाभ मिलेगा रामविहारी कब तक बड़े लोग छोटे लोगों को खून चूसते रहेगे । देखो कम्पनी ने चपरासी से लेकर उच्च अधिकारी तक की पिकनिक के लिये समान राशि का आंवण्टन किया है । यह बात कोई कम नही है । हो सकता है अब से ही कुछ नजरिये में बदलाव आये ।
रामविहारी–हम लोवर कटेगरी के लोगों के बच्चे पिकनिक इंज्वाय नही कर पायेंगें ।
श्यामबिहारी–क्यों ?
रामविहारी–कल पिकनिक का दिन है ।लोवर कटेगरी के लोगों को पिकनिक ले जाने के वाहन तक का इन्तजाम नही है ।हम लोवर कटैगरी के लोग दो पहिया वाहन से अपने परिवार को कैसे ले जायेगे ।
श्यामविहारी–क्या ? कल पिकनिक जा रही है और लोवर ग्रेड को पूरी तरह जानकारी भी नही । दूर –दूर से पिकनिक की खबर मिल रही है एक दफ्तर में बैठकर भी ।

रामविहारी–हां श्यामबिहारी हायर कटेगरी के लोगो के पास तो इन्तजाम है उनके पास सुविधा है । वे तो सारी व्यवस्था कम्पनी के खर्चे पर कर सकते है। खास लोगों के लिये खास इन्तजाम होगा पर हम छोटे कर्मचारियों के लिये कोई इन्तजाम नही ।मर्जी पड़े तो जाना नही तो मत जाना कोई पूछने वाला नही है । विकट साहब तो यहां तक कह चुके है कि किसी के न जाने से क्या फर्क पड़ता है ?
श्यामविहारी–ये कम्पनी के खर्चे पर आयोजित होने वाली पिकनिक है या लोवर कटेगरी के को दूर रखने की साजिश ।
रामविहारी–साजिश मानों या लोवर और हायर कटेगरी के बीच डिस्टेन्स मेनटेन करने का षणयन्त्र ।
श्यामविहारी–लोवर कटेगरी के लोगों का अधिकार कैसे सुरक्षित रह पायेगा ? ये हायर कटेगरी के सामन्तवादी शहंशाह तो हमारे हकों को ऐसे ही लीलते रहेगे क्या? हम कंकड़ से आंसू पोछते रह जायेगे अहंकारियों के बीच।
रामविहारी–ठीक कह रहे हो श्यामबिहारी । अहंकार आदमी को झुकने नही देता यदि अहंकार सामन्तवाद से पोषित हो तो और भी घृणित हो जाता है । खुद को खुदा समझता है । लोवर कटेगरी के योग्य और बुध्दिमान को महामूरख समझता है ।यहां तो अधिकतर लोग पद और दौलत के अहंकार की मुट्ठी भर आग में लोवर कटेगरी के लोगो को सुलगाना जानते ही है । यहां तो अहंकार को सामन्तवाद के पर लगे हुए है । सामन्तवाद के बिलायति बबूल सरीखे छांव में तो लोवर कटेगरी का तो कभी फलफूल ही नही सकता ।अहंकारी तो झुकना जानता है नही और नही वह विनयशील होता है। अहंकारी तो बस एकछत्र राज स्थापित करना चाहता है । वही कुछ लोग कर रहे है यहां ।
श्यामविहारी–सच अहंकार तो ऐसा शिखर होता है जिस पर चढ कर देखने पर वैसे तो सभी आदमी छोटे नजर आते है पर लोवर कटेगरी का आदमी तो कीड़ा मकोड़ा नजर आता है । यही इस कम्पनी में भी हो रहा है ।
रामविहारी–कल पिकनिक पर जाना है । सारी तैयारियां हो चुकी है पर हमारे कानों को अभी भनक तक नही पड़ने दी गयी है । शाम तक तो राज खुल ही जायेगा हमे परिवार सहित पिकनिक में शामिल होने का न्कहा जाती भी है या नही । यदि कहा जाता है तो वाहन का इन्तजाम होताा है या नही ।
श्यामविहारी–अरे हमारे हक को ये हायर कटेगरी के लोग कैसे लील जायेगे ?
रामविहारी–यही होता आ रहा है । खैर शाम तक पता चल जायेगा । अभी तो लंच करो । क्यों टेंशन ले रहे हो। अरे पिकनिक पर जाकर कौन सा सुख पा लेगे । रोज रोज तो हायर कटेगरी का दिया दंश झेल रहे है ।एक दिन के झूठी सद्भावना से दिल का जख्म तो नही भरेगा ना । रही बात जाने की तो सुविधा मिलेगी तो चलेगे । नहीं मिलेगी तो नही चलेगे ।
श्यामविहारी–अरे ऐसे कैसे नही मिलेगी । लोवर कटेगरी का हक ये हायर कटेगरी के लोग कैसे लूटते रहेगे ?
रामविहारी–लंच कर लो बिहार बाबू । पिकनिक पर ले जाना नही जाना तो व्यवस्थापक निर्धारित करेगे । अभी तो लंच करो ।
श्यामविहारी–लंच तो करूंगा ही पर मैनेजरों का दुर्व्यवहार खलने लगा है । अरे हमारे नाम से भी पैसा हायर ग्रेड वालों के बराबर आया है । हायर कटेगरी को अधिक नही मिला है ।हां अधिकारी तो उनके हाथ में है । जैसा चाहे वैसा करें ।
रामविहारी–पिकनिक की बात खत्म करो । हायर ग्रेड के लोग इतनी दूरियां नही मेनटेन करेगे । वे भी इंसान है हम लोवर कटगेरी हो या लोवर ग्रेड के लोग ।